



Together with®

8

स्पर्श हिंदी व्याकरण अध्यापक निर्देशिका

 रचना सागर प्रा० लि०

4583 / 15, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002

पोस्ट ऑफिस बॉक्स 7226

दूरभाष: 011 - 4358 5858, 2328 5568

फैक्स: 011 - 2324 3519

Email: info@rachnasagar.in; rachnasagar@hotmail.com
editorial@rachnasagar.in; order@rachnasagar.in;
export@rachnasagar.in

Web: www.rachnasagar.in

IE License No. 0501009426

प्रथम संस्करण 2001

नवीनतम संस्करण

ISBN 978-93-87984-08-0

© Reserved with the publishers

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या	क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा-बोली, लिपि एवं व्याकरण	03	11.	क्रिया	65
2.	वर्ण-विचार	06	12.	काल	69
3.	शब्द-विचार	11	13.	वाच्य	71
4.	संधि	15	14.	अव्यय	74
5.	शब्द-निर्माण	18		(क) क्रियाविशेषण	74
	(क) उपसर्ग	18		(ख) संबंधबोधक	77
	(ख) प्रत्यय	21		(ग) समुच्चयबोधक	80
	(ग) समास	25		(घ) विस्मयादिबोधक	82
6.	शब्द-भंडार	29	15.	वाक्य-विचार	86
	(क) विलोम शब्द	29	16.	विराम-चिह्न	89
	(ख) अनेकार्थक शब्द	32	17.	पद-परिचय	93
	(ग) वाक्यांश		18.	पदबंध	96
	के लिए एक शब्द	34	19.	कुछ सामान्य अशुद्धियाँ	99
	(घ) पर्यायवाची शब्द	36	20.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ	102
	(ङ) श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	38	21.	अपठित बोध	105
	(च) एकार्थक प्रतीत होने		22.	पत्र-लेखन	112
	वाले शब्द	40	23.	अनुच्छेद-लेखन	120
7.	संज्ञा	43	24.	निबंध-लेखन	126
8.	संज्ञा-विकार	47	25.	मौखिक अभिव्यक्ति	133
	(क) लिंग	47		● प्रश्न-पत्र- 1	134
	(ख) वचन	51		● प्रश्न-पत्र- 2	135
	(ग) कारक	54			
9.	सर्वनाम	58			
10.	विशेषण	62			

पाठ योजना एवं उत्तर

पाठ 1

भाषा-बोली, लिपि एवं व्याकरण

पाठ योजना

कालांशों की संख्या- दो

सामान्य परिचय- मनुष्य अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति जिस साधन द्वारा करता है, उसे भाषा कहते हैं। यद्यपि संकेतों द्वारा भी कभी-कभी बातचीत की जा सकती है लेकिन उसे भाषा नहीं कहा जा सकता। भाषा के दो रूप हैं- (i) मौखिक तथा (ii) लिखित।

जब कोई व्यक्ति बोलकर अपने विचारों को व्यक्त करता है और दूसरा सुनकर उसे समझता है तब यह भाषा का 'मौखिक' रूप है। जब लिखकर विचारों की अभिव्यक्ति होती है और दूसरा उसे पढ़कर समझता है तो यह भाषा का लिखित रूप है। एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा का स्थानीय रूप 'बोली' कहलाता है। ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे 'लिपि' कहते हैं।

व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।

अधिगम का उद्देश्य-

- (i) भाषा व उसके भेदों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (ii) विभिन्न बोलियों की जानकारी होना।
- (iii) लिपि व विभिन्न भाषाओं की लिपियों को जानना।
- (iv) व्याकरण के नियमों को समझना।
- (v) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त करना।
- (vi) व्याकरण के विभिन्न अंगों की जानकारी प्राप्त करना।

अध्यापन सामग्री- श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पुस्तक, चित्र, वर्कशीट, बोली व लिपि की तालिका आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि- अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को चित्र दिखाकर कुछ प्रश्न पूछेंगे।

- (i) एक विद्यार्थी मंच पर कहानी सुना रहा है- (चित्र दिखाकर)
- (ii) एक विद्यार्थी कक्षा में बैठकर उत्तर पुस्तिका में कुछ लिख रहा है (चित्र दिखाकर)
प्रथम चित्र में तथा दूसरे चित्र में भाषा का कौन-सा रूप दिखाई दे रहा है? (मौखिक व लिखित)
- (iii) लिखित रूप की आवश्यकता।
- (iv) लिपि किसे कहते हैं?
- (v) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को क्या कहते हैं?

आज हम भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

शिक्षण प्रणाली—

पहला चरण— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ प्रश्न लिखकर विद्यार्थियों को प्रश्न पूछेंगे और आवश्यकतानुसार उनको स्पष्ट करेंगे।

(i) विचारों का आदान-प्रदान किस साधन द्वारा किया जाता है?

विचारों का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से होता है।

(ii) भाषा का लिखित रूप क्यों आवश्यक है?

लिखित रूप द्वारा ही विचारों व साहित्य को सुरक्षित रख सकते हैं ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए साहित्य उपलब्ध हो सके।

दूसरा चरण—

(i) भारत में बोली जाने वाली तीन बोलियों के नाम बताओ। (मारवाड़ी, कन्नौजी, छत्तीस गढ़ी)

(ii) 'रामचरितमानस' की रचना किस भाषा में हुई है? (अवधी में)

(iii) हिंदी भाषा की उपभाषाएँ कितनी हैं?

हिंदी भाषा की उपभाषाएँ पाँच हैं— पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी हिंदी, पहाड़ी हिंदी, राजस्थानी हिंदी। प्रत्येक उपभाषा की विभिन्न बोलियाँ हैं।

तीसरा चरण— पश्चिमी हिंदी की दो बोलियाँ बताइए। (खड़ी बोली, ब्रजभाषा)

(i) लिपि किसे कहते हैं? तथा संस्कृत की लिपि का नाम बताइए।

(ii) अंग्रेज़ी व उर्दू भाषा की लिपि कौन-सी है?

ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं। संस्कृत की देवनागरी, अंग्रेज़ी की रोमन व उर्दू की लिपि फ़ारसी हैं।

चौथा चरण— भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को क्या कहते हैं? (व्याकरण)

(i) व्याकरण के कितने अंग हैं?

व्याकरण के चार अंग हैं।

(ii) राजभाषा व राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है?

किसी देश के राजकाज की भाषा राजभाषा व ऐसी भाषा जिसका प्रयोग देश के अधिकांश नागरिक करते हैं। उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

(i) वे ध्वनि चिह्न जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं।

(ii) भाषा के दो रूप हैं— (क) मौखिक (ख) लिखित।

(iii) एक क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा के विशिष्ट रूप को 'बोली' कहते हैं।

(iv) ध्वनि के लिखित चिह्न वर्ण कहलाते हैं तथा वर्णों के लिखने की विधि को 'लिपि' कहते हैं।

(v) संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली की लिपि देवनागरी है।

(vi) भारत में अनेक भाषाएँ और अनेक लिपियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं।

- (vii) लिखित भाषा ही भाषा का स्थाई रूप है, जिससे हमारे विचार भविष्य में सुरक्षित रह सकते हैं।
- (viii) भाषा के लिखित रूप में निपुण होने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है।
- (ix) हिंदी भाषा की पाँच उपभाषाएँ व उनकी विभिन्न बोलियाँ हैं।
- (x) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को 'व्याकरण' कहते हैं।
- (xi) व्याकरण के चार अंग हैं— (क) ध्वनि विचार, (ख) शब्द विचार, (ग) पद विचार, (घ) वाक्य विचार।
- (xii) शब्द, पद तथा वाक्य में अंतर है। वर्णों का सार्थक समूह शब्द है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वह 'पद' कहलाता है। शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य बनता है।
- (xiii) किसी भी देश के राज-काज की भाषा को राजभाषा, देश के अधिकांश लोग जिस भाषा का प्रयोग करते हैं। उसे 'राष्ट्रभाषा' कहते हैं।
- (xiv) भारत में 'हिंदी' को 'राजभाषा' व 'राष्ट्रभाषा' का गौरव प्राप्त है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) भाषा के मौखिक व लिखित रूप का अंतर जानना।
- (ii) भाषा के लिखित रूप का निरन्तर अभ्यास करना।
- (iii) हिंदी भाषा के लिखित रूप के महत्त्व को समझना।
- (iv) विभिन्न बोलियों की जानकारी।
- (v) हिंदी भाषा की उपभाषाओं को जानना।
- (vi) व्याकरण के महत्त्व से अवगत होना।
- (vii) व्याकरण के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को एक वर्कशीट दी जाएगी जिसमें विभिन्न उपभाषा व उसके अंतर्गत आने वाली बोलियों के नाम लिखने होंगे।
- (ii) विश्व के दस देश व वहाँ पर बोली जाने वाली भाषाओं के नाम लिखने के लिए दिए जाएँगे। उत्तम कार्य करने वाले विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (ii) पश्चिमी हिंदी (ख) (iii) बिहारी हिंदी (ग) (iii) गुरुमुखी
(घ) (i) रोमन (ङ) (ii) शब्द (च) (iii) 14 सितंबर
2. (क) आदान-प्रदान (ख) राजभाषा (ग) व्याकरण
(घ) बोली (ङ) उपभाषाओं (च) पदबंध
(छ) हिंदी
3. भाषा के मौखिक और लिखित दो रूप होते हैं।

4. मौखिक भाषा और लिखित भाषा में अंतर—

- (i) मौखिक भाषा, भाषा का प्राचीनतम तथा मूल रूप है, जबकि लिखित भाषा का उद्भव और विकास इसके पश्चात हुआ।
- (ii) भाषा का मौखिक रूप बच्चा अपने आसपास के वातावरण से स्वतः सीखता है, जबकि उसका लिखित रूप सीखने के लिए प्रयास और अभ्यास दोनों की आवश्यकता होती है।
- (iii) भाषा का मौखिक रूप परिवर्तित होता रहता है, परंतु लिखित रूप स्थायी होता है।
- (iv) भाषा के मौखिक रूप को सीखने के लिए किसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती, परंतु भाषा के लिखित रूप को सीखने के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

5. संस्कृत	—	देवनागरी
पंजाबी	—	गुरुमुखी
हिंदी	—	देवनागरी
उर्दू	—	फ़ारसी
मराठी	—	देवनागरी

6. (क) पंजाबी → राजभाषा
(ख) हिंदी → लिखित
(ग) एक विदेशी भाषा → उर्दू
(घ) भाषा का रूप → जर्मन
(ङ) दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाने वाली भाषा → गुरुमुखी

वर्ग-पहेली

भाषाओं के नाम—

असमिया	—	नेपाली
गुजराती	—	हिंदी
मणिपुरी	—	सिंधी

उर्दू	—	उड़िया
संस्कृत	—	कन्नड़

सोचें और बताएँ—

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या— एक

सामान्य परिचय— भाषा की उच्चरित ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। वर्णों का निश्चित एवं व्यवस्थित स्वरूप 'वर्णमाला' कहलाता है। वर्ण के दो भेद होते हैं— (i) स्वर तथा (ii) व्यंजन

जिन वर्णों के उच्चारण में वायु बिना किसी बाधा के मुँह से बाहर निकलती है, वे स्वर कहलाते हैं।

स्वरों के तीन भेद होते हैं— (i) ह्रस्व, (ii) दीर्घ तथा (iii) प्लुत।

व्यंजनों के उच्चारण के लिए स्वरों की आवश्यकता होती है। इन ध्वनियों का उच्चारण करते समय वायु मुख के किसी भाग से टकराती है, जिससे मुख में अवरोध उत्पन्न होता है। उन्हें व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों को तीन वर्गों में बाँटा गया है— (i) स्पर्श, (ii) अन्तःस्थ व (iii) ऊष्म।

उच्चारण के अनुसार व्यंजनों के भेद दो आधार पर किए गए हैं— (i) श्वास की मात्रा के आधार पर, (ii) स्वर तंत्रियों के कंपन के आधार पर।

श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है— (i) अल्पप्राण व (ii) महाप्राण।

स्वरतंत्रियों में कंपन के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया है— (i) अघोष तथा (ii) सघोष।

अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग-अयोगवाह

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) स्वर व व्यंजन की पहचान करना।
- (ii) स्वर व व्यंजन के भेदों से परिचित होना।
- (iii) हिंदी की वर्णमाला को जानना।
- (iv) अल्पप्राण, महाप्राण का अंतर समझना।
- (v) अघोष व सघोष व्यंजनों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (vi) अयोगवाह का ज्ञान व उनका प्रयोग करना सीखना।

अध्यापन सामग्री— चॉक, डस्टर, श्यामपट्ट, पाठ्यपुस्तक, स्वर व व्यंजन तालिका आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर बच्चों से उनसे संबंधित प्रश्न पूछेंगे।

- (i) स्वर किसे कहते हैं? (जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है उन्हें स्वर कहते हैं।)
- (ii) व्यंजन से आप क्या समझते हैं? (जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है उन्हें व्यंजन कहते हैं।)
- (iii) संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं? (दो विभिन्न व्यंजनों के मेल से बनने वाले व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।)
- (iv) 'अयोगवाह' का स्पष्टीकरण कीजिए। (ये न स्वर हैं न ही व्यंजन हैं।)

हमने विभिन्न वर्णों के विषय में जानकारी प्राप्त की। आज हम 'वर्ण-विचार' अध्याय पढ़ेंगे।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० दिखाकर कुछ प्रश्न पूछेंगे व उनको स्पष्ट करेंगे।

पहला चरण—

- (i) स्वर के कितने भेद हैं?
- (ii) भेदों में क्या अंतर है?
- (iii) किस भेद के अंतर्गत किस स्वर को स्वीकार किया गया है?

स्वर के तीन भेद हैं— (i) ह्रस्व, (ii) दीर्घ, (iii) प्लुत

जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें 'ह्रस्व' स्वर कहते हैं, जैसे— 'अ', 'इ', 'उ', 'ऋ'। जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है। उन्हें 'प्लुत स्वर' कहते हैं, जैसे— 'आ', 'ई', 'ऊ', 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ'। जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर के उच्चारण में तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं, जैसे— 'ओ३म'।

दूसरा चरण—

- व्यंजन के प्रकार बताइए।
- विभिन्न व्यंजनों का उच्चारण स्थान बताइए।
- संयुक्त व्यंजन कौन-कौन से हैं? वे किन-किन व्यंजनों के योग से बने हैं?

स्पष्टीकरण—

व्यंजन के तीन प्रकार हैं— (i) स्पर्श व्यंजन, (ii) अंतस्थ व्यंजन तथा (iii) ऊष्म व्यंजन।

- 'क' वर्ग— क् ख् ग् घ् ङ् (कंठ)
'च' वर्ग— च् छ् ज् झ् ञ् (तालु)
'ट' वर्ग— ट् ठ् ड् ढ् ण् (मूर्धा)
'त' वर्ग— त् थ् द् ध् न् (दंत)
'प' वर्ग— प् फ् ब् भ् म् (ओष्ठ)

- य् र् ल् व् — अंतस्थ व्यंजन हैं।
- श् ष् स् ह् — ऊष्म व्यंजन हैं।
- चार संयुक्त व्यंजन हैं—

क्ष— क् + ष

ज्ञ— ज् + ज

त्र— त् + र

श्र— श् + र

तीसरा चरण—

- उच्चारण के अनुसार व्यंजन के कितने भेद हैं?
- श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण बताइए।
- स्वर तंत्रियों के कंपन के आधार पर व्यंजनों के प्रकार बताइए।

स्पष्टीकरण—

- उच्चारण के अनुसार व्यंजन के दो भेद हैं— (क) श्वास की मात्रा के आधार पर। (ख) स्वर तंत्रियों के कंपन के आधार पर।
- श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं— अल्पप्राण व महाप्राण।
- स्वर तंत्रियों के कंपन के आधार पर व्यंजनों के दो प्रकार हैं— अघोष व सघोष।

चौथा चरण—

- अयोगवाह किसे कहते हैं?
- अनुस्वार, अनुनासिक व विसर्ग में क्या अंतर है?
- 'र्' के विविध प्रयोग बताइए।
- वर्ण-विच्छेद किसे कहते हैं?

स्पष्टीकरण—

- (i) अयोगवाह न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों का उच्चारण स्वरों के बाद होता है।
- (ii) (क) स्वर के बाद आने वाली नासिक्य ध्वनि को अनुस्वार कहते हैं।
(ख) अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण में हवा, नाक और मुँह दोनों से बाहर निकलती है।
(ग) विसर्ग का प्रयोग संस्कृत शब्दों में किया जाता है।
- (iii) 'र' के बाद कोई व्यंजन आए तो वह अपने आगे व्यंजन पर 'रेफ' के रूप में लगता है। जैसे— धर्म, कर्म।
'र' से पूर्व कोई भी स्वर रहित व्यंजन हो तो 'र' उस व्यंजन के पैर में लगाया जाता है, जैसे— प्रयागराज, प्रशिक्षण।
'ट्' अथवा 'ड्' के बाद आगे वाला 'र' व्यंजन के नीचे लगाया जायेगा। जैसे— राष्ट्र, ड्रम।
- (iv) वर्ण-विच्छेद का अर्थ है— अलग-अलग करना। इसमें प्रत्येक व्यंजन से स्वर को अलग किया जाता है।
आगमन, निगमन, प्रश्नोत्तर व व्याख्यान विधि द्वारा अध्याय का विकास किया जाएगा।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) वर्ण हमारे मुँह से निकली हुई ध्वनियों का लिखित रूप है।
- (ii) वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- (iii) वर्ण के दो भेद हैं— (क) स्वर तथा (ख) व्यंजन।
- (iv) जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास-वायु बिना किसी रुकावट के मुँह से निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं।
- (v) स्वर के दो भेद हैं— (क) ह्रस्व व (ख) दीर्घ।
(क) ह्रस्व स्वर— अ, इ, उ, ऋ
(ख) दीर्घ स्वर— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
- (vi) जिन वर्णों के उच्चारण के समय श्वास वायु मुख के किसी भाग से टकराती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।
व्यंजनों को तीन वर्गों में बांटा गया है— (क) स्पर्श (ख) अंतःस्थ (ग) ऊष्म। तीनों प्रकार के व्यंजनों के उच्चारण स्थान अलग-अलग हैं।
- (vii) उच्चारण के अनुसार व्यंजनों के दो भेद हैं— (क) श्वास मात्रा के आधार पर (ख) स्वर तंत्रियों के कंपन के आधार पर।
- (viii) श्वास की मात्रा के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं— अल्पप्राण व महाप्राण।
- (ix) स्वर तंत्रियों के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं— अघोष तथा सघोष।
- (x) अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग-अयोगवाह हैं।
- (xi) 'र्' का प्रयोग विविध प्रकार से होता है।
- (xii) वर्ण-विच्छेद में प्रत्येक व्यंजन से स्वर को अलग किया जाता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) स्वर के विभिन्न भेदों की जानकारी प्राप्त करना।
- (ii) व्यंजन व उसके वर्गीकरण को समझना।
- (iii) संयुक्त व्यंजन की पहचान।
- (iv) अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग में अंतर करना।

- (v) 'र' का विविध प्रकार से प्रयोग करना सीखना।
 (vi) हिंदी वर्णमाला का पूरा ज्ञान प्राप्त करना।
 (vii) भाषा के शुद्ध रूप को सीखना।
 (viii) वर्णों की ध्वनियों को सूक्ष्मता से समझना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका कक्षा को चार समूहों में विभाजित करेंगे— ए, बी, सी तथा डी। कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों द्वारा उसका वर्ण-विच्छेद कराएँगे। प्रत्येक समूहों से एक-एक विद्यार्थी को बुलाकर वर्ण-विच्छेद कराया जाएगा। विजेता समूह का तालियों द्वारा उत्साह बढ़ाया जाएगा।
 (ii) संयुक्त व्यंजनों की सहायता से बनने वाले पाँच-पाँच शब्द लिखने के लिए दिए जाएँगे। अगले दिन उनकी उत्तरपुस्तिका की जाँच की जाएगी व सुधार कार्य कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (i) ग्यारह (ख) (iii) तैंतीस (ग) (ii) चार
 (घ) (ii) नासिक्य व्यंजन (ङ) (ii) अंतःस्थ व्यंजन
 2. (क) अनुस्वार (ख) चार (ग) द्वित्व
 (घ) ऊष्म (ङ) 25

3.	स्वर	व्यंजन
1. स्वर वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है। जैसे- अ	1. व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। जैसे- क (क् + अ)	
2. स्वर वर्णों के उच्चारण में श्वास-वायु बिना किसी रुकावट के मुख से निकलती है। जैसे- अ, इ, उ इत्यादि।	2. व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास-वायु मुख के किसी भाग से टकराती है तो किसी स्थान पर अवरोध उत्पन्न करती है, जैसे-प, थ, छ इत्यादि।	

4. अनुस्वार—अंगूर, उमंग, गंगा

विसर्ग—प्रातः, दुःशासन, प्रायः

हलन्त—अद्भुत, विद्यालय, उद्देश्य

5. (क) पारस = प् + आ + र् + अ + स् + अ
 (ख) प्रकृति = प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ
 (ग) ऐनक = ऐ + न् + अ + क् + अ
 (घ) विज्ञान = व् + इ + ज् + ज् + आ + न् + अ
 (छ) अध्यात्म = अ + ध् + य् + आ + त् + म् + अ
 (ज) उच्चारण = उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ

6. (क) शिक्षिका (ख) दीपावली (ग) कवि
(घ) साप्ताहिक (ङ) सामान

क्रियाकलाप

च वर्ग – च छ ज झ ञ।

त वर्ग – त थ द ध न।

प वर्ग – प फ ब भ म।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या– एक

सामान्य परिचय– वर्णों के सार्थक व निश्चित क्रम से शब्द का निर्माण होता है। वर्णों के योग से बनी सार्थक इकाई 'शब्द' कहलाती है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह 'पद' कहलाता है। शब्दों का वर्गीकरण निम्न आधारों पर किया गया है–

- | | |
|-------------------------|------------------------------------|
| (i) स्रोत के आधार पर | (ii) रचना के आधार पर |
| (iii) प्रयोग के आधार पर | (iv) व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर |
| (v) अर्थ के आधार पर | |

स्रोत के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं– (i) तत्सम शब्द (ii) तद्भव शब्द तथा (iii) देशज शब्द (iv) विदेशी शब्द।

रचना के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं– (i) मूल शब्द और (ii) यौगिक शब्द।

प्रयोग के आधार पर शब्द के निम्नलिखित भेद हैं– (i) सामान्य शब्द (ii) तकनीकी शब्द तथा (iii) अर्द्ध पारिभाषिक शब्द।

व्याकरणिक प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद हैं– (i) विकारी शब्द व (ii) अविकारी शब्द

अर्थ के आधार पर शब्द के चार भेद हैं– (i) एकार्थी (ii) अनेकार्थी (iii) पर्यायवाची तथा (iv) विलोम।

अधिगम का उद्देश्य–

- | | |
|------------------------------------------------|-----------------------------------------------|
| (i) शब्द निर्माण करने की क्षमता का विकास करना। | (ii) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना। |
| (iii) तत्सम और तद्भव शब्दों में अंतर करना। | (iv) देशज व विदेशी शब्दों की पहचान करना। |
| (v) विकारी व अविकारी शब्दों से अवगत होना। | (vi) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त करना। |

अध्यापन सामग्री– शब्द तालिका, सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि– अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों से प्रश्न पूछेंगे।

- शब्दों का निर्माण किससे होता है? (वर्णों से)
- शब्द को 'पद' की संज्ञा कब दी जाती है? (जब वह वाक्य में प्रयुक्त होता है।)

- (iii) संस्कृत भाषा के दो शब्द बताइए। (दधि, दुग्ध)
- (iv) 'औरत' तथा 'टिकट' शब्द क्या हिंदी भाषा के शब्द हैं? (ये शब्द विदेशी हैं लेकिन ये हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं।)
- (v) एकार्थी व अनेकार्थी शब्दों में क्या अंतर है? (एकार्थी— जिन शब्दों का केवल एक अर्थ होता है। अनेकार्थी— जो शब्द एक से अधिक अर्थ देते हैं।)

आज हम 'शब्द-विचार' विषय का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

शिक्षण प्रणाली— प्रश्नोत्तर, व्याख्यान विधि के द्वारा पूर्ण पाठ का विकास किया जाएगा। अध्यापक/अध्यापिका एक सी०डी० दिखाएँगे जिसमें शब्दों का वर्गीकरण किया गया हो।

पहला चरण—

- (i) 'भ्रमर' व 'भँवरा' शब्द में क्या अंतर है?
- (ii) विभिन्न जातियों व बोलियों से आए शब्दों को क्या कहते हैं?
- (iii) अक्टूबर, डॉक्टर, ट्रेन, बैंक किस भाषा के शब्द हैं?

स्पष्टीकरण—

- (i) भ्रमर तत्सम व भँवरा तद्भव शब्द हैं। संस्कृत भाषा के जो शब्द ज्यों के त्यों हिंदी भाषा में आ गए हैं, वे तत्सम शब्द हैं और जो शब्द संस्कृत के शब्दों से कुछ परिवर्तन करके बने हैं, वे तद्भव शब्द हैं।
- (ii) देशज शब्द कहते हैं।
- (iii) अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं।

दूसरा चरण—

- (i) सामान्य मूल शब्द के दो उदाहरण बताइए। (दाल, रोटी)
- (ii) इनके टुकड़े करने से क्या इन शब्दों का कोई अर्थ निकलता है? (रो+टी, दा+ल) (नहीं)
- (iii) दो शब्दों के मेल से बने कोई दो शब्द बताइए? (रेलगाड़ी, धर्मशाला)
- (iv) नीलकंठ और दशानन शब्द किसके लिए प्रयुक्त होते हैं? (शिव, रावण)

स्पष्टीकरण—

- (i) रचना के आधार पर शब्द के दो भेद हैं— (i) मूल शब्द व (ii) यौगिक शब्द
- (ii) मूल शब्द के सार्थक खंड नहीं हो सकते। यह निश्चित अर्थ देते हैं।
- (iii) एक से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले सार्थक शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं।
- (iv) जो शब्द यौगिक होते हुए भी अपना एक विशेष अर्थ रखते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

तीसरा चरण—

- (i) कुछ ऐसे शब्द बताइए जिनका प्रयोग हम प्रतिदिन करते हैं। (खाना, घूमना)
- (ii) गवाह, सजा, मुकदमा शब्द का संबंध किस क्षेत्र से है? (कानून से)
- (iii) बैकिंग क्षेत्र के दो शब्द बताइए? (खाता, नगद)
- (iv) संज्ञा, सर्वनाम का संबंध किस क्षेत्र से है? (हिंदी भाषा के व्याकरण से)

स्पष्टीकरण—

- (i) जो शब्द दैनिक जीवन में प्रयुक्त होते हैं उन्हें मूल शब्द कहते हैं।
- (ii) कुछ शब्द किसी विषय विशेष से जुड़े होते हैं, उन्हें तकनीकी या पूर्ण पारिभाषिक शब्द कहते हैं।

चौथा चरण—

- (i) 'विकारी' शब्द का क्या अर्थ है? (जिसमें विकार आ जाए)
- (ii) 'अविकारी' शब्द किसे कहते हैं? (जिनमें कोई परिवर्तन न हो)
- (iii) अर्थ के आधार पर कुछ शब्दों के प्रकार बताइए? (एकार्थी, अनेकार्थी, पर्यायवाची, विलोम शब्द)
- (iv) जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी शब्द और जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) वर्णों के मेल से बनने वाली सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं।
- (ii) जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो उसे 'पद' कहते हैं।
- (iii) शब्दों का वर्गीकरण पाँच आधारों पर होता है— (क) स्रोत के आधार पर, (ख) रचना के आधार पर, (ग) प्रयोग के आधार पर, (घ) व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर तथा (ङ) अर्थ के आधार पर।
- (iv) स्रोत के आधार पर चार भेद हैं— तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी।
- (v) रचना के आधार पर दो भेद हैं— मूल शब्द व यौगिक शब्द। मूल शब्द के भी दो भेद हैं— सामान्य मूल शब्द, रूढ़ मूल शब्द।
- (vi) प्रयोग के आधार पर तीन भेद हैं— सामान्य शब्द, पूर्ण पारिभाषिक या तकनीकी शब्द, अर्द्ध पारिभाषिक शब्द।
- (vii) व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर दो भेद हैं— विकारी शब्द तथा अविकारी शब्द।
- (viii) विकारी शब्दों के चार भेद हैं— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया।
- (ix) अविकारी शब्दों के चार भेद हैं— समुच्चबोधक, संबंधबोधक, क्रियाविशेषण व विस्मयादिबोधक।
- (x) अर्थ के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं— एकार्थी, अनेकार्थी, पर्यायवाची व विलोम शब्द।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) शब्द निर्माण करना सीखना।
- (ii) व्याकरण के नियमों को समझना।
- (iii) मानक वर्तनी को सीखना।
- (iv) सामान्य शब्द, यौगिक शब्दों की पहचान करना।
- (v) संस्कृत व तद्भव शब्दों से अवगत होना।
- (vi) शब्द-भंडार में वृद्धि करना सीखना।
- (vii) शब्दों के विभिन्न प्रकारों की पहचान करना सीखना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका कक्षा को दो समूहों में विभाजित करेंगे। श्यामपट्ट पर कुछ विकारी व अविकारी शब्द लिखकर विद्यार्थियों द्वारा वाक्य निर्माण कराएँगे। प्रत्येक समूह से एक-एक विद्यार्थी वाक्य का निर्माण करेगा। जिस समूह के विद्यार्थी द्वारा शुद्ध वाक्य निर्माण करने की क्रिया अधिक होगी, उन्हें विजेता समूह घोषित किया जाएगा।
- (ii) दस तत्सम शब्द व उन्हीं के तद्भव शब्द लिखने के लिए दिए जाएँगे। अगले दिन विद्यार्थियों की उत्तरपुस्तिका की जाँच की जाएगी व सुधार कार्य कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (i) यौगिक (ख) (ii) विकारी
(ग) (iii) अरबी (घ) (i) तत्सम
2. (क) (ii) नींद (×) (ख) (i) विदेशी (×)
(ग) (ii) विकारी (×) (घ) (iii) क्रियाविशेषण (×)
3. (क) योगरूढ़ (ख) यौगिक
(ग) बदलता (घ) तत्सम
(ङ) पुस्तक, मोहन, गया, वह, अच्छा
4. तद्भव शब्द
मोती, ऊँट, कुत्ता, सिर, ओंठ, आम

5.

रूढ़	यौगिक	योगरूढ़
वारि	पुस्तकालय	नीलकंठ
घोड़ा	देवालय	लंबोदर
जग	कुपुत्र	पंकज
घर	विद्यार्थी	
	अवगुण	

6. (क) विद्यालय (ख) रक्त (ग) समाचार-पत्र (घ) विवाह
(ङ) विश्वविद्यालय (च) प्रबंधक
7. (क) विकारी (ख) चीनी (ग) तुर्की (घ) तत्सम
(ङ) अरबी

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या— दो

सामान्य परिचय— संधि शब्द का अर्थ है— मेल या जोड़। व्याकरण में यह मेल दो वर्णों के निकट आने से होता है। संधि द्वारा मिले वर्णों को अलग-अलग करके पूर्व स्थिति में लाने की प्रक्रिया को संधि-विच्छेद कहते हैं। संधि के तीन भेद होते हैं— (i) स्वर संधि (ii) व्यंजन संधि तथा (iii) विसर्ग संधि।

स्वर संधि के पाँच भेद किए जाते हैं— (i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि संधि (iv) यण संधि (v) अयादि संधि।

किसी व्यंजन के बाद कोई स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

विसर्ग के बाद यदि कोई स्वर या व्यंजन आने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

अधिगम का उद्देश्य—

- | | |
|----------------------------------------------|--------------------------------------------|
| (i) संधि से परिचित कराना। | (ii) संधि-विच्छेद सिखाना। |
| (iii) संधि के विभिन्न भेदों की जानकारी देना। | (iv) संधि के विभिन्न नियमों से अवगत कराना। |
| (v) परिमार्जित भाषा का ज्ञान देना। | (vi) संधि-विच्छेद का अभ्यास कराना। |

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, सी०डी०, वर्कशीट आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखेंगे और विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान के आधार पर संधि कराएँगे।

- | | | | |
|----------------|-------------|---------------|----------------|
| (i) विद्या+आलय | (ii) रमा+ईश | (iii) वेद+अंत | (iv) कवि+इंद्र |
| (v) महा+ऋषि | | | |

संधि करके शब्द बनेंगे— विद्यालय, रमेश, वेदांत, कवींद्र, महर्षि।

वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं। आज 'संधि' अध्याय पढ़ाया जाएगा।

शिक्षण प्रणाली—

पहला चरण—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका विभिन्न नियमों द्वारा स्वर संधि के भेद समझाएँगे।
सत्य+आग्रह = सत्याग्रह, मही+इंद्र = महींद्र।
- (ii) ह्रस्व या दीर्घ स्वर 'अ', 'इ', 'उ' के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' आए तो दोनों मिलकर दीर्घ स्वर 'आ', 'ई', 'ऊ' बन जाते हैं। इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं। जैसे— रमा+ईश = रमेश, राज+इंद्र = राजेंद्र।
- (iii) 'अ' या 'आ' के आगे यदि ह्रस्व या दीर्घ 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', 'ऋ' आएँ, तो उनके स्थान पर 'ए', 'ओ', 'अर्' हो जाता है। यह गुण संधि कहलाती है।

दूसरा चरण—

- (i) सदा+एव = सदैव, वन+औषध = वनौषध। यदि ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'आ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ 'ए', 'ओ', 'ऐ', 'औ' आएँ तो उनकी जगह 'ऐ', 'औ' हो जाते हैं। इसे वृद्धि संधि कहते हैं।
- (ii) अति+अधिक = अत्यधिक, प्रति+एक = प्रत्येक। यदि ह्रस्व या दीर्घ 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', 'ऋ' के आगे कोई असमान स्वर आए तो 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' का 'व' और 'ऋ' का 'र्' हो जाता है। यह यण संधि कहलाती है।

तीसरा चरण— गै+अक = गायक, पौ+अक = पावक। 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई भी भिन्न स्वर आए तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव्' तथा 'औ' का 'आव्' हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

चौथा चरण— किसी भी व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन हो, उसे व्यंजन संधि कहते हैं, जैसे— वाक्+ईश = वागीश, सत्+मार्ग = सन्मार्ग, उत्+चारण = उच्चारण, सम्+सार = संसार।

पाँचवाँ चरण— विसर्ग के बाद यदि कोई स्वर या व्यंजन आए तो जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं, जैसे— मनः+रथ = मनोरथ, निः+अर्थक = निरर्थक, निः+छल = निश्चल, नमः+कार = नमस्कार।

अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० द्वारा विद्यार्थियों को संधि के सभी नियमों का ज्ञान देंगे। प्रश्नोत्तर, व्याख्यान, स्पष्टीकरण आदि शिक्षण प्रणालियों के सहयोग से पूरे पाठ का विकास करेंगे।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) दो वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।
- (ii) संधि के तीन भेद होते हैं— स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
- (iii) दो स्वरों के आपसी योग से उनमें जो परिवर्तन आता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।
- (iv) स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं— दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि और अयादि संधि।
- (v) किसी व्यंजन का स्वर अथवा व्यंजन से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
- (vi) किसी विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, वह विसर्ग संधि कहलाती है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) 'संधि' व 'संधि-विच्छेद' करना सीखना।
- (ii) संधि के तीन भेदों से अवगत होना।
- (iii) स्वर संधि व उसके समस्त भेदों की जानकारी प्राप्त करना।
- (iv) दीर्घ संधि व वृद्धि संधि की पहचान करने की क्षमता का विकास।
- (v) व्यंजन संधि व विसर्ग संधि के नियमों को समझकर उनमें अंतर करना सीखना।
- (vi) संधियुक्त शब्दों का चयन करने का अभ्यास करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर शीर्षक देकर स्वर संधि के सभी भेदों को अलग-अलग लिखेंगे। श्यामपट्ट पर ही संधि युक्त शब्दों को लिखकर विद्यार्थियों द्वारा उनका विच्छेद करवाकर उपयुक्त

शीर्षक के अंतर्गत लिखने के लिए कहेंगे। सही उत्तर देने वालों का प्रशंसनीय शब्दों द्वारा उत्साह बढ़ाया जाएगा।

- (ii) अपनी पाठ्यपुस्तक में से दस संधियुक्त शब्दों को चुनकर उनका विच्छेद करवाया जाएगा। उत्तरपुस्तिका की जाँचकर त्रुटिशोधन करवाया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- एक + एक = एकैक
महा + ऋषि = महर्षि
चरण + अमृत = चरणामृत
परि + ईक्षा = परीक्षा
सु + आगत = स्वागत

वन + औषध = वनौषध
अति + आचार = अत्याचार
अति + अधिक = अत्यधिक
महा + ईश्वर = महेश्वर
दुः + शासन = दुःशासन
- लघु + उत्तर
राज + ऋषि
महा + औषध
सु + अस्ति
जगत् + अंबा
सोना + आर

परम + ईश्वर
सदा + एव
अति + आचार
उत् + लेख
निः + आशा
निः + कलंक

3.	स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
	यथैव	जगदीश	निष्प्राण
	पर्वतारोहण	संतोष	मनोहर
	अत्युत्तम	वागीश	निर्धन
	परोपकार	उन्नति	निस्संतान
	सारांश	सज्जन	तेजोमय

- सु + आगत
लघु + उत्तर
जल + ओघ

उत् + लेख
परम + ऐश्वर्य
अनु + एषण

गिरि + ईश
हित + उपदेश
निः + भय
- तथैव
एकैक
सूक्ति
उज्ज्वल

सत्याग्रह
दुर्जन
जगन्नाथ
दिगंबर

नारीश्वर
मात्राज्ञा
उपर्युक्त
इत्यादि

उच्चारण
नदीश
सोमंद्र
सोमंद्र

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(क) उपसर्ग

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा की आवश्यकता है। भाषा का निर्माण शब्दों से होता है। शब्द-निर्माण कई प्रकार से किया जाता है— (i) उपसर्ग से (ii) प्रत्यय से (iii) समास से।

जो शब्दांश किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता ला देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं।

उपसर्ग के चार भेद होते हैं— (i) संस्कृत के उपसर्ग (ii) हिंदी के उपसर्ग (iii) उर्दू के उपसर्ग (iv) संस्कृत के अव्यय।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) 'उपसर्ग' से परिचित होना।
- (ii) संस्कृत व हिंदी उपसर्गों से अवगत होना।
- (iii) संस्कृत के अव्यय व उर्दू उपसर्गों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (iv) शब्द-निर्माण की क्षमता का विकास करना।
- (v) भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त करना।
- (vi) मूल शब्दों की पहचान करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, पाठ्यपुस्तक आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर कुछ प्रश्न पूछेंगे।

- (i) माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
- (ii) निर्धन की सहायता करो।
- (iii) मुकेश स्वदेश लौट आया।
- (iv) अत्याचार मत सहो।
- (v) अधर्म के मार्ग पर मत चलो।
- (vi) रमेश दुर्घटना में घायल हो गया।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द निम्नलिखित उपसर्ग व मूल शब्दों से बने हैं।

उपसर्ग	मूलशब्द	उपसर्ग युक्त शब्द
अन्	आदर	अनादर
निर्	धन	निर्धन
अति	आचार	अत्याचार
अ	धर्म	अधर्म
दुर्	घटना	दुर्घटना

मूल शब्दों के आरंभ में कुछ शब्दांश लगाए गए हैं, जिससे उनके अर्थ में परिवर्तन आ गया है। ऐसे शब्दांश जो मूल शब्दों के आरंभ में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— सी०डी० द्वारा पाठ का विकास किया जाएगा।

पहला चरण—

- (i) उपवन में फूल खिले हैं।
- (ii) स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।
- (iii) मैं आजीवन सत्य के पथ पर चलूँगा।
- (iv) नए वातावरण का स्वागत उत्साह से करो।
- (v) प्रयत्न करने से सफलता मिलेगी।

उपरोक्त वाक्यों में 'उप्', 'स्व', 'आ', 'उत्', 'प्र' उपसर्ग हैं। ये संस्कृत भाषा के उपसर्ग हैं, जो हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं।

दूसरा चरण—

- (i) यह आम अधपका है।
- (ii) राजीव ने भरपेट भोजन कर लिया।
- (iii) तुम बिन खाए कितने दिन रह सकते हो।
- (iv) जीवन अनमोल है।
- (v) रमेश किसी दुविधा में पड़ गया।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'अध', 'भर', 'बिन', 'अन', 'दु' उपसर्ग हैं, जो हिंदी भाषा के हैं।

तीसरा चरण—

- (i) गीता बीमारी के कारण कमज़ोर हो गई है।
- (ii) गैर कानूनी कार्य मत करो।
- (iii) हर तरफ़ हरियाली छाई हुई है।
- (iv) यह बस्ता लावारिस है।
- (v) तुम खुशकिस्मत हो जो तुम्हारा बेटा इतना अधिक आज्ञाकारी है।

'कम', 'गैर', 'हर', 'ला', 'खुश' उपसर्ग उर्दू भाषा से हिंदी भाषा में आए हैं।

चौथा चरण—

- (i) वाद्-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने के कारण मेरी बहिन को पुरस्कार मिला।
- (ii) चिरजीवी रहो।
- (iii) नकारात्मक विचारों को मन में मत आने दो।
- (iv) सुजाता का पुनर्विवाह हुआ है।
- (v) तुषार मेरा सहपाठी है।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'पुरस्', 'चिर्', 'न', 'पुनर्', 'सह' संस्कृत के अव्यय हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) जो शब्दांश किसी मूल शब्द के आरंभ में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।
- (ii) उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

- (iii) हिंदी भाषा में चार तरह के उपसर्ग प्रयोग में लाए जाते हैं— (i) संस्कृत के उपसर्ग, (ii) हिंदी के उपसर्ग, (iii) उर्दू के उपसर्ग, (iv) संस्कृत के अव्यय।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- उपसर्गों को जानना व पहचानना।
- उपसर्गों से नए शब्द बनाना।
- उपसर्ग युक्त शब्दों से मूल शब्द व उपसर्ग को अलग करना।
- संस्कृत के उपसर्ग व संस्कृत के अव्ययों में अंतर समझना।
- हिंदी उपसर्ग व उर्दू उपसर्गों की पहचान करना।
- उपसर्ग युक्त शब्दों से वाक्य-निर्माण करना।

मूल्यांकन—

- श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर विद्यार्थियों द्वारा मूलशब्द से उपसर्ग अलग-अलग कराए जाएँगे।
- एक वर्कशीट विद्यार्थियों को दी जाएगी, जिसमें कुछ उपसर्ग लिखे होंगे। उन उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाने के लिए दिए जाएँगे। वर्कशीट की जाँच कर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- निर्भय — निर् उपसर्ग
अत्याचार — अति उपसर्ग
अध्यक्ष — अधि उपसर्ग
दुस्साहस — दुस् उपसर्ग
पुनरागमन — पुनः उपसर्ग
- अधोपतन, अत्यधिक, स्वाभिमान, दुस्साहस, तिरस्कार
- | | | | |
|-----------|---------|---------|--------|
| विदेश | — वि | दुर्बल | — दुर् |
| उपकार | — उप | अनुराग | — अनु |
| अत्युत्तम | — अति | प्रहार | — प्र |
| प्रतिकूल | — प्रति | सुपुत्र | — सु |
| चिरस्थायी | — चिर | अनपढ़ | — अन |
| अनुमगन | — अनु | अधर्म | — अ |
- | उपसर्ग | अर्थ | नवीन शब्द |
|--------|-----------------------|------------|
| प्रति | हर एक, सामने, विरुद्ध | प्रतिध्वनि |
| अनु | पीछे, बाद में | अनुशासन |
| दुर् | बुरा | दुराचार |
| | | प्रत्येक |
| | | अनुभव |
| | | दुर्बल |

परा	विपरीत, नाश	पराजय	पराधीन
अभि	सामने, चारों ओर	अभिप्राय	अभिमान
कु	बुरा	कुपुत्र	कुबुद्धि

5. (क) वह आजीवन निस्संतान रहा।
 (ख) उसकी दुर्दशा देखी नहीं जाती।
 (ग) अयोग्य होने के कारण उसे नौकरी नहीं मिली।
 (घ) ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करें।
 (ङ) गरीबी के कारण राम को भरपेट भोजन नहीं मिला।
6. अपहरण, आगमन, प्रतिदिन, बेईमान, विक्रम, अवगुण, गणतंत्र, सुमति, निर्बल, स्वदेश
7. (क) अपमान (ख) पराजय (ग) उपदेश (घ) आजीवन
 (ङ) अभिनेता
- क्रियाकलाप**
 छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ख) प्रत्यय

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— वह शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें ‘प्रत्यय’ कहते हैं। इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं— (i) कृत प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय।

कृत प्रत्यय— जो प्रत्यय क्रिया की धातुओं के साथ जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। उन्हें ‘कृत प्रत्यय’ कहते हैं, जैसे— आवट, अनीय, इया, ईला, अन आदि।

तद्धित प्रत्यय— जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के साथ मिलकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। उन्हें ‘तद्धित प्रत्यय’ कहते हैं, जैसे— आ, आर, आक, वान आदि।

कुछ विदेशी प्रत्यय भी हिंदी भाषा में प्रयोग में लाए जाते हैं, जैसे— रवाना, गर, साज़, मंद आदि।

अधिगम का उद्देश्य—

- | | |
|--------------------------------------------------|----------------------------------------|
| (i) प्रत्यय का ज्ञान देना। | (ii) नए शब्दों का निर्माण करना सीखना। |
| (iii) ‘कृत’ व ‘तद्धित’ प्रत्ययों में अंतर समझना। | (iv) विदेशी प्रत्ययों की जानकारी देना। |
| (v) मूल शब्द की पहचान सीखना। | |

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, प्रत्यय तालिका, वर्कशीट आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- | | |
|-------------------------------------|----------------------------------|
| (i) इन चावलों में <u>मिलावट</u> है। | (ii) राम की <u>हँसी</u> मोहक है। |
|-------------------------------------|----------------------------------|

(iii) यह खिलौना मोनू का है।

(iv) नवीन गाँव का मुखिया है।

(v) छोटा जादूगर जादू दिखाकर अपने परिवार का पेट पालता था।

अध्यापक/अध्यापिका उपरोक्त वाक्यों को श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों से रेखांकित शब्दों में प्रत्यय अलग करने के लिए कहेंगे। ऊपर के वाक्यों में क्रमशः ‘आवट’, ‘ई’, ‘औना’, ‘इया’, ‘गर’ प्रत्यय हैं। वे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर नए शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हें ‘प्रत्यय’ कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली—

पहला चरण— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ प्रत्यय लिखेंगे व विद्यार्थियों के सहयोग से नए शब्द बनाएँगे, जैसे— ‘कर’, ‘आ’, ‘अक्कड़’, ‘ऐया’, ‘आन’ आदि।

प्रत्यय	शब्द
कर	— सुनकर, पीकर, खाकर
आ	— झूला, मेवा, भूला
अक्कड़	— घुमक्कड़, भुलक्कड़, पियक्कड़
ऐया	— गवैया, खवैया

धातुओं के अंत में जुड़कर उनके अर्थों को परिवर्तित करने वाले प्रत्यय ‘कृत प्रत्यय’ कहलाते हैं।

दूसरा चरण— प्रत्यय— ‘इक’, ‘आइन’, ‘वती’, ‘वाला’, ‘ईला’।

प्रत्यय	शब्द
इक	— नैतिक, मासिक, दैनिक
आइन	— बबुआइन, पंडिताइन, ठकुराइन
वती	— गुणवती, बलवती, रूपवती
वाला	— सब्जीवाला, फलवाला, दूधवाला
ईला	— सुरीला, चमकीला, रंगीला

वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हें ‘तद्धित प्रत्यय’ कहते हैं।

तीसरा चरण— गरीबखाना, आमदनी, कारीगर, ईमानदार, पतंगबाज़, जरूरतमंद, जालसाज़।

उपरोक्त शब्दों में मूलशब्द व प्रत्यय अलग किए जाएँगे।

मूलशब्द	प्रत्यय
गरीब	— खाना
आमदन	— ई
कारी	— गर
ईमान	— दार
पतंग	— बाज़
जरूरत	— मंद
जाल	— साज़

ऊपर दिए गए शब्दों में जुड़े प्रत्यय विदेशी हैं।

चौथा चरण—

(i) कुछ शब्दों में दो प्रत्यय जुड़े होते हैं, जैसे—

मूलशब्द	प्रत्यय	प्रत्यय	शब्द
भारत	ईय	ता	भारतीयता
दया	आलु	ता	दयालुता
नीति	इक	ता	नैतिकता
बच्चा	पन	आ	बचपना
चुन	आव	ई	चुनावी

(ii) कभी-कभी एक ही शब्द में उपसर्ग व प्रत्यय दोनों का प्रयोग होता है, जैसे—

उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय	निर्मित शब्द
स्व	अधीन	ता	स्वाधीनता
अ	विश्वास	नीय	अविश्वासनीय
सम्	मान	इत	सम्मानित
तत्	काल	ईन	तत्कालीन
उप	स्थित	ई	उपस्थिति

उपरोक्त उदाहरणों द्वारा एक ही शब्द में प्रयुक्त होने वाले उपसर्ग व प्रत्यय की जानकारी दी जाएगी।

विस्तार से व्याख्या—

- वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।
- प्रत्ययों के दो प्रकार हैं। (क) कृत प्रत्यय तथा (ख) तद्धित प्रत्यय।
- क्रिया के अंत में लगने वाले प्रत्ययों को 'कृत प्रत्यय' कहते हैं।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्ययों को 'तद्धित प्रत्यय' कहते हैं।
- अनेक शब्द ऐसे हैं जिनमें उपसर्ग व प्रत्यय दोनों का प्रयोग होता है।
- कभी-कभी एक ही शब्द में दो प्रत्यय जुड़े होते हैं।
- हिंदी भाषा में कुछ विदेशी प्रत्यय भी प्रयोग में लाए जाते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- 'प्रत्यय' शब्दांश की जानकारी प्राप्त करना।
- कृत प्रत्यय व तद्धित प्रत्यय में अंतर करना।
- क्रिया शब्दों के अंत में लगकर नए शब्द बनाना सीखना।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण से नए शब्द निर्माण करना।
- विदेशी प्रत्ययों को पहचानना।
- उपसर्ग व प्रत्यय दोनों को एक साथ जोड़कर नए शब्द बनाना।

मूल्यांकन—

- (i) विद्यार्थियों द्वारा ऐसे दस शब्द लिखवाए जाएँगे, जिनमें एक से अधिक प्रत्ययों का प्रयोग किया गया हो।
(ii) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को कुछ प्रत्यय लिखाएँगे। जिनसे दो-दो शब्दों का निर्माण करने के लिए कहा जाएगा। सुधार कार्य कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- (क) अमानवीय (ख) परिश्रमी (ग) वैज्ञानिक (घ) स्वतंत्रता
(ङ) अशिक्षित (च) अपमानित (छ) निर्दयता
- आई — ऊँचाई, सिंचाई
अक्कड़ — भुलक्कड़, पियक्कड़
ई — मजदूरी, धमकी
वान — धनवान, धैर्यवान
इत — गर्वित, हर्षित
त्व — मनुष्यत्व, अपनत्व
वान — मूल्यवान, गाड़ीवान
अनीय — दर्शनीय, स्मरणीय
- व्यापार + ई प्रत्यय बना + आवट प्रत्यय नम्र + ता प्रत्यय
रिश्वत + खोर प्रत्यय आदमी + इयत प्रत्यय निर्दय + ता प्रत्यय
- (क) महँगाई (ख) चढ़ाई
(ग) झगड़ालू (घ) रुकावट
(ङ) बीमारी
- समाजिक वैज्ञानिक पाठक हर्षित
उपासक प्रायोगिक अपमानित विदेशी
- धार्मिकता (इक + ता) मानवीयता (ईय + ता)
समझदारी (दार + ई) दिखावटी (आवट + ई)
- शब्द उपसर्ग प्रत्यय
प्रायोगिक प्र + योग + इक
पुनर्जीवित पुनः + जीव + इत
सुलभता सु + लभ + ता
विनम्रता वि + नम्र + ता
विदेशी वि + देश + ई

क्रियाकलाप (वर्ग-पहेली)

समता

धार्मिक

लिखाई

सपेरा

उपजाऊ

पाठ योजना

(ग) समास

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाने की क्रिया को ‘समास’ कहते हैं। समास द्वारा बनाए गए शब्द को ‘समस्त पद’ कहते हैं। समास रचना में दो पद होते हैं। पहले पद को ‘पूर्वपद’ और दूसरे पद को ‘उत्तरपद’ कहते हैं। समस्त पद के सभी पदों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को ‘समास-विग्रह’ कहते हैं। समास के छः भेद होते हैं— (i) तत्पुरुष समास, (ii) द्विगु समास, (iii) द्वंद्व समास, (iv) कर्मधारय समास, (v) अव्ययीभाव समास, (vi) बहुव्रीहि समास।

संधि व समास में अंतर है। संधि में दो वर्णों के मेल से परिवर्तन आता है और समास में दो शब्दों के मेल से परिवर्तन होता है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) समास से अवगत होना।
- (ii) समस्त पद की जानकारी।
- (iii) समास-विग्रह करना सीखना।
- (iv) समासों के भेदों में अंतर करना।
- (v) वाक्य में समास पद का प्रयोग करना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, सी०डी०, वर्कशीट आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।

- (i) माँ रसोईघर में खाना बना रही हैं।
- (ii) गंगाजल पवित्र है।
- (iii) यह राधाकृष्ण का मंदिर है।
- (iv) गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन किया।
- (v) नवीन ने मुझे आपबीती सुनाई।

रेखांकित शब्द ‘रसोईघर’, ‘गंगाजल’, ‘राधाकृष्ण’, ‘सत्याग्रह’, ‘आपबीती’ समास हैं, जो शब्द-समूहों को संक्षिप्त करके बनाए गए हैं।

आज ‘समास’ का अध्याय पढ़ाया जाएगा।

पहला चरण— प्रश्नोत्तर व स्पष्टीकरण द्वारा पूर्ण पाठ का विकास किया जाएगा।

शब्द	समास विग्रह
वनगमन	— वन को गमन
रेखांकित	— रेखा से अंकित

यज्ञशाला	—	यज्ञ के लिए शाला
गुणहीन	—	गुण से हीन
सेनापति	—	सेना का पति
प्रेममग्न	—	प्रेम में मग्न

जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा समस्त पद बनाते समय दो पदों के बीच कारक-चिह्नों का लोप हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में विग्रह करते समय कर्ता और संबोधन कार्य का प्रयोग नहीं होता।

दूसरा चरण—

शब्द	समास विग्रह
पंजाब	— पाँच नदियों का समूह
पंचवटी	— पाँच वटों का समूह
सतसई	— सात दोहों का समूह
राजा रंक	— राजा और रंक
सुख-दुख	— सुख और दुख
माता-पिता	— माता और पिता

पहले तीन उदाहरणों में पूर्व पद संख्यावाचक हैं। जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है। उसे द्विगु समास कहते हैं। पिछले तीन उदाहरणों में दोनों ही पद प्रधान हैं। जिस समास में दोनों ही प्रधान होते हैं तथा इनका विग्रह करने पर योजक शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें द्वंद्व समास कहते हैं।

तीसरा चरण—

शब्द	विग्रह
नीलकंठ	— नीला है जो कंठ
क्रोधाग्नि	— क्रोध रूपी अग्नि
चंद्रमुख	— चंद्र के समान मुख
यथाशक्ति	— शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	— हरदिन
आजीवन	— जीवनभर

पहले तीन शब्दों में कर्मधारय समास है क्योंकि दोनों शब्दों के बीच विशेषण-विशेष्य का संबंध है। जहाँ दो शब्दों के बीच विशेषण-विशेष्य का संबंध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है। बाद के तीनों शब्दों में पहला पद अव्यय है। जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो तथा वही प्रधान हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहते हैं।

चौथा चरण—

शब्द	समास-विग्रह
चंद्रशेखर	— चंद्रमा है जिसके सिर पर (शिव)
दशानन	— दस आनन हैं जिसके (रावण)
अजातशत्रु	— शत्रु नहीं है जिसका (विशेष योद्धा)

उपरोक्त उदाहरणों में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे अर्थ को स्पष्ट कर रहे हैं। यहाँ बहुव्रीहि समास है। इस समास में दोनों में से कोई भी पद प्रधान नहीं होता अपितु दोनों पद किसी अन्य अर्थ की ओर संकेत करते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं।
- (ii) पूर्व पद व उत्तर पद के संक्षिप्त मेल से बने पद को समस्त पद कहते हैं।
- (iii) समस्त पद को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को समास-विग्रह कहते हैं।
- (iv) समास के छः भेद होते हैं— तत्पुरुष, द्विगु, द्वंद्व, कर्मधारय, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि।
- (v) तत्पुरुष समास में समस्त पद के बीच कारक-चिह्नों का लोप हो जाता है।
- (vi) द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है।
- (vii) द्वंद्व समास के बीच 'और', 'अथवा' जैसे शब्दों का लोप होता है।
- (viii) कर्मधारय समास में दोनों पदों के बीच विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है।
- (ix) अव्ययी भाव में पहला पद अव्यय होता है।
- (x) बहुव्रीहि समास में दोनों पद किसी और अर्थ की तरफ संकेत करते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) समस्त पद का निर्माण करना।
- (ii) समस्त पद का विग्रह करना।
- (iii) तत्पुरुष समास के सभी प्रकारों को समझना।
- (iv) द्विगु व द्वंद्व समास में अंतर करना।
- (v) कर्मधारय व बहुव्रीहि समास के सूक्ष्म अंतर को समझना।
- (vi) अव्यय शब्दों का जानना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर एक अनुच्छेद लिखेंगे, जिसमें रेखांकित समस्तपदों का विग्रह विद्यार्थियों द्वारा करवाया जाएगा।
- (ii) अपनी पाठ्यपुस्तक से दस समस्त पदों को उत्तरपुस्तिका में लिखकर उनका विग्रह व समास का भेद भी बताने के लिए कहा जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. नगर में वास करने वाला — नागरिक
- महान है जो पुरुष — महापुरुष
- तीन कोणों का समूह — त्रिकोण

- शक्ति से संपन्न — शक्तिसंपन्न
- ग्राम को गत — ग्रामगत
- गिरि को धारण किया है जिसने — गिरिधर
2. महापुरुष — कर्मधारय समास
- यथाक्रम — अव्ययीभाव समास
- महादेव — बहुव्रीहि समास
- लव-कुश — द्वंद्व समास
- पंजाब — द्विगु समास
- सर्वप्रिय — तत्पुरुष समास
- चंद्रशेखर — बहुव्रीहि समास
- पनडुब्बी — तत्पुरुष समास
3. कमल के समान नयन — कर्मधारय समास
- रात ही रात में — अव्ययीभाव समास
- चक्र को धारण किया है जिसने अर्थात् विष्णु — बहुव्रीहि समास
- तुलसी द्वारा कृत (रचित) — तत्पुरुष समास
- शक्ति के अनुसार — अव्ययीभाव समास
4. (क) मुझे जो जेबखर्च मिलता है, उसे मैं पुस्तकों पर खर्च करता हूँ।
- (ख) राजपुत्र होने के कारण वह घमंडी है।
- (ग) सुभाषचंद्र बोस के लिए देशभक्ति सबसे बड़ा धर्म था।
- (घ) हमें यथाशक्ति कार्य करना चाहिए।
- (ङ) हरीश कामचोर है।
- (च) भाई-बहिन ने रातोंरात सारा काम पूर्ण कर दिया।
5. समस्तपद — समास
- नियमानुसार — तत्पुरुष समास
- सद्बुद्धि — कर्मधारय समास
- धनहीन — तत्पुरुष समास
- पुरुषोत्तम — कर्मधारय समास
- चर्तुभुज — बहुव्रीहि समास
- कमलनयन — कर्मधारय समास

नवरात्रि	— द्विगु समास
रेखांकित	— तत्पुरुष समास
6. समस्तपद	— समास
नगरवास	— तत्पुरुष समास
गंगाजल	— तत्पुरुष समास
त्रिकोण	— द्विगु समास
क्रोधाग्नि	— कर्मधारय समास
प्रतिदिन	— अव्ययीभाव समास
पीतांबर	— कर्मधारय/बहुव्रीहि समास
चिकित्सालय	— तत्पुरुष समास
अमीर-गरीब	— द्वंद्व समास
तिरंगा	— बहुव्रीहि समास
पंचवटी	— द्विगु समास
क्रियाकलाप	
छात्र स्वयं करें।	

पाठ योजना

(क) विलोम शब्द

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— जो शब्द अर्थ की दृष्टि से विपरीत होते हैं, उन्हें 'विलोम' या 'विपरीतार्थक शब्द' कहते हैं। विलोम शब्द लिखते समय इस ओर ध्यान रखना चाहिए कि तत्सम शब्द का विलोम तत्सम, तद्भव शब्द का विलोम तद्भव तथा देशज शब्द का विलोम देशज शब्द ही लिखना चाहिए।

अधिगम का उद्देश्य—

- शब्द भंडार में वृद्धि करना।
- विलोम शब्द की जानकारी।
- तत्सम, तद्भव व देशज शब्दों का अंतर समझना।
- विलोम शब्द लिखते समय वचन का ध्यान रखना सीखना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पुस्तक, विलोम शब्द की तालिका आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे जिसमें रेखांकित शब्दों के विलोम विद्यार्थियों से पूछे जाएँगे।

- (i) सूर्य पूर्व दिशों में उदय होता है। (ii) ग्रीष्म ऋतु आ गई है।
 (iii) यह जमीन उर्वर है। (iv) राजीव कल कक्षा में अनुपस्थित था।
 (v) परिश्रम करने से ही उन्नति कर पाओगे।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों के विलोम क्रमशः— पश्चिम, अस्त, शरद, बंजर, उपस्थित, अवनति हैं। जो शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका विद्यार्थियों के सहयोग से विलोम शब्द लिखेंगी। विद्यार्थियों द्वारा जानकारी न होने पर स्वयं स्पष्ट करेंगी। उदाहरण—

शब्द	विलोम
निरक्षर	साक्षर
जीवन	मरण
उपकार	अपकार
गृहस्थ	संन्यासी
चंचल	शांत
तीव्र	मंद
दुर्जन	सज्जन
आकर्षण	विकर्षण
उज्ज्वल	धूमिल
निंदा	स्तुति
क्रय	विक्रय

विस्तार से व्याख्या—

- (i) विपरीत अर्थ देने वाले शब्द 'विपरीतार्थक शब्द' कहलाते हैं।
 (ii) तत्सम शब्दों के विपरीत शब्द तत्सम शब्द होते हैं।
 (iii) तद्भव शब्दों के विपरीत शब्द तद्भव शब्द होते हैं।
 (iv) देशज व विदेशी शब्दों के विपरीत देशज व विदेशी होते हैं।
 (v) एकवचन का विलोम शब्द एकवचन और बहुवचन का विलोम शब्द बहुवचन ही होगा।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) विपरीतार्थक शब्दों की जानकारी होना।
 (ii) विलोम शब्द कंठस्थ करना।
 (iii) विपरीतार्थक शब्दों को विलोम शब्द भी कहते हैं।
 (iv) तत्सम व तद्भव शब्दों में अंतर करना।
 (v) देशज व विदेशी शब्दों से परिचित होना।

मूल्यांकन— विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तक में दस शब्द चुनकर उनके विलोम शब्द लिखने के लिए दिए जाएँगे, अगले दिन उत्तरपुस्तिका की जाँच की जाएगी।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. अपेक्षा × उपेक्षा
 सुर × असुर
 विशेष × सामान्य
 कीर्ति × अपकीर्ति
 निरक्षर × साक्षर
 संयोग × वियोग
 राग × द्वेष
 अथ × इति
 उन्नति × अवनति
2. (क) व्यय (ख) वरदान (ग) वाचाल
 (घ) साक्षर (ङ) परोक्ष (च) अनावृष्टि
3. योग — संयोग × वियोग
 अक्षर — निरक्षर × साक्षर
 आयु — दीर्घायु × अल्पायु
 राग — अनुराग × विराग
 पुत्र — कुपुत्र × सुपुत्र
4. (क) स्वच्छ × दूषित (झ) कृत्रिम × स्वाभाविक/प्राकृतिक
 (ख) वियोग × संयोग (ञ) कठोर × कोमल
 (ग) उत्कृष्ट × निकृष्ट (ट) कृतज्ञ × कृतघ्न
 (घ) अनुकूल × प्रतिकूल (ठ) मितव्ययी × अपव्ययी
 (ङ) जीवन × मृत्यु (ड) निरर्थक × सार्थक
 (च) वीर × कायर (ढ) विशेष × सामान्य
 (छ) इच्छा × अनिच्छा (ण) आदर्श × यथार्थ
 (ज) राग × द्वेष (त) उग्र × शांत
5. अनु — अनुराग, अनुगामिनी, अनुरोध, अनुज, अनुकूल
 अ — अयोग्य, अशिक्षित, अज्ञान, अल्पज्ञ, अचर
 नि — निर्यात, निकृष्ट, निष्ठुर, निराशा, निरंकुश
 वि — विरह, वियोग, विलाप, विशाल, विजन
 दुर् — दुर्वचन, दुर्गुण, दुर्गम, दुर्बल, दुर्व्यवहार

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ख) अनेकार्थक शब्द

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— हिंदी भाषा में अनेक ऐसे शब्द हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें ‘अनेकार्थी शब्द’ कहते हैं। अनेकार्थी शब्दों की यह विशेषता होती है कि प्रसंग के अनुकूल उनका अर्थ भी बदल जाता है, जैसे—

- (i) राम के पास अर्थ की कमी नहीं। (धन)
- (ii) अनीता ने मुझे इस कविता का अर्थ समझाया। (मतलब)

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) भाषा ज्ञान का विस्तार करना।
- (ii) अनेकार्थी शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (iii) शब्दों का वाक्य में प्रयोग करना सीखना।
- (iv) प्रसंगानुकूल शब्दों को प्रयुक्त करना।
- (v) शुद्ध भाषा सीखना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्य पुस्तक, अनेकार्थक शब्दों की तालिका, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका अनेक वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे व उनका अर्थ स्पष्ट करेंगे।

- (i) मंदिर उत्तर में बना है। (एक दिशा)
मेरे प्रश्न का उत्तर दो। (जवाब)
- (ii) मेरा कल बहुत अच्छा बीता। (बीता हुआ दिन)
मैं कल बाज़ार जाऊँगी। (आने वाला कल)
- (iii) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। (अक्षर)
श्री कृष्ण श्याम वर्ण के थे। (रंग)

उपरोक्त वाक्यों में प्रसंग के अनुकूल शब्दों के अर्थ बदल गए हैं। जिन शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं, वे ‘अनेकार्थक शब्द’ कहलाते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को अनेकार्थक शब्दों से अवगत कराया जाएगा।

- पानी — कांति, प्रतिष्ठा, जल
- दल — समूह, सेना, पक्ष
- विधि — तरीका, भाग्य, ब्रह्मा
- अलि — कोयल, भँवरा
- तीर — बाण, नदी का किनारा
- कर्ण — कान, कुंती पुत्र
- काल — समय, मृत्यु
- मधु — मदिरा, शहद, वसंत ऋतु

विस्तार से व्याख्या—

- (i) जो शब्द एक से अधिक अर्थ देते हैं, उन्हें 'अनेकार्थक शब्द' कहते हैं।
- (ii) प्रसंग के अनुकूल शब्द का अर्थ बदल जाता है।
- (iii) हिंदी भाषा में अनेक अनेकार्थक शब्द हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) शब्द-कोश का ज्ञान प्राप्त करना।
- (ii) 'अनेकार्थक शब्द' कंठस्थ करना।
- (iii) वाक्य-निर्माण करना।
- (iv) प्रसंगानुकूल शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करने की क्षमता विकसित करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका द्वारा दस अनेकार्थक शब्द लिखकर विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न अर्थों में वाक्य बनाने के लिए दिए जाएंगे।
- (ii) विद्यार्थियों से अनेकार्थक शब्दों की एक तालिका बनवाई जाएगी। सर्वश्रेष्ठ तालिका बनाने वाले तीन विद्यार्थियों का करतल ध्वनि द्वारा उत्साह बढ़ाया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. अंबर — धन (×)
योग — परिणाम (×)
सारंग — सूर्य (×)
तीर — नदी (×)
सूत — बेटा (×)
2. (क) कर्ण (i) कुंतीपुत्र कर्ण परम दानी थे।
(ii) कर्ण छेदन के समय बालिका बहुत रोई।
(ख) घट (i) नदी का जलस्तर घट गया है।
(ii) घट-घट में ईश्वर का निवास होता है।
(ग) द्विज (i) द्विज को दान देना चाहिए।
(ii) पक्षियों को द्विज भी कहा जाता है।
(घ) हरि (i) श्री हरि की कृपा से मेरा जीवन शांतिपूर्ण है।
(ii) वृक्ष की शाखाओं पर हरि-दल उछल-कूद कर रहे थे।
(ङ) काल (i) काल का चक्र अनवरत चलता रहता है।
(ii) श्रवण कुमार को काल ने ग्रस लिया।

3. योग — जोड़, युक्ति
वर्ण — रंग, अक्षर
अर्थ — धन, प्रयोजन
नव — नया, नौ
दल — समूह, पत्ता

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ग) वाक्यांश के लिए एक शब्द

कालांशों की संख्या — एक

सामान्य परिचय— कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो पूरे वाक्यांश को व्यक्त करते हैं। ऐसे शब्दों को ही 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहते हैं। इन्हें 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' नाम से भी जाना जाता है। इसके प्रयोग द्वारा भाषा संक्षिप्त व प्रभावशाली बन जाती है जिससे उसका सौंदर्य बढ़ जाता है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' से अवगत होना।
- (ii) संक्षिप्तता की क्षमता का विकास करना।
- (iii) भाषा को प्रभावशाली बनाना।
- (iv) शब्द-निर्माण में वृद्धि करना।
- (v) वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना सीखना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्य पुस्तक, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर उनका स्पष्टीकरण किया जाएगा।

- (i) गुरु के कथन अनुकरण के योग्य हैं।
- (ii) सुमन कम खाती है।
- (iii) सुधीर तेज बुद्धि वाला विद्यार्थी है।
- (iv) रश्मि दूसरों से ईर्ष्या करती है।
- (v) सुनील किसी का पक्ष नहीं लेता।

रेखांकित शब्दों के स्थान पर क्रमशः 'अनुकरणीय', 'अल्पहारी', 'कुशाग्र बुद्धि', 'ईर्ष्यालु' तथा निष्पक्ष शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से वाक्य अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

शिक्षण प्रणाली— प्रश्नोत्तर व व्याख्यान विधि द्वारा पाठ का विकास किया जाएगा।

अनेक शब्द

जो पहले न पढ़ा गया हो

जिसका कोई अर्थ न हो

जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता हो

एक शब्द

अपठित

निरर्थक

नास्तिक

जिसके आने की तिथि ज्ञात न हो	अतिथि
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
जिसके मन में दया न हो	निर्दयी
जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
सदा रहने वाला	शाश्वत
जहाँ कोई आदमी न रहता हो	निर्जन
जिसका हृदय विशाल हो	उदार

विस्तार से व्याख्या—

- भाषा में संक्षिप्तता व सौंदर्य लाने के लिए वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- भाषा में जब अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- भाषा में संक्षिप्तता लाना।
- भाषा को प्रभावशाली बनाना।
- वाक्य में वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना सीखना।
- भाषा के सौंदर्य में वृद्धि करना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका तालिका में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग कराएँगे। कक्षा में दो समूह में बाँटा जाएगा। सही शब्द बताने वाले समूह को अंक दिए जाएँगे। विजेता समूह का उत्साह बढ़ाया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- (क) मितभाषी → (iii) कम बोलने वाला

(ख) शत्रुघ्न → (i) शत्रु को मारने में सक्षम

(ग) अल्पज्ञ → (iii) जो थोड़ा जानता हो

(घ) अगम्य → (iii) जहाँ पहुँचा न जा सके
- (क) हस्तलिखित (ख) शरणागत (ग) पाक्षिक (घ) दर्शनीय

(ङ) घुमक्कड़ (च) आपबीती
- (क) उपर्युक्त (ख) अजेय (ग) अभूतपूर्व (घ) निरर्थक

(ङ) सच्चरित्र
- (क) निर्लज्ज (ख) दर्शनीय (ग) अवैतनिक (घ) साप्ताहिक

(ङ) अजन्मा (च) दीर्घायु

वर्ग पहेली

चतुरानन – चार मुख वाला।

लाइलाज – जिसका कोई इलाज न हो।

निशाचर – रात में घूमने वाला।

कामचोर – काम से जी चुराने वाला।

अपठित – जो पहले न पढ़ा गया हो।

पाठ योजना

(घ) पर्यायवाची शब्द

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— समान अर्थ देने वाले शब्दों को 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं। इन्हें समानार्थी शब्द भी कहा जाता है। हिंदी भाषा में समान अर्थ वाले अनेक शब्द हैं। भाषा में पूर्ण पर्यायवाची शब्द नहीं होते, उनमें अर्थ की सूक्ष्म विभिन्नता होती है, जिसका ज्ञान वाक्य में प्रयोग करने से होता है। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग वाक्य के भाव व संदर्भ के अनुकूल होता है। प्रत्येक स्थिति में एक ही शब्द के स्थान पर उसके पर्यायवाची शब्द को प्रयुक्त करना अनुचित है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) पर्यायवाची शब्दों की जानकारी प्रदान करना।
- (ii) पर्यायवाची शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने में निपुण बनाना।
- (iii) सरल तरीकों से पर्यायवाची शब्दों को समझने की दक्षता प्राप्त करना।
- (iv) शुद्ध भाषा का अध्ययन करना।
- (v) स्मरण शक्ति बढ़ाना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पर्यायवाची शब्दों की तालिका, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान प्रदान करेंगे।

- | | |
|------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------|
| (i) ईश्वर सबकी रक्षा करे।
प्रभु सबकी रक्षा करे। | (ii) झील का जल स्वच्छ था।
सरोवर का जल स्वच्छ था। |
| (iii) तुम हमेशा उन्नति करो।
तुम हमेशा प्रगति करो। | (iv) युद्ध में अनेक योद्धा मारे गए।
संग्राम में अनेक योद्धा मारे गए। |

उपरोक्त उदाहरणों में क्रमशः 'ईश्वर', 'प्रभु', 'झील', 'सरोवर', 'उन्नति', 'प्रगति' व 'युद्ध', 'संग्राम' समान अर्थ दे रहे हैं। समानार्थी शब्दों को ही पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका द्वारा कुछ पर्यायवाची शब्द लिखकर विद्यार्थियों द्वारा इनसे अवगत कराया जाएगा।

अंधकार	—	तिमिर, तम, अँधेरा
इच्छा	—	अभिलाषा, कामना, आकांक्षा
किनारा	—	तीर, तट, कूल
किरण	—	रश्मि, अंशु, कर
गंगा	—	मंदाकिनी, सुरसरि, जाह्नवी
माता	—	माँ, अंबा, जननी
समुद्र	—	सागर, सिंधु, रत्नाकर

कुछ पर्यायवाची शब्दों में सूक्ष्म अंतर भी होता है। प्रत्येक स्थिति में एक ही शब्द के स्थान पर उसका समानार्थी शब्द प्रयुक्त नहीं हो सकता। 'जल' शब्द का प्रयोग पवित्र जल के लिए किया जाता है। उसकी जगह 'नीर' शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

विस्तार से व्याख्या—

- समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।
- कुछ पर्यायवाची शब्दों में अर्थ की दृष्टि से सूक्ष्म अंतर होता है।
- प्रत्येक शब्द अपना एक विशिष्ट अर्थ रखता है।
- प्रसंग के अनुकूल उचित शब्दों का प्रयोग होता है जिससे भाषा प्रभावशाली बनती है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- पर्यायवाची शब्दों को समझना।
- संदर्भ के अनुकूल शब्दों का चयन करना।
- शब्दों के सूक्ष्म अंतर का ज्ञान प्राप्त करना।
- भाषा के सौंदर्य में वृद्धि करना सीखना।

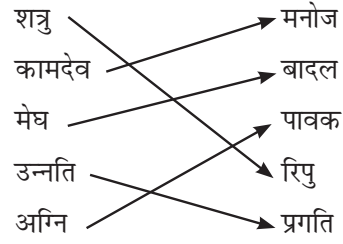
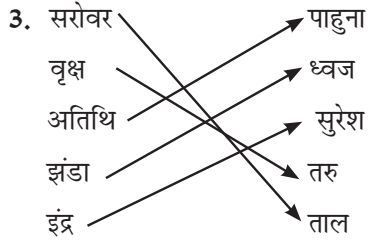
मूल्यांकन—

- विद्यार्थियों को समाचार-पत्र से दस शब्द छाँटकर उनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखने के लिए दिए जाएँगे।
- विद्यार्थियों को एक वर्कशीट दी जाएगी जिसमें सही शब्द का चयन कर रिक्त स्थान की पूर्ति कराई जाएगी। त्रुटि शोधन भी कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- | | | | |
|-----------------|---------------|---------------|-----------|
| 1. (क) जलधि (×) | (ख) अलि (×) | (ग) सुरेश (×) | |
| (घ) सोम (×) | (ङ) सुधा (×) | (च) ध्वज (×) | |
| (छ) असुर (×) | (ज) वसुधा (×) | | |
| 2. (क) चीर | (ख) गर्व | (ग) अश्व | (घ) दशानन |
| (ङ) भवन | (च) आग | (छ) पक्षी | |



4. (क) अमृत-पीयूष, सुधा।
 (ग) तट-किनारा, कूल।
 (ङ) अतिथि-मेहमान, आगंतुक।

- (ख) चाँदनी-ज्योत्स्ना, चंद्रिका।
 (घ) वन-जंगल, कानन।
 (च) तलवार-असि, खड्ग।

वर्ग पहेली

- (क) कमल-जलज, राजीव।
 (ग) सूर्य-रवि, दिनेश।
 (ङ) जल-पानी, वारि।

- (ख) वसंत-ऋतुराज, कुसुमाकर।
 (घ) पत्नी-भार्या, दारा।

पाठ योजना

(ङ) श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय- कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो सुनने में एक समान लगते हैं किंतु अर्थ की दृष्टि से उनमें भिन्नता होती है, ऐसे शब्दों को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं। उच्चारण, वर्तनी व अर्थ से इनकी पहचान होती है।

अधिगम का उद्देश्य-

- श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना।
- शुद्ध उच्चारण करना सीखना।
- वर्तनी की पर्याप्त जानकारी लेना।
- उचित शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
- भाषा-ज्ञान में वृद्धि करना।

अध्यापन सामग्री- सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्य पुस्तक, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि- अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० के माध्यम से श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों की जानकारी देंगे।

- श्री राम के वनवास की अवधि चौदह वर्ष थी।
रामचरित मानस अवधी में लिखी गई है।
- किसी से अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।
तुम मेरी उपेक्षा क्यों कर रहे हो?

(iii) नियत समय पर दोनों मित्र एक-दूसरे से मिले।

समीर ने सुशील से कहा कि तुम मेरी नीयत पर संदेह मत करो।

(iv) तुम्हें तैयारी के लिए मात्र दो दिन मिलेंगे।

मैं मातृ शक्ति को प्रणाम करता हूँ।

उपरोक्त सभी वाक्यों में शब्दों के अर्थ में भिन्नता है। उनके अर्थ क्रमशः इस प्रकार हैं—

(i) अवधि — समय

अवधी — एक बोली

(iii) नियत — तय

नीयत — मंशा

(ii) अपेक्षा — आशा

उपेक्षा — अनादर

(iv) मात्र — केवल

मातृ — माता

शिक्षण प्रणाली— विभिन्न उदाहरणों द्वारा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द सिखाए जाएँगे।

(i) अभय — निडर

उभय — दोनों

(iii) कुल — वंश

कूल — किनारा

(v) नीर — पानी

नीड़ — घोंसला

(vii) चिर — बहुत समय

चीर — वस्त्र

(ii) अवलंब — सहारा

अवलंब — बिना देर किए

(iv) ग्रह — नक्षत्र

गृह — घर

(vi) प्रसाद — कृपा

प्रासाद — महल

(viii) अविराम — लगातार

अभिराम — सुंदर

विस्तार से व्याख्या—

(i) ऐसे शब्द जो सुनने में समान लगते हैं, किंतु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं, उन्हें श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

(ii) शुद्ध उच्चारण व वर्तनी की पहचान से इन शब्दों में कुशलता प्राप्त हो सकती है।

(iii) अशुद्ध उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

(i) शुद्ध उच्चारण करना सीखना।

(ii) हिंदी भाषा की वर्णमाला को कंठस्थ करना।

(iii) स्वर के भेदों की जानकारी प्राप्त करना।

(iv) उच्चारण स्थान के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण सीखना।

(v) अनुस्वार तथा अनुनासिक के नियमों को समझना।

मूल्यांकन— विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तक से कोई पाँच श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द चुनने व उनका अर्थ लिखने के लिए दिए जाएँगे। उत्तरपुस्तिका की जाँचकर सुधार कार्य कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) कोश – शब्द संग्रह
(ख) चर्म – खाल
(ग) तरंग – लहर
(घ) अलि – भौंरा
(ङ) परिणय – विवाह
(च) नीड़ – घोंसला
 2. (क) कोश – छात्रों को शब्द-कोश का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
कोष – सरकार ने राजकीय-कोष से गरीबों की सहायता की।
(ख) प्रणाम – प्रातःकाल माता-पिता को प्रणाम करना चाहिए।
प्रमाण – कैदी ने निर्दोष होने का प्रमाण दिया।
(ग) तरंग – सागर की तरंगें बड़ी मनभावन लगती हैं।
तुरंग – राजकुमार सुसज्जित तुरंग पर सवार होकर नगर-भ्रमण के लिए निकले।
(घ) ओर – शेर जंगल की ओर भाग गया।
और – राधा और मीरा दोनों ने कृष्ण की भक्ति की।
 3. नाग – साँप वदन – मुख
ग्रह – नक्षत्र अन्न – अनाज
घर – गृह दूसरा – अन्य
पर्वत – नग किनारा – कूल
 4. (क) शाम (ख) ग्रह (ग) अवधी
(घ) दूत (ङ) परिणाम (च) नाड़ी
- क्रियाकलाप
छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(च) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— हिंदी भाषा में अनेक शब्द ऐसे हैं जो एक-दूसरे का पर्याय समझ लिए जाते हैं जबकि उनके अर्थ में पर्याप्त अंतर होता है। अनजाने में ही उन्हें एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त कर लिया जाता है।

ऐसे शब्द जो देखने में एक-दूसरे के पर्याय लगते हैं, किंतु उनके अर्थ में पर्याप्त अंतर होता है, ऐसे शब्दों को 'एकार्थक शब्द' कहते हैं। विद्यार्थियों द्वारा इन्हें जानना व संदर्भ के अनुसार इनका प्रयोग करना आवश्यक है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों से अवगत होना।
- (ii) शब्दों के सूक्ष्म अंतर को जानना।
- (iii) प्रसंग के अनुसार शब्दों का प्रयोग करना सीखना।
- (iv) सही अर्थ वाले शब्द का चयन करना।
- (v) शुद्ध भाषा का ज्ञान प्राप्त करना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्यपुस्तक, एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों की तालिका आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर शब्दों को स्पष्ट करेंगे।

- (i) माँ का प्रेम अमूल्य होता है।
यह सोने का कंगन बहुमूल्य है।
- (ii) मेरा आपसे अनुरोध है कि आप कल हमारे घर पधारें।
मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मेरी माता जी को स्वस्थता प्रदान करें।
- (iii) आज आराम करने की इच्छा हो रही है।
मेरी अभिलाषा है कि मैं विदेश जाऊँ।

उपरोक्त तीनों वाक्यों में रेखांकित शब्दों के अर्थ में अंतर है। उनके अर्थ हैं—

- (i) अमूल्य — जिसका मूल्य न लगाया जा सके।
बहुमूल्य — बहुत कीमती।
- (ii) अनुरोध — बराबर वालों से निवेदन करना।
प्रार्थना — ईश्वर या अपने से बड़ों से निवेदन करना।
- (iii) इच्छा — साधारण इच्छा
अभिलाषा — किसी विशेष वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा।

जो शब्द पढ़ने-सुनने में समान हों, पर उनके अर्थ में भिन्नता हो, उन्हें 'एकार्थक शब्द' कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका विभिन्न उदाहरणों द्वारा पाठ का विकास करेंगी।

- (i) अधि — मानसिक रोग
व्याधि — शारीरिक रोग
- (ii) निर्णय — फैसला
न्याय — उचित फैसला
- (iii) अधिक — आवश्यकता से ज़्यादा
पर्याप्त — आवश्यकता अनुसार
- (iv) अपराध — गैर कानूनी काम
पाप — अनैतिक कार्य
- (v) भ्रम — मिथ्या ज्ञान
संदेह — शंका होना

विस्तार से व्याख्या—

- (i) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों में भिन्नता होती है।
- (ii) प्रत्येक शब्द का एक स्वतंत्र अर्थ होता है।
- (iii) प्रत्येक शब्द का प्रयोग अलग-अलग संदर्भ में होता है।
- (iv) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द एक-दूसरे के पर्याय नहीं होते।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों को जानना।
- (ii) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के सूक्ष्म अंतर को समझना।
- (iii) अर्थ व प्रसंग के अनुसार शब्दों का प्रयोग करना।
- (iv) भाषा की जानकारी प्राप्त करना।
- (v) एकार्थक व समानार्थक शब्दों में अंतर करना।

मूल्यांकन—

- (i) विद्यार्थियों को समाचार-पत्र से पाँच-पाँच एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द-युग्म चुनकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करने के लिए दिए जाएँगे।
- (ii) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ एकार्थक शब्द लिखकर विद्यार्थियों के सहयोग से वाक्य-निर्माण कराएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (i) मानसिक रोग (ख) (iii) घमंड का भाव
(ग) (iv) जहाँ पहुँचना कठिन हो (घ) (iv) रोगी की सेवा करना
2. (क) स्नेह (ख) उपहार (ग) गर्व (घ) सुश्रूषा
(ङ) निधन (च) संतोष (छ) ग्रंथ (ज) दुर्गम
3. (क) शिक्षा — वर्तमान शिक्षा पद्धति में तकनीकी ज्ञान को महत्त्व दिया जाता है।
विद्या — प्राचीन युग के ऋषि-मुनि कई विद्याओं में निपुण होते थे।
(ख) आधि — चिंता एक आधि है।
व्याधि — बुखार एक व्याधि है।
(ग) श्रद्धा — स्वामी विवेकानंद के मन में अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के प्रति अपार श्रद्धा थी।
भक्ति — मीरा ने कृष्ण की भक्ति की थी।
(घ) अधिक — मेरे मित्र के पास मुझसे अधिक गाड़ियाँ हैं।
पर्याप्त — इतना भोजन मेरे लिए पर्याप्त है।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या जाति के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के तीन भेद होते हैं— (i) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ii) जातिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा।

जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं— (i) द्रव्यवाचक संज्ञा (ii) समूहवाचक संज्ञा

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान विशेष का बोध कराएँ, उन्हें 'व्यक्ति वाचक' संज्ञा कहते हैं।

जिन संज्ञाओं से किसी प्राणी, स्थान या वस्तु की जाति का पता चलता है— उन्हें 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं।

जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि के गुण, दोष, स्वभाव अथवा अवस्था का बोध होता है, उन्हें 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) संज्ञा का अध्ययन कराना।
- (ii) संज्ञा के विभिन्न भेदों की जानकारी देना।
- (iii) 'संज्ञा' शब्दों की पहचान कराना व वाक्य में प्रयुक्त करना सिखाना।
- (iv) व्यक्तिवाचक संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा में तथा जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
- (v) भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण करने का अभ्यास कराना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, चॉक, डस्टर, श्यामपट्ट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० चलाकर विद्यार्थियों को एक अनुच्छेद दिखाएँगे। उसमें रेखांकित शब्दों के माध्यम से संज्ञा की पहचान सिखाएँगे।

भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, जिसमें दीपावली बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। इस दिन श्री राम चौदह वर्ष का वनवास काटकर अयोध्या वापिस आए थे। उनके आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। उपरोक्त पंक्तियों में 'भारत', 'दीपावली', 'श्री राम', 'अयोध्या' सभी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं। 'त्योहार', 'दीपक', 'घी' जातिवाचक संज्ञाएँ हैं, 'धूमधाम' व 'खुशी' भाववाचक संज्ञाएँ हैं। जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या गुण का बोध होता है, उसे संज्ञा कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली—

प्रथम चरण— अध्यापिका विभिन्न दृष्टान्तों के द्वारा पाठ का विकास करेंगी।

- | | |
|------------------------------------------------------|------------------------------------------------------|
| (i) <u>वाल्मीकि</u> ने <u>रामायण</u> लिखी। | (ii) ' <u>अमिताभ बच्चन</u> ' सुप्रसिद्ध अभिनेता हैं। |
| (iii) ' <u>नरेन्द्र मोदी</u> ' प्रतिभाशाली नेता हैं। | (iv) <u>गोवा</u> में लोग घूमने जाते हैं। |

वाल्मीकि, अमिताभ बच्चन, नरेंद्र मोदी तथा गोवा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं।

जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान विशेष के ज्ञान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

दूसरा चरण—

- (i) हाथी चिंघाड़ रहा है।
- (ii) लड़के खेल रहे हैं।
- (iii) मेरा विद्यालय दूर है।
- (iv) टोकरी में फल रख दो।

‘हाथी’, ‘लड़के’, ‘विद्यालय’, ‘टोकरी’ व ‘फल’ जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

जिन संज्ञा शब्दों में किसी प्राणी, स्थान या वस्तु की संपूर्ण जाति का ज्ञान होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

तीसरा चरण— जातिवाचक के दो उपभेद हैं— (i) समुदायवाचक संज्ञा (ii) द्रव्यवाचक संज्ञा।

- (i) परिवार में सब मिलजुल कर रहते हैं।
- (ii) दूध उबल गया।

‘परिवार’ समुदायवाचक व ‘दूध’ द्रव्यवाचक संज्ञाएँ हैं।

- (i) अपने पांडित्य का प्रदर्शन मत करो।
- (ii) अहंकार व्यक्ति का विनाश कर देता है।
- (iii) शत्रुता को भुलाकर दोनों मित्र गले मिले।

ऊपर लिखे वाक्यों में ‘पांडित्य’, ‘अहंकार’ व ‘शत्रुता’, भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु अथवा पदार्थ के गुण, दोष, दशा, अवस्था का ज्ञान होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

चतुर्थ चरण—

- (i) देश में विभीषणों की कमी नहीं।
- (ii) अध्यापक जी तो बिल्कुल हरिश्चंद्र हैं।

उपरोक्त वाक्यों में व्यक्तिवाचक संज्ञा विभीषण व हरिश्चंद्र का प्रयोग जातिवाचक की तरह किया है।

- (i) गांधी जी के प्रयासों से भारत को स्वतंत्रता मिली।
- (ii) पंडित जी का जन्मदिन बालदिवस के रूप में मनाया जाता है।

यहाँ जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में किया गया है। पंडित शब्द जवाहर लाल नेहरू व गांधी शब्द महात्मा गांधी ने लिए प्रयुक्त हुआ है।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
- (ii) संज्ञा के तीन भेद होते हैं— (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) जातिवाचक संज्ञा (ग) भाववाचक संज्ञा।
- (iii) जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं— (क) द्रव्यवाचक संज्ञा (ख) समुदायवाचक संज्ञा।
- (iv) व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में तथा जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में किया जा सकता है।
- (v) जातिवाचक संज्ञा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया शब्दों तथा अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जा सकता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) ‘संज्ञा’ शब्दों को जानना।
- (ii) व्यक्तिवाचक व जातिवाचक संज्ञा में भेद करना सीखना।

- (iii) भाववाचक संज्ञाओं के निर्माण में निपुण होना।
- (iv) समुदायवाचक व द्रव्यवाचक संज्ञा में अंतर जानना।
- (v) संज्ञा शब्दों का वाक्य में प्रयोग करना।
- (vi) व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में तथा जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा में करने में दक्ष होना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका कुछ संज्ञाएँ श्यामपट्ट पर लिखेंगे। वह विद्यार्थियों से भाववाचक संज्ञाएँ छाँटने के लिए कहेंगे। सही उत्तर देने वाले का उत्साह बढ़ाया जाएगा।
- (ii) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें कुछ शब्द लिखे होंगे। इन शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनानी होंगी। अगले दिन वर्कशीट की जाँच की जाएगी।

उत्तर

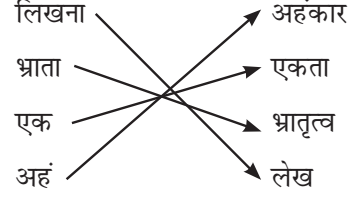
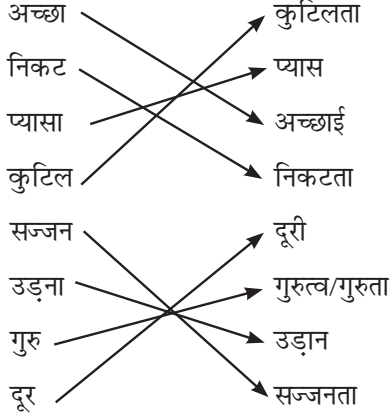
अभ्यास कार्य

1. (क) कहना — कथन
 (ख) मिठाई — मिठास
 (ग) आत्म — आत्मीयता
 (घ) साधु — साधुत्व
 (ङ) हरा — हरियाली
 (च) एक — एकता
 (छ) करना — करनी
 (ज) युवक — यौवन
 (झ) बच्चा — बचपन
2. (क) बचपन — भाववाचक संज्ञा
 (ख) दिल्ली — व्यक्तिवाचक
 (ग) थकावट — भाववाचक संज्ञा
 (घ) सजावट — भाववाचक संज्ञा
 (ङ) वकील — जातिवाचक संज्ञा
 (च) प्रेमचंद — व्यक्तिवाचक संज्ञा
 (छ) सेना — समुदायवाचक संज्ञा
 (ज) दूध — द्रव्यवाचक संज्ञा
 (झ) राजा — जातिवाचक संज्ञा

3.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
सुनीता	स्त्री	स्वास्थ्य
मोहन	विद्यालय	ईमानदारी
रामायण	मोर	स्वत्व
कानपुर	साधु	साहस
लखनऊ	चित्र	कायरता
गंगा	बालक	निकटता

4.



5. दीपावली — व्यक्तिवाचक संज्ञा
 प्रकाश — भाववाचक संज्ञा
 आनंद — भाववाचक संज्ञा
 पर्व — जातिवाचक संज्ञा
 घरों — जातिवाचक संज्ञा
 मिठाइयाँ — जातिवाचक संज्ञा
 पकवान — जातिवाचक संज्ञा
 लक्ष्मी — व्यक्तिवाचक संज्ञा
 गणेश — व्यक्तिवाचक संज्ञा
 बच्चे — जातिवाचक संज्ञा
 फुलझड़ियाँ — जातिवाचक संज्ञा
 पटाखे — जातिवाचक संज्ञा

6. (क) बुढ़ापे (ख) आलस्य (ग) साहस (घ) मिठास
 (ङ) स्पष्टता (च) महत्त्व

7. (क) आज भी देश में जयचंदों की कमी नहीं है।
 (ख) रावणों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।
 (ग) आज के अर्जुन मोबाइल फोन में व्यस्त हैं।
 (घ) तुम तो एकलव्य हो, तुम्हारे लिए सब संभव है।
 (ङ) भारत तो सीता-सावित्री का देश है।
8. (क) नेहरू जी देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
 (ख) शास्त्री जी ने जय-जवान जय-किसान का नारा लगाया।
 (ग) पटेल को 'लौह पुरुष' कहा जाता है।
 (घ) महात्मा जी हमारे राष्ट्रपिता हैं।
 (ङ) नेताजी ने 'आज़ाद हिंद फौज' का संगठन किया।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(क) लिंग

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— स्त्री या पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को लिंग कहते हैं। लिंग के दो भेद होते हैं—

(i) पुल्लिंग (ii) स्त्रीलिंग।

पुरुष जाति का ज्ञान कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं।

स्त्री जाति का ज्ञान कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

हिंदी भाषा में कुछ शब्दों के लिंग नित्य पुल्लिंग या नित्य स्त्रीलिंग भी होते हैं।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं, ऐसे शब्दों को उभयलिंगी शब्द कहते हैं।

अधिगम का उद्देश्य—

- स्त्रीलिंग व पुल्लिंग शब्दों से परिचित होना।
- लिंग परिवर्तन में दक्षता प्राप्त करना।
- नित्य पुल्लिंग व नित्य स्त्रीलिंग शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना।
- उभयलिंगी शब्दों की जानकारी देना।
- लिंग परिवर्तन नियमों की जानकारी प्राप्त करना।

अध्यापन सामग्री— चॉक, डस्टर, श्यामपट्ट, सी०डी०, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— सी०डी० द्वारा कुछ शब्द दिखाकर उनसे संबंधित प्रश्न विद्यार्थियों से पूछे जाएँगे।

(i) साध्वी	स्त्रीलिंग
(ii) सम्राट	पुल्लिंग
(iii) सावन	नित्य पुल्लिंग
(iv) हिंदी	नित्य स्त्रीलिंग
(v) कान	नित्य पुल्लिंग
(vi) एकादशी	नित्य स्त्रीलिंग
(vii) राष्ट्रपति	उभयलिंगी
(viii) आयुष्मती	स्त्रीलिंग
(ix) सेना	नित्य स्त्रीलिंग
(x) खिलाड़ी	उभयलिंगी

जिन शब्दों से स्त्री जाति या पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें लिंग कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका द्वारा लिंग परिवर्तन के नियम समझाए जाएँगे।

प्रथम चरण—

‘अ’, ‘आ’ अंत वाले शब्दों के अंत में ‘ई’ प्रत्यय लगाकर—

बेटा — बेटी बकरा — बकरी

‘ई’ अंत वाले शब्दों के अंत में ‘इन’ प्रत्यय लगाकर—

कुम्हार — कुम्हारिन माली — मालिन

शब्द के अंत में ‘अ’ आने पर ‘आनी’ प्रत्यय लगाकर—

जेठ — जेठानी ठाकुर — ठाकुरानी

दूसरा चरण—

(i) शब्द के अंत में ‘अक’ आने पर उसका ‘इका’ कर दिया जाता है।

शिक्षक — शिक्षिका प्रशासक — प्रशासिका

(ii) ‘अ’, ‘आ’ के स्थान पर ‘इया’ प्रत्यय लगाकर—

बेटा — बिटिया बंदर — बंदरिया

(iii) ‘अ’, ‘ई’ शब्द के अंत में आने पर ‘इनी’ लगाने से—

तपस्वी — तपस्विनी स्वामी — स्वामिनी

तीसरा चरण— सैर, जेठ, रविवार, मूँग, संतरा, अशोक, हिमालय, लोहा आदि नित्य पुल्लिंग शब्द होते हैं।

(i) सुहागिन, सरकार, अमावस्या, अरबी, देवनागरी, नदी आदि नित्य स्त्रीलिंग शब्द होते हैं।

(ii) तैराक, क्लर्क, डॉक्टर, प्रधानमंत्री, मैनेजर आदि उभयलिंगी शब्द हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) पुरुष या स्त्री जाति का ज्ञान कराने वाले शब्दों को 'लिंग' कहते हैं।
- (ii) लिंग के दो भेद होते हैं— स्त्रीलिंग और पुल्लिंग।
- (iii) जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।
- (iv) जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
- (v) हिंदी भाषा में कुछ शब्द नित्य पुल्लिंग व कुछ नित्य स्त्रीलिंग होते हैं।
- (vi) भारतीय महीने, दिन, पर्वत, वृक्ष, ग्रह, धातु, समुद्र, शरीर के कुछ अंगों के नाम, अनाज, कुछ फल, रत्नों के नाम पुल्लिंग में होते हैं।
- (vii) तिथियों, भाषाओं, लिपियों, नदियों, झीलों, कुछ समूहवाचक शब्दों तथा कुछ प्राणीवाचक शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिंग में होता है।
- (viii) कुछ शब्द मूलतः स्त्रीलिंग होते हैं। उनसे पुल्लिंग युग्म रूप में बन जाते हैं, जैसे—
बहन — बहनोई जीजी — जीजा आदि।
- (ix) स्त्री एवं पुरुष दोनों जातियों का ज्ञान कराने वाले शब्द 'उभयलिंगी' कहलाते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) लिंग व उसके भेदों की जानकारी।
- (ii) लिंग परिवर्तन के नियमों को सीखना।
- (iii) नित्य स्त्रीलिंग व नित्य पुल्लिंग शब्दों से अवगत होना।
- (iv) उभयलिंगी शब्दों की जानकारी प्राप्त करना।
- (v) लिंग परिवर्तन का अभ्यास करना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को एक वर्कशीट दी जाएगी जिसमें उन्हें कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग तथा कोई भी पाँच-पाँच नित्य पुल्लिंग व नित्य स्त्रीलिंग लिखने होंगे। अगले दिन कार्य की जाँच की जाएगी।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) पुल्लिंग (ख) उभयलिंगी (ग) नित्य स्त्रीलिंग (घ) स्त्रीलिंग
(ङ) उभयलिंगी
2. (क) पंडित — पंडिताइन
(ख) साधु — साध्वी
(ग) मुगल — मुगलानी
(घ) सिंह — सिंहनी
(ङ) हाथी — हथिनी
(च) स्वामी — स्वामिनी

3. (क) गृहस्वामिनी (ख) रानी (ग) युवतियों (घ) सिंहनी
(ङ) नायिका (च) अध्यापिका
4. (क) मालिन (ख) नौकर (ग) कवि (घ) मोर
(ङ) भाई (च) धोबिन (छ) वीरांगना (ज) कवयित्री
5. (क) सुप्रिया का नौकर अच्छा है।
(ख) मेरे पड़ोस में रहने वाली बुढ़िया बीमार है।
(ग) उसकी पाँच बेटियाँ हैं।
(घ) विदुषी महिलाओं का सब जगह सम्मान होता है।
(ङ) खीर-पूड़ी देखकर पंडिताइन के मुँह में पानी भर आया।
(च) अच्छी लड़की वह है, जो समय पर काम करे।

6.	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
	केला, बचपन, हाथ, अगस्त, आचार्य	कृपा, मृत्यु, महिमा, सभ्यता, सभा

7.	‘आनी’ प्रत्यय से निर्मित स्त्रीलिंग शब्द	‘इन’ प्रत्यय से निर्मित स्त्रीलिंग शब्द
	नौकरानी	तेलिन
	देवरानी	धोबिन
	सेठानी	मालिन
	मुगलानी	पड़ोसिन
	मेहतरानी	ग्वालिन

8. वर — वधू
पंडित — पंडिताइन
कहार — कहारिन
इंद्र — इंद्राणी
विधुर — विधवा
भवदीय — भवदीया
श्रीमान — श्रीमती
सेठ — सेठानी

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ख) वचन

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो भेद होते हैं— एकवचन और बहुवचन।

शब्द के जिस रूप से एक ही प्राणी या वस्तु का ज्ञान होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

शब्द के जिस रूप से अनेक प्राणियों या वस्तुओं का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते हैं। वचन परिवर्तन के कुछ नियम हैं। वचन संबंधी कुछ विशेष बातें ध्यान देने योग्य हैं। बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग तथा अपना बड़प्पन प्रकट करने के लिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जातिवाचक, भाववाचक व द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग हमेशा एकवचन में होता है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) वचन से अवगत होना।
- (ii) वचन के भेदों को पहचानना।
- (iii) वचन परिवर्तन के नियमों को समझना।
- (iv) व्यक्तिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक संज्ञाओं की पहचान करना।
- (v) वचन को वाक्य में प्रयुक्त करने का अभ्यास करना सीखना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्यपुस्तक, वचन तालिका, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- (i) लड़कियाँ विद्यालय जा रही हैं।
- (ii) उपवन में लोग योगाभ्यास कर रहे हैं।
- (iii) माता जी खाना बना रहीं हैं।
- (iv) बच्चे गली में खेल रहे हैं।
- (v) घड़ी बंद हो गयी है।

उपरोक्त उदाहरणों में ‘लड़कियाँ’, ‘लोग’ तथा ‘बच्चे’ बहुवचन की संज्ञाएँ हैं। ‘माताजी’ तथा ‘घड़ी’, एकवचन की संज्ञाएँ हैं।

शब्द के जिस रूप से उसके अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

विद्यार्थियों की सहभागिता से पाठ का विकास किया जाएगा।

शिक्षण प्रणाली—

प्रथम चरण— एकवचन व बहुवचन की सूची विद्यार्थियों को दिखाई जाएगी।

- (i) भाई खेल रहा है।
- (ii) तोता आम खा रहा है।

रेखांकित शब्द एक प्राणी का ज्ञान करा रहे हैं, ये एकवचन संज्ञाएँ हैं।

- (i) पक्षी उड़ रहे हैं।
- (ii) बहिन कपड़े धो रही है।

रेखांकित शब्द अनेक प्राणियों या वस्तुओं का बोध करा रहे हैं, अतः ये बहुवचन संज्ञाएँ हैं।

दूसरा चरण—

- (i) पिता जी अभी-अभी आए हैं।
- (ii) आज प्रधानमंत्री संदेश देंगे।
- (iii) हमें एक ईमानदार नेता चाहिए।
सम्मान प्रकट करने व बड़प्पन प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
- (iv) उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।
'आँसू', 'प्राण', 'बाल', 'हस्ताक्षर' आदि का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।

तीसरा चरण— आकाश में बादल छा गए।

जनता ने आंदोलन किया।

'आकाश', 'जनता', 'पानी', 'वर्षा', 'प्रजा', आदि सदैव एकवचन में होते हैं।

समूहवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक व द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग हमेशा एकवचन में होता है।

- (i) भीड़ पर नियंत्रण करना कठिन हो गया।
- (ii) दूध में मिलावट नहीं है।

चतुर्थ चरण— वचन परिवर्तन के नियम—

- (i) 'आ' का 'ऐ'— रूपया-रूपए
- (ii) 'अ' 'या' 'आ' का 'ऐ'— सड़क-सड़कें
- (iii) 'इ', 'ई' का 'इयाँ' करने पर— रीति-रीतियाँ
- (iv) 'उ', 'ऊ', 'औ' का 'एँ'— वधू-वधुएँ
- (v) 'या' को 'याँ' करने पर— बुढ़िया-बुढ़ियाँ
- (vi) 'गण', 'जन', 'वर्ग' लगाकर— मित्र-मित्रगण

विस्तार से व्याख्या—

- (i) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का ज्ञान होता है, उसे वचन कहते हैं।
- (ii) हिंदी भाषा में वचन के दो प्रकार हैं— एकवचन तथा बहुवचन।
- (iii) शब्द के जिस रूप से एक ही प्राणी अथवा वस्तु का ज्ञान होता है, उसे एकवचन कहते हैं।
- (iv) शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।
- (v) अपने से बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
- (vi) कुछ संज्ञा शब्द हमेशा एकवचन व कुछ संज्ञा शब्द हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
- (vii) वचन परिवर्तन के कुछ नियम हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) वचन व उसके भेदों को जानना।
- (ii) वचन-परिवर्तन के नियमों को सीखना।
- (iii) वचन-परिवर्तन का अभ्यास करना।
- (iv) ऐसी संज्ञाओं को जानना जिनका प्रयोग एकवचन या बहुवचन में हमेशा होता है।
- (v) संज्ञा के तीन भेदों— व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक से परिचित होना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तक में से दस ऐसे शब्द चयन करने के लिए देंगे जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है।
- (ii) दस ऐसे शब्द लिखाए जाएँगे जिनमें 'जन', 'गण', 'वृंद', 'लोग' आदि जोड़कर वचन परिवर्तन करना होगा।
- अभ्यास कार्य की जाँच की जाएगी व त्रुटिशोधन कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) बेटा — बेटे
(ख) नौका — नौकाएँ
(ग) वस्तु — वस्तुएँ
(घ) युवा — युवावर्ग
2. रात — रातें
बुढ़िया — बुढ़ियाँ
डिब्बा — डिब्बे
बेटा — बेटे
वस्तु — वस्तुएँ
- युवा — युवावर्ग
बहू — बहूएँ
नारी — नारियाँ
कविता — कविताएँ
छात्र — छात्रगण

3.	एकवचन	बहुवचन
	जाति	मित्रगण
	ऋतु	गौएँ
	विद्वान	घोड़े
	पंक्ति	वस्तुएँ
	गुरु	नदियाँ

4. (क) सहायता (ख) अपने (ग) बच्चे (घ) हवाईयाँ
(ङ) घटनाएँ
5. (क) यह विशेषता कवि निराला में देखी गई।
(ख) किरन ने साड़ियाँ खरीदीं।
(ग) धीरे-धीरे मेरा उन लोगों से परिचय हुआ।
(घ) ब्राह्मण ने यजमान को आशीर्वाद दिया।
(ङ) एक क्षण में खिड़की का काँच टूट चुका था।
(च) ममता ने प्रश्नों के उत्तर लिखे।
(छ) मेरे पिता जी बाज़ार से पुस्तकें लाए।

6. याँ	एँ	ए
लड़कियाँ	नौकाएँ	बेटे
खिड़कियाँ	कन्याएँ	केले

7. कई बालक बगीचे में उदास बैठे थे। उसी समय दूसरी ओर से उसके मित्रगण आए। उनके हाथों में गेंद और बल्ले थे। वे उन्हें देखकर प्रसन्न हो उठे। तुरंत कूदकर उनके पास गए और उनके साथ खेलने लगे।

8. लोग आँसू
दर्शन हस्ताक्षर

9. (क) सत्यप्रकाश का बेटा आया है।
(ख) यमराज ने नचिकेता को तीन वरदान दिए।
(ग) यह सड़क मेरे घर तक जाती है।
(घ) वे लोग आ रहे हैं।
(ङ) यहाँ देवताओं की पूजा होती है।
(च) उन छात्रों ने परीक्षा नहीं दी।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ग) कारक

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे उसका संबंध क्रिया तथा दूसरों शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। कारक के आठ भेद हैं—

कारक	विभक्ति चिह्न
(i) कर्ता कारक	ने, से, को, के द्वारा शून्य
(ii) कर्म कारक	को शून्य
(iii) करण कारक	से, के द्वारा, के साथ
(iv) संप्रदान कारक	के लिए, को
(v) अपादान कारक	से (अलग होना)
(vi) संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री
(vii) अधिकरण कारक	में, पर
(viii) संबोधन कारक	हे, अरे

विभक्ति चिह्न को 'परसर्ग' भी कहते हैं।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) कारक को जानना।
- (ii) कारकों की विभक्ति से परिचित होना।
- (iii) कारकों के नियमों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (iv) वाक्य में उचित जगह पर उचित कारक का प्रयोग करना।
- (v) विकारी शब्दों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर उनको स्पष्ट किया जाएगा।

- (i) रीना ने राजीव को पत्र लिखा।
- (ii) माँ ने रमेश को बुलाया।
- (iii) मैं कार से बाज़ार जाऊँगा।
- (iv) भिखारी को भोजन दो।
- (v) वह मेज़ से गिर गया।

पहले वाक्य में कर्ता, दूसरे में कर्म, तीसरे में करण, चौथे में संप्रदान व पाँचवें में अपादान कारक है।

वाक्य में प्रयोग किए गए संज्ञा व सर्वनाम के साथ क्रिया के संबंध को 'कारक' कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— कारक के सभी भेदों को उदाहरणों द्वारा समझाया जाएगा।

प्रथम चरण—

- (i) सुनीता ने गीत गाया।
- (ii) सौरभ विदेश जाने की तैयारी कर रहा है।

पहले वाक्य में कर्ता कारक का चिह्न है। दूसरे में नहीं है। उसमें 'ने' शून्य है। परसर्ग सहित क्रिया हमेशा सकर्मक व भूतकाल में होती है जबकि परसर्ग रहित क्रिया अकर्मक व भूतकाल में होती है।

वाक्य में क्रिया करने वाली संज्ञा या सर्वनाम पद को 'कर्ता' कहते हैं।

- (i) पिता ने पुत्र को बिठाया।
- (ii) राजेश ने पुस्तक पढ़ ली।

प्रथम वाक्य में परसर्ग कर्म के साथ है और दूसरे वाक्य में परसर्ग रहित कर्म है। अप्राणिवाचक कर्म के साथ कारक चिह्न नहीं लगता। प्राणिवाचक कर्म के साथ कारक-चिह्न का प्रयोग होता है।

दूसरा चरण—

- (i) रीना साइकिल से विद्यालय जाती है।
- (ii) रावण राम से मारा गया।

इन वाक्यों में 'से' परसर्ग है। जाने व मारने का साधन साइकिल व राम हैं। अतः यहाँ करण कारक है।

वाक्य में जिस साधन से क्रिया के होने का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं।

- (i) राम को पुस्तक दे दो।
- (ii) यह यज्ञ के लिए स्थान है।

वाक्य में जब किसी को कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है, वहाँ संप्रदान कारक का प्रयोग होता है।

तीसरा चरण—

(i) चोर गाड़ी से कूद गया।

(ii) वह गाँव से शहर चला गया।

उपरोक्त वाक्यों में 'गाड़ी से', 'गाँव से' अलग होने के भाव हैं, अतः यहाँ अपादान कारक है। इसके अतिरिक्त भय, ईर्ष्या, घृणा, सीखना, तुलना, लजाना का भाव जिन शब्दों में होता है, वहाँ भी अपादान कारक होता है।

(i) यह मेरी गाड़ी है।

(ii) राजीव की घड़ी गिर गई।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द संबंध का ज्ञान करा रहे हैं, अतः यहाँ संबंध कारक है।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका दूसरी संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध का बोध होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं।

चतुर्थ चरण—

(i) पुस्तक मेज़ पर रखी है।

(ii) उपवन में फूल खिले हैं।

उपरोक्त उदाहरणों में अधिकरण कारक के चिह्न हैं। अतः यहाँ अधिकरण कारक है। अधिकरण कारक में संज्ञा या सर्वनाम क्रिया के होने का स्थान व समय बताते हैं। इसके अतिरिक्त समय बताने व समूह से तुलना करने पर भी अधिकरण कारक होता है।

(i) हे बच्चो! यहाँ आ जाओ।

(ii) भाइयो! बैठ जाओ।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'बच्चों' व 'भाइयों' को संबोधित किया गया है। इसका कोई कारक चिह्न नहीं होता।

जिन संज्ञा शब्दों से किसी को पुकारने या बुलाने का बोध हो, वहाँ संबंध कारक होता है।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ पता चलता है, उसे कारक कहते हैं।
- (ii) कारक के आठ भेद हैं— कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक तथा अधिकरण कारक।
- (iii) कारकीय चिह्नों को विभक्ति चिह्न व परसर्ग भी कहा जाता है।
- (iv) वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं।
- (v) संज्ञा या सर्वनाम के जिस पद पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, वह कर्मकारक कहलाता है।
- (vi) क्रिया करने का साधन करणकारक कहा जाता है।
- (vii) वाक्य में कर्ता जिसके लिए कुछ करता है या जिसे कुछ देता है, वहाँ संप्रदान कारक होता है।
- (viii) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से पृथक् होने का भाव व्यक्त होता है, वहाँ अपादान कारक होता है। भय, तुलना, सीखना, लजाना व घृणा के भाव की अभिव्यक्ति में भी अपादान कारक होता है।
- (ix) संज्ञा या सर्वनाम के जो रूप क्रिया होने के स्थान व समय का ज्ञान कराते हैं, वहाँ अधिकरण कारक होता है।
- (x) संज्ञा व सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारने या बुलाने का पता चले, वहाँ संबोधन कारक होता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) 'कारक' विषय की जानकारी प्राप्त करना।
- (ii) कारक के प्रकारों में भेद करना सीखना।
- (iii) कारक के विभक्ति चिह्नों की पहचान करना।
- (iv) कर्मकारक और संप्रदान कारक में अंतर करना।
- (v) करणकारक व अपादान कारक में अंतर करना सीखना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखेंगे। विद्यार्थियों द्वारा उनमें से कारक छाँटकर उनका भेद बताने के लिए कहेंगे।
- (ii) विद्यार्थी सभी कारकों के विभक्ति चिह्नों का प्रयोग कर दो-दो वाक्य गृहकार्य में लिखने के लिए देंगे। अगले दिन उत्तरपुस्तिका की जाँच की जाएगी।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (ii) जिसके लिए क्रिया संपन्न की जाए।
(ख) (i) जिससे संज्ञा के आधार का ज्ञान हो।
(ग) (ii) जिससे दूसरी वस्तु से अलग होने का ज्ञान हो।
(घ) (iii) जिस पर क्रिया का फल पड़े।
2. (क) कर्ता कारक (ख) अधिकरण कारक
(ग) संप्रदान कारक (घ) संप्रदान कारक
(ङ) संबंध कारक (च) संप्रदान कारक
3. की, में, से, पर, में, पर, ने, में, का
4. (क) अपादान (ख) कर्म
(ग) संबंध (घ) करण
(ङ) संबोधन (च) संप्रदान
5. मनुष्य ने बहुत प्रगति कर ली है। ऊँची इमारतों, विशाल पुल, मेट्रो रेल आदि को देखकर अच्छा लगता है। इस प्रगति से पशु-पक्षियों की दुनिया में भयंकर समस्याएँ आ गई हैं। लाखों की संख्या में पेड़ काट दिए गए हैं और इससे पक्षियों का बसेरा उजड़ गया है। हमें सोचना चाहिए कि पेड़ों पर रहने वाले पक्षी व वनों में रहने वाले पशु समाप्त हो गए, तो खाद्य-शृंखला टूट जाएगी तथा मनुष्य का जीवन खतरे में पड़ जाएगा।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। संज्ञा की भाँति सर्वनाम भी विकारी शब्द हैं क्योंकि वचन, लिंग व कारक के कारण इनका रूप बदल जाता है। सर्वनाम के छह भेद हैं— (i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम (v) संबंधवाचक सर्वनाम (vi) निजवाचक सर्वनाम।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) सर्वनाम शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (ii) सर्वनाम के सभी भेदों की जानकारी प्राप्त करना।
- (iii) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीनों उपभेदों— (क) उत्तम पुरुष वाचक (ख) मध्यम पुरुष वाचक व (ग) अन्य पुरुष वाचक से परिचित होना।
- (iv) सर्वनाम का वाक्य में प्रयोग करना सीखना।
- (v) अनुच्छेद में सर्वनाम को छोटने की क्षमता का विकास करना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, सी०डी०, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे। विद्यार्थियों की सहभागिता से 'सर्वनाम' शब्दों का चयन किया जाएगा।

- | | |
|------------------------------------------------|-----------------------------------|
| (i) <u>तुम</u> घर के अंदर जाओ। | (ii) <u>यह</u> पुस्तक फटी हुई है। |
| (iii) <u>कोई</u> आया है। | (iv) <u>आप</u> कहाँ से आए हैं? |
| (v) <u>जो</u> जैसा करेगा <u>वो</u> वैसा भरेगा। | (vi) <u>मैं</u> खुद चला जाऊँगा। |

रेखांकित शब्द 'सर्वनाम' हैं।

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका सी०डी० दिखाएँगी। बच्चों के सहयोग से पाठ का विकास करेंगी।

प्रथम चरण—

- | | |
|------------------------------------|-------------------------------------|
| (i) <u>मैं</u> भोजन बना रही हूँ। | (ii) <u>हम</u> परसों आपके घर आएँगे। |
| (iii) <u>तुम</u> कहाँ से आ रही हो? | (iv) <u>वह</u> बुद्धिमान है। |

ऊपर लिखे वाक्यों में 'मैं', 'हम' उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम, 'तुम' मध्यम वाचक सर्वनाम तथा 'वह' अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम हैं—

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता, श्रोता, और किसी अन्य के लिए किया जाता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसके तीन भेद हैं— उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष।

- | | |
|---------------------------|----------------------------------|
| (i) <u>यह</u> मेरा घर है। | (ii) <u>वे</u> मेरे अध्यापक हैं। |
|---------------------------|----------------------------------|

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत किया जाता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

दूसरा चरण—

(i) द्वार के पास कोई खड़ा है।

(ii) दाल में कुछ काला है।

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, घटना का ज्ञान नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(i) जैसा कर्म वैसा फल

(ii) जो परिश्रम करेगा वह सफल होगा।

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी अन्य उपवाक्य में प्रयोग में लाए गए संज्ञा या सर्वनाम से संबंध प्रकट होता है, वे संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

तीसरा चरण—

(i) मैं स्वयं घर चला जाऊँगा।

(ii) मैं खुद खाना बना लूँगा।

जो सर्वनाम शब्द कर्ता स्वयं के लिए प्रयोग में लाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(i) टोकरी में क्या है?

(ii) कौन शोर मचा रहा है?

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।
- (ii) सर्वनाम के छह प्रकार होते हैं— (क) पुरुषवाचक सर्वनाम, (ख) निश्चयवाचक सर्वनाम, (ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, (घ) संबंधवाचक सर्वनाम, (ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा (च) निजवाचक सर्वनाम।
- (iii) जिन सर्वनाम शब्दों से बोलने वाले, सुनने वाले या अन्य किसी के विषय में पता चलता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- (iv) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता या श्रोता स्वयं के लिए करता है, वे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं।
- (v) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाले, सुनने वाले के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- (vi) जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला, लिखने वाला किसी अन्य के लिए करता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- (vii) किसी पास या दूर रहने वाले व्यक्ति, वस्तु, जगह की ओर संकेत करने वाले सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
- (viii) अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग किए गए सर्वनामों को अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- (ix) जिन सर्वनामों की सहायता से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के विषय में प्रश्न किया जाता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
- (x) जिन सर्वनाम शब्दों से प्रधान वाक्य व आश्रित वाक्य के संबंध का बोध होता है, उन्हें संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं।
- (xi) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) सर्वनाम से परिचित होना।
- (ii) सर्वनाम के सभी भेदों को समझना।
- (iii) उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष व अन्य पुरुष का अंतर जानना।
- (iv) निश्चय व अनिश्चय वाचक सर्वनामों से अवगत होना।
- (v) सर्वनाम का वाक्य में प्रयोग करना सीखना।
- (vi) सर्वनाम को छाँटने का अभ्यास कर उसके भेदों को कंठस्थ करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें लिखे गए वाक्यों में सर्वनाम छाँटकर उसके भेदों के नाम लिखने होंगे।
- (ii) रिक्त स्थान की पूर्ति उचित सर्वनामों का प्रयोग कर कराई जाएगी।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (ii) निजवाचक
(ख) (iii) अन्य पुरुषवाचक
(ग) (i) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(घ) (iii) निश्चयवाचक सर्वनाम
2. (क) आप — मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
(ख) वे — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
(ग) स्वयं — निजवाचक सर्वनाम
(घ) किसमें — निश्चयवाचक सर्वनाम
(ङ) तुम्हारी — (सार्वनामिक विशेषण)
3. (क) तुम्हारी (ख) किसके (ग) आपका (घ) उसने
(ङ) जैसा
4. (क) महेश अपनी बहन के साथ आगरा जाएगा।
(ख) उर्मिला जल्दी-जल्दी उठी और उसने घर की सफाई की।
(ग) जगदीश ने रमेश के घर जाकर उसको पुस्तक दी।
(घ) अब्दुल ने ध्यान नहीं दिया और वह फिसलकर गिर गया।
(ङ) पिता ने महेश से पूछा, “तुम हर दूसरे दिन छुट्टी क्यों लेते हो?”
(च) अध्यापिका ने छात्र से उसकी जगह पर बैठने को कहा।

- (छ) रमेश लंबा है इसलिए वह झुककर चलता है।
 (ज) राम ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उसे क्षमा कर दें।
 (झ) दही में कुछ पड़ा है, अतः इसे ले जाइए।
 (ञ) बंदर ने मगरमच्छ से कहा, “तुम अपने मित्र को यहाँ ले आओ।”
 (ट) मोहित ने मित्र से कहा, “मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।”

5. शब्द	कारक	एकवचन	बहुवचन
वह	(i) कर्म (ii) अधिकरण	उसे, उसको उसमें, उस पर	उन्हें, उनको, उन लोगों को उनमें, उनपर, उन लोगों में, उन लोगों पर
मैं	(i) कर्ता (ii) संबंध	मैं, मैंने मेरा, मेरी, मेरे	हम, हमने, हम लोग, हम लोगों ने हमारा, हमारी, हमारे
जो	(i) संप्रदान	जिसके लिए, जिसको	जिनके लिए, जिनको, जिन लोगों के लिए
तू	(i) करण (i) अपादान	तुझसे, तेरे द्वारा तुझसे	तुमसे, तुम्हारे द्वारा, तुम लोगों से तुमसे, तुम लोगों से
यह	(ii) अधिकरण	इसमें, इस पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

6. (क) मुझे आज जाना है।
 (ख) तुम्हारा मुझसे क्या वास्ता है?
 (ग) उनकी माता जी आगरा में रहती हैं।
 (घ) इस बात का पता किसी को नहीं लगना चाहिए।
 (ङ) तुम्हें प्रधानाचार्य ने बुलाया है।
 (च) जिस आदमी ने यह बात कही है, वह झूठा है।
 (छ) मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना।
 (ज) जिसने परिश्रम किया, वही उत्तीर्ण हुआ।
 (झ) मुझसे तो चला भी नहीं जाता।
 (ञ) तुम अपने घर कब आओगे?

7. (क) मेरे (ख) जिसे (ग) उससे (घ) मुझे
 (ङ) कोई (च) वह

8. (ग) छह

9. मध्यम पुरुष में ‘आप’ शब्द का प्रयोग आदर और सम्मान देने के लिए बहुवचन में किया जाता है। जैसे—आप कब आए? क्या आप हमारे घर आएँगे? आदि।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें ‘विशेषण’ कहते हैं।

जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे ‘विशेष्य’ कहते हैं।

विशेषण के चार भेद हैं—

- | | |
|-------------------------|------------------------|
| (i) गुणवाचक विशेषण | (ii) परिमाणवाचक विशेषण |
| (iii) संख्यावाचक विशेषण | (iv) सार्वनामिक विशेषण |

जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें ‘प्रविशेषण’ कहते हैं।

हिंदी भाषा में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्ययों से विशेषणों की रचना की जाती है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) ‘विशेषण’ का ज्ञान प्राप्त करना।
- (ii) ‘विशेषण’ के भेदों को जानना।
- (iii) ‘विशेषण’ व ‘विशेष्य’ में अंतर करना।
- (iv) ‘प्रविशेषण’ की पहचान करना।
- (v) विशेषण शब्दों के निर्माण में दक्षता प्राप्त करना।
- (vi) सर्वनाम व सार्वनामिक विशेषण का अंतर समझना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों के सहयोग से विशेषण पाठ का विकास किया जाएगा।

- | | |
|-----------------------------------------|----------------------------------------------|
| (i) तुमने <u>सुंदर</u> पेंटिंग बनाई है। | (ii) रीना <u>बारहवीं</u> कक्षा में पढ़ती है। |
| (iii) एक <u>किलो</u> टमाटर ले आना। | (iv) <u>यह</u> घर मेरा है। |

उपर्युक्त वाक्यों में ‘सुंदर’, ‘बारहवीं’, ‘एक किलो’ तथा ‘यह’ विशेषण है।

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली—

प्रथम चरण— विशेषण के चार भेद हैं— (i) गुणवाचक, (ii) संख्यावाचक, (iii) परिमाणवाचक तथा (iv) सार्वनामिक।

- | | |
|--------------------------------|----------------------------------|
| (i) सुधीर <u>ईमानदार</u> है। | (ii) मुझे <u>बड़ी</u> कार चाहिए। |
| (iii) मेरा घर <u>सुंदर</u> है। | |

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द विशेष्य के गुण, आकार, रंग व दशा का ज्ञान करा रहे हैं। जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार आदि के विषय में बताएँ, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(i) दो किलो प्याज ले आओ।

(ii) कुछ फल मेरे लिए भी ले आना।

‘दो किलो’, ‘कुछ’ शब्द संज्ञा के नाप-तौल को बता रहे हैं। जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण या माप-तौल के बारे में बताएँ, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

दूसरा चरण—

(i) पेड़ पर दो बंदर दिखाई दे रहे हैं।

(ii) सभा में कम लोग आए।

‘दो’ शब्द बंदर की निश्चित संख्या बता रहा है तथा ‘कम’ शब्द अनिश्चित संख्या बता रहा है।

जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

तीसरा चरण—

(i) यह गाड़ी सुनील की है।

(ii) वह लड़का होशियार है।

‘यह’, ‘वह’ शब्द सर्वनाम हैं किंतु ‘गाड़ी’ व ‘लड़के’ की विशेषता बताने के कारण सार्वनामिक विशेषण हैं।

जब सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा शब्द की विशेषता बताते हैं, तब उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

चतुर्थ चरण— वह गा रही है।

वह लड़की मधुर गा रही है।

पहले वाक्य में ‘वह’ शब्द सर्वनाम है और दूसरे वाक्य में ‘वह’ शब्द संज्ञा की विशेषता बता रहा है, इसलिए यह सार्वनामिक विशेषण है। सर्वनाम व सार्वनामिक विशेषण में यही अंतर है। यदि संज्ञा में पूर्व सर्वनाम शब्द आकर उसकी विशेषता बताएँ तो वह सार्वनामिक विशेषण कहलाता है। यदि कोई शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो तो उसे सर्वनाम कहते हैं।

(i) पंकज बहुत बुद्धिमान है।

(ii) मज़दूर बहुत अधिक पैसे माँग रहा था।

उपरोक्त वाक्यों बुद्धिमान व अधिक विशेषण हैं। ‘बहुत’ शब्द विशेषण को विशेषता बता रहा है। इसलिए यह प्रविशेषण है। विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को ‘प्रविशेषण’ कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

(i) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

(ii) जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

(iii) विशेषण के चार भेद हैं—

(क) गुणवाचक, (ख) परिमाणवाचक, (ग) संख्यावाचक तथा (घ) सार्वनामिक।

(iv) जिन विशेषणों से किसी विशेष्य के गुण, दोष, आकार, रंग, दशा, स्वाद आदि का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(v) जो शब्द संज्ञा का माप-तौल आदि का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

(vi) जो विशेषण संज्ञा की संख्या का ज्ञान कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(vii) जो सर्वनाम किसी संज्ञा शब्द की विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

(viii) विशेषण शब्द की विशेषता बताने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं।

(ix) संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया व अव्ययों से विशेषण बनाए जाते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) विशेषण व विशेष्य से परिचित होना।
- (ii) प्रविशेषण को पहचानना।
- (iii) संख्यावाचक व परिमाण विशेषण में अंतर करना सीखना।
- (iv) सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर समझना।
- (v) संज्ञा, सर्वनाम से विशेषण शब्दों का निर्माण करना।
- (vi) क्रिया तथा अव्यय से शब्द-निर्माण की क्रिया में दक्ष होना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका अनुच्छेदयुक्त एक वर्कशीट विद्यार्थियों को देंगे। विद्यार्थी विशेषण शब्दों को छाँटकर उसके भेद का नाम भी लिखेंगे।
- (ii) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ संज्ञाएँ लिखेंगे, जिनसे विद्यार्थी विशेषण शब्दों का निर्माण करेंगे। सबसे अधिक सही उत्तर देने वाले विद्यार्थी का तालियों द्वारा उत्साह बढ़ाया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) सामाजिक (ख) आदरणीय (ग) पढ़ाकू (घ) इर्ष्यालु
(ङ) ऐतिहासिक
2. (क) संख्यावाचक विशेषण (ख) सर्वनाम (ग) प्रविशेषण (घ) सार्वनामिक विशेषण
(ङ) परिमाणवाचक विशेषण
3. इत — हर्षित, मोहित, आकर्षित
इक — सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक
वान — धनवान, नाशवान, गाड़ीवान
ई — गुणी, ऋणी, सुखी
4. (क) रक्षक (ख) शिक्षित (ग) कृपालु (घ) पंजाबी
(ङ) चचेरा (च) धार्मिक (छ) दर्शनीय
5. विशेषण — भेद
(क) हरी — गुणवाचक विशेषण
(ख) बहादुर — गुणवाचक विशेषण
(ग) थोड़े — अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(घ) सौ — निश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ङ) वे — सार्वनामिक विशेषण

6. (क) हार्दिक → दाम
 (ख) भोज्य → सिपाही
 (ग) सुंदर → सहानुभूति
 (घ) मुँहमाँगा → पदार्थ
 (ङ) वीर → बालिका

7. (क) दो लीटर दूध (निश्चित परिमाणवाचक विशेषण)
 (ख) पाँच कमीजें (निश्चित परिमाणवाचक विशेषण)
 (ग) कुछ बच्चे (अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण)
 (घ) चालीस कंप्यूटर (निश्चित संख्यावाचक विशेषण)
 (ङ) थोड़े-से चावल (अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण)

8. (क) अपनी (ख) ऐतिहासिक (ग) सामाजिक (घ) पाँच किलो
 (ङ) कई (च) तीस (छ) नागरिक

9. विशेषण प्रविशेषण

- | | |
|---------------|-----------|
| (क) स्वच्छ | — बिल्कुल |
| (ख) मोटा | — बहुत |
| (ग) काला | — अत्यंत |
| (घ) बुद्धिमान | — बहुत |
| (ङ) बहादुर | — बहुत |

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का ज्ञान होता है, उसे क्रिया कहते हैं। कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं— (i) सकर्मक क्रिया तथा (ii) अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती हैं— (i) एककर्मक व (ii) द्विकर्मक

संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं— (i) सरल क्रिया, (ii) संयुक्त क्रिया, (iii) प्रेरणार्थक क्रिया, (iv) नाम धातु क्रिया, (v) मिश्र क्रिया।

प्रेरणार्थक क्रिया के दो उपभेद हैं— (i) प्रथम प्रेरणार्थक तथा (ii) द्वितीय प्रेरणार्थक

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) क्रिया व उसके भेदों का ज्ञान देना।
- (ii) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद समझाना।
- (iii) अकर्मक व सकर्मक क्रिया की पहचान करना सीखना।
- (iv) एककर्मक व द्विकर्मक क्रिया का स्पष्टीकरण उदाहरणों द्वारा करना।
- (v) सरल व संयुक्त क्रिया का अंतर समझाना।
- (vi) नामधातु क्रियाओं का निर्माण करने का अभ्यास कराना।
- (vii) प्रेरणार्थक क्रिया के उपभेदों की जानकारी देना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, क्रिया-तालिका, पुस्तक, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- (i) सतीश दूध पी रहा है।
- (ii) रमा खेल रही है।
- (iii) पिताजी बैठे हैं।

रेखांकित शब्दों से कार्य के होने का पता चल रहा है।

जो शब्द कार्य के होने या करने का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया कहते हैं। क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। इनके अंत में 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका क्रिया की तालिका द्वारा 'क्रिया' पाठ का विस्तार करेंगी।

प्रथम चरण—

- (i) नमन खेल रहा है।
- (ii) नमन गेंद से खेल रहा है।

प्रथम वाक्य में कर्ता व क्रिया है। दूसरे वाक्य में कर्ता, कर्म तथा क्रिया है। जिन क्रिया शब्दों को कर्म की अपेक्षा नहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं तथा जिन क्रिया शब्दों में कर्म की अपेक्षा होती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं— अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया

- (i) गीता ने पुस्तक पढ़ी।
- (ii) रश्मि ने बेटी को पुस्तक दी।

पहले वाक्य में एक कर्म है, इसलिए यह एककर्मक क्रिया है। दूसरे वाक्य में दो कर्म हैं। अतः यहाँ द्विकर्मक क्रिया है। सकर्मक क्रिया के दो उपभेद हैं— एककर्मक तथा द्विकर्मक

दूसरा चरण— संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं— (i) सरल, (ii) संयुक्त, (iii) प्रेरणार्थक, (iv) नामधातु व (v) मिश्र क्रिया।

- (i) मोहन बाजार गया।
- (ii) मैंने खाना बनाया।
- (iii) पिता जी ने गाड़ी खरीद ली।
- (iv) सुनीता गिर गई।

उपर्युक्त दोनों वाक्य (i) तथा (ii) सरल क्रिया के उदाहरण हैं क्योंकि उनमें एक क्रिया है। जब वाक्य में एक ही क्रिया पद का प्रयोग किया जाता है, तब उसे सरल क्रिया कहते हैं।

'खरीद ली' तथा 'गिर गई' संयुक्त क्रिया के उदाहरण हैं क्योंकि इसमें एक मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया

भी है। 'खरीद' तथा 'गिर' मुख्य क्रियाएँ हैं तथा 'ली' व 'गई' सहायक क्रियाएँ हैं।

दो या दो से अधिक धातुओं से निर्मित क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं।

तीसरा चरण—

- (i) अध्यापक विद्यार्थियों को खेल खिलाता है। (ii) बहिन ने नौकरानी से सफाई करवाई।

प्रथम वाक्य में कर्ता स्वयं करने की प्रेरणा दे रहा है। यहाँ प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया है। दूसरे वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहा है, अतः यहाँ द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया है। जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरों को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

चतुर्थ चरण—

- (i) मैं जानती हूँ कि तुम मेरा घर हथियाना चाहते हो।

- (ii) तुम्हें इस बच्चे को अपनाना चाहिए।

'हथियाना' व 'अपनाना' नाम धातु क्रियाएँ हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों से बनी क्रियाओं को नामधातु क्रियाएँ कहते हैं।

भूख + लगना = भूख लगना

चक्कर + आना = चक्कर आना

ठंड + लगना = ठंड लगना

पराया + लगना = पराया लगना

उपरोक्त क्रियाएँ मिश्र क्रियाएँ हैं। जिन क्रियाओं का पहला भाग संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण हो तथा दूसरा भाग क्रिया हो तो उन्हें मिश्र क्रियाएँ कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) जिन शब्दों से कार्य के होने या करने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।
- (ii) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं— अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया।
- (iii) वाक्य में जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।
- (iv) वाक्य में जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता होती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।
- (v) सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं— एककर्मक क्रिया तथा द्विकर्मक क्रिया।
- (vi) जो क्रिया केवल एक कर्म की अपेक्षा करती है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।
- (vii) जिस क्रिया को दो कर्मों की आवश्यकता होती है, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।
- (viii) संरचना के आधार पर क्रिया के भेद हैं— सरल, संयुक्त, प्रेरणार्थक, नाम धातु व मिश्र।
- (ix) जिस वाक्य में एक क्रिया होती है, उसे सरल क्रिया कहते हैं।
- (x) जिस वाक्य में दो या दो से अधिक क्रियाएँ हों, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।
- (xi) संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण से बनी क्रियाओं को नाम धातु क्रिया कहते हैं।
- (xii) जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
- (xiii) जिन क्रियाओं का पहला भाग संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण हो तथा दूसरा भाग क्रिया हो, उन्हें मिश्र क्रिया कहते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) अकर्मक व सकर्मक क्रिया का अंतर करना।
- (ii) एककर्मक व द्विकर्मक क्रिया युक्त वाक्यों का अभ्यास करना।
- (iii) संयुक्त क्रिया में मुख्य व सहायक क्रिया को छोटना।
- (iv) नाम धातु क्रियाएँ बनाना।
- (v) प्रेरणार्थक क्रिया का अभ्यास करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर विद्यार्थियों द्वारा अकर्मक व सकर्मक क्रिया के वाक्य लिखवाएँ।
- (ii) दस नाम धातु क्रियाएँ लिखवाकर विद्यार्थियों से उनका वाक्यों में प्रयोग कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (ii) अकर्मक क्रिया (ख) (iv) सकर्मक क्रिया (ग) (ii) एककर्मक क्रिया
(घ) (ii) प्रेरणार्थक क्रिया (ङ) (iii) सकर्मक क्रिया
2. (क) पाँच (ख) दो (ग) दो
3. (क) द्विकर्मक (ख) मिश्र (ग) रंजक (घ) कर्ता पर
(ङ) सरल/सामान्य क्रिया (च) धातु (छ) प्रेरणार्थक क्रिया
4. (क) पढ़ रहा है (ख) खा लिया (ग) लिखा (घ) दौड़ा
(ङ) प्राप्त किया
5. लालच — ललचाना
लज्जा — लजाना
झूठ — झुठलाना
अपना — अपनाना
बात — बतियाना
धक्कार — धक्कारना
हाथ — हथियाना
टक्कर — टकराना
शर्म — शर्माना
6. (क) सकर्मक क्रिया (ख) एककर्मक क्रिया (ग) अकर्मक क्रिया
(घ) द्विकर्मक क्रिया (ङ) अकर्मक क्रिया (च) नामधातु क्रिया

- (छ) सकर्मक क्रिया (ज) प्रेरणार्थक क्रिया (झ) सकर्मक क्रिया (द्विकर्मक क्रिया)
 (ञ) सकर्मक क्रिया (द्विकर्मक क्रिया)

क्रियाकलाप

- सोचें और लिखें

छात्र स्वयं करें।

वर्ग पहेली

- | | | |
|-----------|-----------|------------|
| (क) रोना | (ख) गिरना | (ग) खाना |
| (घ) चलना | (ङ) देना | (च) पढ़ना |
| (छ) हराना | (ज) बेचना | (झ) पकड़ना |
| (ञ) लेना | | |

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद हैं— (i) वर्तमान काल (ii) भूत काल (iii) भविष्य काल।

(i) **वर्तमान काल**— क्रिया के जिस रूप से क्रिया के अभी होने का ज्ञान होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

(ii) **भूत काल**— क्रिया का जो रूप बीते हुए समय का बोध कराए, उसे भूत काल कहते हैं।

(iii) **भविष्य काल**— क्रिया का जो रूप आने वाले समय में क्रिया के होने का ज्ञान कराए, उसे भविष्य काल कहते हैं।

अधिगम का उद्देश्य—

- ‘काल’ का ज्ञान देना।
- वर्तमान काल, भूत काल व भविष्य काल की जानकारी देना।
- तीनों कालों के अंतर को पहचानना।
- वाक्य में सभी कालों की क्रियाओं का शुद्ध प्रयोग करना।
- वाक्यों में प्रयुक्त कालों की क्रियाओं को पहचानने का अभ्यास करना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्यपुस्तक, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- राम पढ़ रहा है।
- राम ने पढ़ लिया।
- राम पढ़ेगा।

प्रथम वाक्य में कार्य के होने का पता चल रहा है। दूसरे वाक्य में काम हो चुका है तथा तीसरे वाक्य में कार्य होगा। उपरोक्त वाक्य क्रमशः वर्तमान काल, भूत काल तथा भविष्य काल के वाक्य हैं। क्रिया के जिस रूप से कार्य होने के समय का ज्ञान होता है, उसे काल कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों के सहयोग से ‘काल’ अध्याय का विकास किया जाएगा।

प्रथम चरण—

- (i) बच्चे खेल रहे हैं।
- (ii) तितलियाँ उड़ रही हैं।
- (iii) ठंडी हवा चल रही है।

उपर्युक्त तीनों वाक्य वर्तमान काल के हैं क्योंकि कार्य हो रहा है। वर्तमान काल में क्रिया के अंत में— ‘हैं’, ‘है’, ‘हूँ’ तथा ‘हो’ आता है।

क्रिया का वह रूप जो क्रियाओं के अभी होने का ज्ञान कराता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

दूसरा चरण—

- (i) वह बाज़ार गया था।
- (ii) रमेश घूमने गया था।
- (iii) नीतू खाना बना रही थी।

ऊपर लिखे तीनों वाक्य दर्शा रहे हैं कि कार्य हो चुका है। भूतकाल में क्रिया के अंत में ‘था’, ‘थे’, ‘थी’ आता है। क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि कार्य हो चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं।

तीसरा चरण—

- (i) मीना आगरा जाएगी।
- (ii) मालती खाना बनाएगी।
- (iii) राजीव पढ़ेगा।

उपरोक्त उदाहरणों में आने वाले समय में कार्य के होने का संकेत है। ये सभी भविष्य काल के वाक्य हैं।

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि आने वाले समय में कार्य होगा, उसे भविष्य काल कहते हैं। भविष्य काल में क्रिया के अंत में ‘गा’, ‘गे’, ‘गी’ आता है।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने की सूचना मिलती है, उसे काल कहते हैं।
- (ii) काल के तीन प्रकार होते हैं— वर्तमान, भूत तथा भविष्य काल।
- (iii) क्रिया का जो रूप यह ज्ञात कराता है कि अभी कार्य हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।
- (iv) क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का पता चलता है कि कार्य हो चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं।
- (v) क्रिया के जिस रूप से पता चलता है कि आने वाले समय में कार्य होगा, वह भविष्यकाल कहलाता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) ‘काल’ के विषय में जानना।
- (ii) भूत काल व भविष्य काल में अंतर करना सीखना।
- (iii) वर्तमान काल के वाक्यों में क्रिया पद को पहचानने व लिखने का अभ्यास करना।
- (iv) वर्तमान काल को भूतकाल में परिवर्तित करने में दक्षता प्राप्त करना।
- (v) भविष्य काल की क्रियाओं को वाक्य में प्रयुक्त करने की क्षमता का विकास करना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर वर्तमान काल की क्रियाओं के कुछ वाक्य लिखेंगे। विद्यार्थी उसे भूत काल व भविष्य काल में बदल कर लिखेंगे। सही उत्तर देने वाले विद्यार्थी को प्रोत्साहित किया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (iii) वर्तमान काल (ख) (i) भविष्यत्काल (ग) (ii) भूतकाल
2. (क) सीख रही है। — वर्तमान काल
 (ख) लाए। — भूतकाल
 (ग) है। — वर्तमान काल
 (घ) पकड़ा गया। — भूतकाल
 (ङ) जाएँगे। — भविष्यत्काल
 (च) तोड़ रहे हैं। — वर्तमान काल
3. (क) वर्तमान काल — मैं आगरा घूमने जा रहा हूँ।
 भूतकाल — मैं आगरा घूमने गया था।
 (ख) वर्तमान काल — मेरा मित्र कल आ रहा है।
 भूतकाल — मेरा मित्र कल आया था।
 (ग) वर्तमान काल — प्रधानाचार्य प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।
 भूतकाल — प्रधानाचार्य ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था।
 (घ) वर्तमान काल — बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
 भूतकाल — बच्चों ने क्रिकेट खेला।
4. (क) (X) (ख) (✓) (ग) (X) (घ) (✓) (ङ) (X)
 क्रियाकलाप
 छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार प्रयुक्त की गई है, उसे वाच्य कहते हैं।

हिंदी में वाच्य के तीन प्रकार हैं— (i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य तथा (iii) भाववाच्य

- (i) **कर्तृवाच्य**— कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है। इसमें क्रिया कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार प्रयोग की जाती है। इस वाच्य में सकर्मक व अकर्मक दोनों क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं।
- (ii) **कर्मवाच्य**— कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार प्रयोग में लाई जाती है। वाक्य में प्रयुक्त क्रिया कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार प्रयुक्त की जाती है। कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रिया से बनते हैं।
- (iii) **भाववाच्य**— भाववाच्य में क्रिया भाव के अनुसार प्रयोग में लाई जाती है। भाववाच्य में क्रिया सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग तथा एकवचन होती है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) वाच्य से परिचित होना।
- (ii) वाच्य के तीनों प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना।
- (iii) सकर्मक व अकर्मक क्रियाओं की पहचान करना सीखना।
- (iv) वाच्य परिवर्तन की क्षमता का विकास करना।
- (v) वाक्य में वाच्य पहचानने में दक्षता प्राप्त करना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, पाठ्य पुस्तक, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- (i) अध्यापक पढ़ाता है।
- (ii) अध्यापक द्वारा पाठ पढ़ाया जाता है।
- (iii) मुझसे पढ़ा नहीं जाता।

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार है। दूसरे वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार प्रयोग में लाई गई है तथा तीसरे वाक्य में क्रिया भाव के अनुसार लगाई गई है। क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि वह कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार प्रयोग में लाई गई है, उसे वाच्य कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— विभिन्न उदाहरण देकर वाच्य की व्याख्या की जाएगी।

प्रथम चरण—

- (i) गीता पुस्तक पढ़ती है।
- (ii) मोहन क्रिकेट खेलता है।

यहाँ पर क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार हुआ है। अतः ये कर्तृवाच्य के उदाहरण हैं। कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार लगाई जाती है।

दूसरा चरण—

- (i) प्रीति द्वारा भोजन बनाया जाता है।
- (ii) नरेश द्वारा पुस्तक पढ़ी गई।

ऊपर लिखे दोनों वाक्यों में क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार किया गया है, अतः यहाँ कर्मवाच्य है। कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार लगाई जाती है।

तीसरा चरण—

भाववाच्य—

- (i) राजेश से घूमा नहीं जाता।
- (ii) सुशीला से बोला नहीं जाता।

यहाँ क्रिया भाव के अनुसार प्रयुक्त हुई है। भाववाच्य में क्रिया कर्ता व कर्म के लिंग व वचन के अनुसार नहीं लगाई जाती। वह भाव के अनुसार प्रयोग में लाई जाती है।

वाच्य परिवर्तन के उदाहरण

कर्तृवाच्य से

- (i) पिता जी सब्जी लाए।
- (ii) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

कर्तृवाच्य से

- (i) मैं सोता हूँ।
- (ii) नीरज आम खाता है।

कर्मवाच्य से

- (i) हमसे चला नहीं जाता।
- (ii) मोहन से कविता सुनाई गई।

कर्मवाच्य में

- पिता जी के द्वारा सब्जी लाई गई।
- पक्षियों के द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।

भाववाच्य में

- मुझसे सोया जाता है।
- नीरज से आम खाया जाता है।

कर्तृवाच्य में

- हम नहीं चलते।
- मोहन ने कविता सुनाई।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि वह वाक्य में कर्ता, कर्म, भाव के अनुसार प्रयोग में लाई जाएगी, उसे वाच्य कहते हैं।
- (ii) वाच्य के तीन भेद हैं—
(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य तथा (ग) भाववाच्य।
- (iii) कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के लिंग व वचन के अनुसार प्रयुक्त होती है।
- (iv) कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के लिंग व वचन के अनुसार प्रयोग में लाई जाती है।
- (v) भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है।
- (vi) कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक व सकर्मक दोनों हो सकती हैं।
- (vii) कर्मवाच्य में प्रायः क्रिया सकर्मक होती है।
- (viii) भाववाच्य में प्रायः क्रिया अकर्मक होती है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) वाच्य का ज्ञान प्राप्त करना।
- (ii) कर्तृवाच्य व कर्मवाच्य में अंतर करना सीखना।
- (iii) भाववाच्य की पहचान करना।
- (iv) कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य व भाववाच्य में बदलने में निपुण होना।
- (v) लिंग, वचन, कर्म के आधार पर सकर्मक व अकर्मक क्रिया में भेद करना सीखना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका वर्कशीट विद्यार्थियों को देंगे जिसमें दस कर्तृवाच्य के वाक्य लिखे होंगे जिन्हें कर्मवाच्य व भाववाच्य में बदलना होगा। अगले दिन वर्कशीट की जाँच की जाएगी। सुधार कार्य भी कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (iii) कर्तृवाच्य (ख) (i) भाववाच्य (ग) (i) कर्मवाच्य
(घ) (ii) भाववाच्य (ङ) (ii) कर्तृवाच्य
2. (क) भाववाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) भाववाच्य
(घ) भाववाच्य (ङ) कर्तृवाच्य (च) कर्मवाच्य
3. (क) विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा दी गई।
(ख) मजदूर द्वारा मकान बनाया गया।
(ग) बालक से रोया जाता है।
(घ) महात्मा गांधी द्वारा सत्य और अहिंसा का उपदेश दिया गया।
(ङ) वह बैठ नहीं सकता।
(च) हमने पाठ पढ़ा।
(छ) प्रेमचंद द्वारा कहानियाँ लिखी गई।
(ज) उससे सुना नहीं जाता।

4.	क्रिया	कर्मवाच्य	भाववाच्य
	(क) लिखना	किताब मेरे द्वारा लिखी गई।
	(ख) पकड़ना	पुलिस द्वारा चोर पकड़ा गया।
	(ग) धोना	धोबी द्वारा कपड़े धोए जाते हैं।
	(घ) खाना	मेरे द्वारा फल खाया जाता है।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ

14

अव्यय

पाठ योजना

(क) क्रियाविशेषण

कालांशों की संख्या – दो

सामान्य परिचय- 'अविकारी' शब्द का अर्थ है, जिनमें कोई विकार न हो। जिन शब्दों में लिंग, वचन, काल व पुरुष के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। इन्हें अव्यय भी कहते हैं।

अव्यय के निम्नलिखित भेद हैं- (i) क्रियाविशेषण (ii) संबंधबोधक (iii) समुच्चयबोधक (iv) विस्मयादिबोधक।

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं। क्रिया विशेषण के चार भेद हैं— (i) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण (iii) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (iv) कालवाचक क्रियाविशेषण।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) अविकारी शब्दों की जानकारी प्राप्त करना।
- (ii) अव्यय के भेदों को जानना।
- (iii) क्रियाविशेषण के सभी भेदों से अवगत होना।
- (iv) क्रियाविशेषण शब्दों का वाक्य में प्रयोग करना सीखना।
- (v) क्रियाविशेषण को छाँटना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- (i) मैं रोज़ खेलता हूँ।
- (ii) स्कूल के चारों ओर जंगल है।
- (iii) मोहन घर आया और सो गया।
- (iv) अरे! ये क्या हो गया?

उपर्युक्त वाक्यों में 'रोज़', 'चारों ओर', 'और', 'अरे!' अव्यय हैं।

जिन शब्दों के रूप में काल, लिंग तथा वचन के बदलने पर कोई परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अव्यय कहते हैं।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों के सहयोग से 'अव्यय' पाठ का विस्तृत अध्ययन करेंगे। अव्यय के प्रथम भेद क्रियाविशेषण को विभिन्न उदाहरण देकर समझाया जायेगा।

प्रथम चरण—

- (i) वह धीरे-धीरे चल रही थी।
- (ii) वह अचानक गिर गया।
- (iii) वह अंदर बैठा है।
- (iv) चारों तरफ़ हरियाली छा गई।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'धीरे-धीरे' व 'अचानक' शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं। जिन शब्दों से क्रिया के होने की रीति या ढंग का ज्ञान होता है, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

'अंदर' व 'चारों तरफ़' स्थानवाचक क्रियाविशेषण हैं क्योंकि जिन अव्यय शब्दों से कार्य के होने के स्थान का बोध होता है, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। आस-पास, सर्वत्र, इधर-उधर, अंदर-बाहर, नीचे-ऊपर आदि शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण हैं।

दूसरा चरण—

- (i) उस पर तनिक भी प्रभाव नहीं हुआ।
- (ii) वह बहुत चंचल है।
- (iii) हम परसों सिनेमा जाएँगे।
- (iv) अब वर्षा आने वाली है।

'तनिक' व 'बहुत' शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं। वे अव्यय शब्द जिनसे क्रिया की मात्रा का ज्ञान होता है, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

'परसों', 'अब' शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण हैं। वे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने का समय बताते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) अव्यय शब्द वे होते हैं जिनमें लिंग, वचन, काल, पुरुष के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता।
- (ii) अव्यय के भेद हैं— क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।
- (iii) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं। इसके चार भेद हैं— कालवाचक क्रियाविशेषण, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, रीतिवाचक क्रियाविशेषण।
- (iv) जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के समय का बोध होता है, उसे कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।
- (v) जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के होने का स्थान या दिशा के बारे में बताते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।
- (vi) जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया को मात्रा का ज्ञान होता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।
- (vii) जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के होने की विधि बताते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) विशेषण व क्रियाविशेषण का अंतर जानना।
- (ii) क्रियाविशेषण के सभी भेदों का अंतर करना सीखना।
- (iii) कालवाचक तथा स्थानवाचक अव्ययों से अवगत होना।
- (iv) क्रियाविशेषण शब्दों से वाक्य निर्मित करना।

मूल्यांकन—

अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें उन्हें क्रियाविशेषण के सभी भेदों के दो-दो वाक्य लिखने होंगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (ii) अव्यय (ख) (i) चार (ग) (i) कालवाचक क्रियाविशेषण
(घ) (i) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (ङ) (ii) कालवाचक क्रियाविशेषण
2. (क) विशेषण (ख) क्रियाविशेषण (ग) क्रियाविशेषण (घ) विशेषण
(ङ) विशेषण (च) विशेषण (छ) क्रियाविशेषण
3. (क) कल — कालवाचक क्रियाविशेषण
(ख) अधिक — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
(ग) बहुत — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
(घ) अचानक — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ङ) कम — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
(च) भीतर — स्थानवाचक क्रियाविशेषण

4. (क) मेरा मित्र अभी-अभी आया है।
 (ख) शेर जोर से गरजता है।
 (ग) लता जी अच्छा गाती हैं।
 (घ) लड़के जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं।
 (ङ) वे सब प्रतिदिन सैर को जाते हैं।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ख) संबंधबोधक

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक' कहते हैं। संबंधबोधक के मुख्य दस भेद हैं—

- (i) **कालवाचक** — के पहले, के बाद, के पश्चात, के उपरांत, के आगे, के पीछे आदि।
- (ii) **स्थानवाचक** — के ऊपर, के नीचे, के भीतर, के अंदर, के बाहर, से दूर, के पीछे आदि।
- (iii) **समतावाचक** — के अनुसार, के समान, के तुल्य, के बराबर, की भाँति आदि।
- (iv) **दिशावाचक** — के आस-पास, की ओर, के प्रति, के समीप, के सामने, की तरफ आदि।
- (v) **हेतुवाचक** — के कारण, के लिए, की खातिर, के मारे आदि।
- (vi) **साधनवाचक** — के द्वारा, के सहारे, के निमित्त, के माध्यम आदि।
- (vii) **तुलनावाचक** — की अपेक्षा, के जैसे, की तुलना में, की तरह आदि।
- (viii) **संबंधवाचक** — के साथ, के संग आदि।
- (ix) **विरोधवाचक** — के प्रतिकूल, के विपरीत, के खिलाफ़, के विरुद्ध आदि।
- (x) **विषयवाचक** — के विषय में, के बारे, के भरोसे आदि।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) संबंधबोधक शब्दों से परिचित होना।
- (ii) संबंधबोधक के भेदों को जानना।
- (iii) संबंधबोधक के प्रत्येक भेद के अंतर्गत आए शब्दों से अवगत होना।
- (iv) संबंधबोधक शब्दों से वाक्य का निर्माण करना सीखना।
- (v) गद्यांश में आए संबंधबोधक शब्दों को पहचानना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पुस्तक, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे।

- (i) मैं बेटे के बिना जी नहीं सकती।
- (ii) मनोज के घर के सामने पेड़ है।
- (iii) वह शीत के मारे काँपने लगा।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द संबंधबोधक हैं।

संज्ञा व सर्वनाम का संबंध अन्य शब्दों से बताने वाले शब्दों को संबंधबोधक कहते हैं।

अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों के सहयोग से 'संबंधबोधक' अध्याय का विकास करेंगे।

शिक्षण प्रणाली— विभिन्न उदाहरणों द्वारा अध्याय का स्पष्टीकरण किया जायेगा।

प्रथम चरण—

- (i) वह अनुपमा के बाद घर आया।
- (ii) मेरे घर के सामने बगीचा है।
- (iii) रमेश अपने पिताजी की तरह ईमानदार है।

के बाद, के सामने, की तरह शब्द क्रमशः कालवाचक, स्थानवाचक, समतावाचक संबंधबोधक के उदाहरण हैं। कालवाचक में समय, स्थानवाचक में जगह तथा समतावाचक में किसी से समानता की जाती है।

दूसरा चरण—

- (i) मेरे घर के पास दुकान है।
- (ii) वृक्ष तेज आँधी के कारण गिर गया।
- (iii) रमेश रस्सी के सहारे दीवार से नीचे आ गया।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमशः दिशा, कारण, साधन का बोध करा रहे हैं। अतः ये क्रमशः दिशावाचक, हेतुवाचक व साधनवाचक संबंधबोधक हैं।

तीसरा चरण—

- (i) मीना भाई के साथ स्कूल गई है।
- (ii) संविधान के नियमों के विरुद्ध कार्य नहीं करना चाहिए।
- (iii) भाग्य के भरोसे बैठना उचित नहीं।
- (iv) सुनीता की अपेक्षा उसकी बहन अनीता अधिक बुद्धिमान है।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमशः संबंधवाचक, विरोधवाचक, विषयवाचक तथा तुलनावाचक के उदाहरण हैं। संबंधवाचक में संबंध बताया जाता है। विरोधवाचक में विरोध व्यक्त किया जाता है। विषयवाचक में विषय के बारे में तथा तुलनावाचक में किसी से तुलना की जाती है।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का अन्य शब्दों से संबंध जोड़ते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।
- (ii) प्रमुख संबंधबोधक अव्यय हैं— के सामने, की अपेक्षा, के समान, की तुलना में, के कारण, की ओर, के निकट, के बिना आदि।

- (iii) कुछ अव्यय शब्दों का प्रयोग संबंधबोधक और क्रियाविशेषण दोनों रूपों में किया जाता है। जब अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होते हैं, तब वे 'संबंधबोधक अव्यय' कहलाते हैं तथा जब वे क्रिया की विशेषता बताते हैं, तो वे 'क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।
- (iv) संबंधबोधक के निम्नलिखित भेद हैं— समतावाचक, स्थानवाचक, कालवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक, तुलनावाचक विरोधवाचक, संबंधवाचक, विषयवाचक।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- संबंधबोधक अव्ययों का ज्ञान प्राप्त करना।
- संबंधबोधक अव्यय के भेदों को जानना।
- संबंधबोधक व क्रिया विशेषण दोनों रूपों में अंतर करना सीखना।
- संबंधबोधक अव्ययों द्वारा वाक्य निर्माण करना।
- अध्याय में प्रयुक्त संबंधबोधक अव्ययों को छाँटना।

मूल्यांकन—

- अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे, जिसमें विद्यार्थी तीन-तीन वाक्य लिखकर संबंधबोधक व क्रियाविशेषण का अंतर स्पष्ट करेंगे।
- कुछ संबंधबोधक शब्द लिखे होंगे विद्यार्थी जिनका वाक्य में प्रयोग करेंगे। वर्कशीट की जाँच की जाएगी तथा सही उत्तर पर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- | | | |
|---------------------|-----------------|-----------------|
| (क) (ii) के सामने | (ख) (i) के समीप | (ग) (iv) के साथ |
| (घ) (iii) के द्वारा | (ङ) (ii) के ऊपर | |
- | | | |
|-------------|-------------|------------|
| (क) के ऊपर | (ख) के बिना | (ग) के साथ |
| (घ) के अंदर | (ङ) के निकट | (च) के संग |
- (क) मुझे टेलीफोन के द्वारा सूचना मिली।

(ख) तुम अर्जुन की भाँति यशस्वी बनो।

(ग) मेरे घर के सामने एक उपवन है।

(घ) मैं बीमारी के कारण स्कूल नहीं गया।

(ङ) मैं बच्चों के लिए फल लायी हूँ।

(च) वह नदी की ओर घूमने गया है।

4. क्रियाविशेषण

1. चारों ओर
2. भीतर
3. नीचे
4. सामने
5. ऊपर
6. आजकल

संबंधबोधक

1. के पश्चात्
2. की अपेक्षा
3. के यहाँ
4. के आगे
5. से पहले
6. की भाँति

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(ग) समुच्चयबोधक

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, वे समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक के दो भेद होते हैं—

- (i) समानाधिकरण समुच्चयबोधक
- (ii) व्यधिकरण समुच्चयबोधक

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) 'समुच्चयबोधक' शब्दों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (ii) 'समुच्चयबोधक' शब्दों के भेदों से अवगत होना।
- (iii) 'समुच्चयबोधक' शब्दों से वाक्य-निर्माण करना सीखना।
- (iv) 'समुच्चयबोधक' शब्दों को छाँटने में कुशलता प्राप्त करना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पुस्तक, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर विषय का स्पष्टीकरण करेंगे।

- (i) बाजार से सब्जी तथा फल लेकर आना।
- (ii) मेरे भैया और भाभी आज मुम्बई जा रहे हैं।
- (iii) सुरेश ने पढ़ाई नहीं की इसलिए परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया।
- (iv) अमित आज स्कूल नहीं जा सकता क्योंकि उसके पैर पर चोट लग गई है।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द 'समुच्चयबोधक' हैं।

दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को 'समुच्चयबोधक' कहते हैं। अध्यापक/अध्यापिका आज विद्यार्थियों के सहयोग से 'समुच्चयबोधक' अध्याय का विकास करेंगे।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका विभिन्न उदाहरणों द्वारा 'समुच्चयबोधक' के भेदों का स्पष्टीकरण करेंगे।

प्रथम चरण—

- (i) मेला देखने तुम जाओगे अथवा मैं जाऊँ।
- (ii) बिजली कड़की और तेज आँधी आने लगी।
- (iii) आप ठंडा लेंगे या गर्म।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द समानाधिकरण समुच्चयबोधक के उदाहरण हैं।

वे शब्द जो दो या दो से अधिक समान पदों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं। समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार प्रकार हैं— संयोजक, विभाजक, विरोधवाचक, परिणामवाचक।

दूसरा चरण—

- (i) उसे बुखार था इसलिए वह सुबह देर से उठा।
- (ii) यदि मैं स्कूल गया तो अध्यापिका से मिल लूँगा।
- (iii) अभ्यास करो वरना प्रतियोगिता में हार जाओगे।
- (iv) आकाश में बादल छाए हैं परंतु गर्मी कम नहीं हुई।
- (v) यदि अपनी भलाई चाहते हो तो जल्दी से यहाँ से चले जाओ।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक हैं।

जो अव्यय शब्द दो या दो से अधिक वाक्यों को प्रधान उपवाक्य में जोड़ते हैं, उन्हें 'व्यधिकरण समुच्चयबोधक' कहते हैं। व्यधिकरण समुच्चयबोधक के निम्नलिखित भेद हैं— कारणवाचक, उद्देश्यवाचक, स्वरूपवाचक, संकेतवाचक।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) वे अव्यय शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।
- (ii) समुच्चयबोधक को 'योजक' भी कहते हैं।
- (iii) समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं—
 - (क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक
 - (ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक
- (iv) वे अव्यय शब्द जो समान स्तर के दो या दो से अधिक शब्दों अथवा प्रधान उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके चार भेद हैं— संयोजक, विभाजक, विरोधवाचक, परिणामवाचक।
- (v) वे अव्यय जो प्रधान वाक्य से एक या अधिक आक्षिप्त उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके चार भेद हैं— कारणवाचक, उद्देश्यवाचक, स्वरूपवाचक, संकेतवाचक।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) समुच्चयबोधक अव्ययों को जानना।
- (ii) समुच्चयबोधक के भेदों का अंतर समझना।
- (iii) प्रधान वाक्य व आक्षिप्त उपवाक्य को छाँटना।
- (iv) समुच्चयबोधक शब्दों का प्रयोग कर वाक्य का निर्माण करना सीखना।
- (v) वाक्य में प्रयुक्त समुच्चयबोधक शब्दों को छाँटकर उनका भेद लिखने में कुशलता प्राप्त करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे, जिसमें एक गद्यांश लिखा होगा। विद्यार्थी उसमें समुच्चयबोधक शब्दों को छाँटकर उनके भेद का नाम लिखेंगे।
- (ii) वर्कशीट में कुछ समुच्चयबोधक शब्द दिए जाएँगे। विद्यार्थी प्रत्येक शब्द से एक-एक वाक्य का निर्माण करेंगे।
- वर्कशीट की जाँच की जाएगी और सही उत्तर पर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (iii) क्योंकि (ख) (i) परंतु (ग) (iv) या
(घ) (i) परंतु (ङ) (iii) इसलिए
2. के कारण — चोट लगने के कारण वह न आ सका।
क्योंकि — मोहन विद्यालय नहीं आया, क्योंकि वह बीमार था।
कि — बच्चों ने कहा कि वे खेलने जाएँगे।
और — सीता और गीता बाजार जा रही हैं।
अन्यथा — तुम चुप रहो, अन्यथा डाँट पड़ेगी।
जिससे — वह बहुत मेहनत करती है, जिससे परिवार का भरण-पोषण कर सके।
एवं — सीता एवं उर्मिला बहनें थीं।
3. (क) वह इतना परोपकारी है, इसलिए वह देवता है।
(ख) कक्षा में प्रथम आना चाहते हो, तो परिश्रम करो।
(ग) रात हो गई है, इसलिए आप यहीं रहिए।
(घ) वह देर से स्टेशन पहुँचा, इसलिए गाड़ी न पकड़ सका।
(ङ) बादल गरज रहे थे और वर्षा हो रही थी।
(च) वह बहुत मोटा है क्योंकि वह अधिक खाता है।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

(घ) विस्मयादिबोधक

कालांशों की संख्या — एक

सामान्य परिचय— जो शब्द विस्मय, आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा, भय आदि का भाव व्यक्त करते हैं, उन्हें 'विस्मयादिबोधक' शब्द कहते हैं।

विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न प्रकार के विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। विस्मयादिबोधक के निम्नलिखित भेद हैं—

- (i) **हर्षबोधक**— वाह-वाह!, ओहो!, आहा!, बहुत अच्छा आदि।
- (ii) **आश्चर्यबोधक**— ओह!, अरे!, क्या!, ऐ!, हैं! आदि।
- (iii) **घृणाबोधक**— धिक्कार!, धत्!, छिः! ओफ़!, थू! आदि।
- (iv) **शोकबोधक**— हे राम!, त्राहि-त्राहि!, ओह!, हाय! आदि।
- (v) **आशीर्वादबोधक**— दीर्घायु हो! खुश रहो!, आयुष्मानभव!, सुखी रहो! आदि।
- (vi) **प्रशंसाबोधक**— शाबाश!, वाह!, अति सुंदर! आदि।
- (vii) **भयबोधक**— ओह!, बाप रे! आदि।
- (viii) **स्वीकृतिबोधक**— अच्छा!, ठीक!, जी हाँ! आदि।
- (ix) **चेतावनीबोधक**— बचो!, सावधान!, खबरदार!, होशियार! आदि।
- (x) **संबोधनबोधक**— अरे सुनो!, हे!, अजी सुनिए! आदि।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) विस्मयादिबोधक शब्दों से परिचित होना।
- (ii) अलग-अलग भावों में व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों की जानकारी प्राप्त करना।
- (iii) विस्मयादिबोधक के भेदों को जानना।
- (iv) विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य का निर्माण करना।
- (v) विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग करना सीखना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पुस्तक, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर अध्याय का आरंभ करेंगे।

- (i) हे राम! यह कैसे हो गया।
- (ii) वाह! कितना सुंदर दृश्य है।
- (iii) सावधान! इधर मत आना क्योंकि पत्थर गिर रहे हैं।
- (iv) बाप रे बाप! इतनी बड़ी सुरंग।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द विस्मयादिबोधक हैं। आश्चर्य, घृणा, प्रशंसा, शोक, भय आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

अध्यापक/अध्यापिका विस्मयादिबोधक अध्याय का विस्तार करेंगे।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका विभिन्न उदाहरणों द्वारा 'विस्मयादिबोधक' शब्दों के भेदों को समझाएँगे।

प्रथम चरण—

- (i) अहा! मेरा भाई संगीत प्रतियोगिता में प्रथम आया है।
- (ii) अरे! रमेश दुर्घटनाग्रस्त कब हुआ।
- (iii) धिक्कार! तुम शत्रुओं को पीठ दिखाकर आ गए।
- (iv) हाय! उसकी दुकान कैसे जल गई।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमशः हर्ष, आश्चर्य, घृणा तथा शोक का भाव व्यक्त कर रहे हैं। जहाँ हर्ष का भाव हो वहाँ हर्षबोधक, जहाँ विस्मय का भाव हो वहाँ आश्चर्यबोधक, जहाँ घृणा का भाव प्रकट हो वहाँ घृणावाचक तथा शोक का भाव व्यक्त करने वाले शब्दों को शोकबोधक कहते हैं।

दूसरा चरण—

- (i) खुश रहो! हमेशा सफलता प्राप्त करो।
- (ii) शाबाश! तुमने स्कूल का नाम रोशन कर दिया।
- (iii) बाप रे! मैं तो साँप देखकर डर गई।

खुश रहो!, शाबाश!, बाप रे!— शब्द क्रमशः आशीर्वादबोधक प्रशंसाबोधक, भयबोधक हैं। आशीर्वादबोधक में आशीर्वाद दिया जाता है। प्रशंसाबोधक में प्रशंसा की जाती है तथा भयबोधक में डर का भाव छिपा होता है।

तीसरा चरण—

- (i) जी! मैं आपसे अनुमति लेकर जाऊँगा।
- (ii) खबरदार! अगर कभी ऐसी अभद्र भाषा का प्रयोग किया।
- (iii) अरे मोहन! इधर आओ।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमशः स्वीकृतिबोधक, चेतावनीबोधक तथा संबोधनबोधक हैं। स्वीकृतिबोधक में किसी कार्य की स्वीकृति दी जाती है। चेतावनीबोधक में चेतावनी का भाव तथा संबोधनबोधक में संबोधन किया जाता है।

विस्तार से व्याख्या

- (i) आश्चर्य, हर्ष, शोक, विस्मय, ग्लानि, लज्जा आदि भावों को प्रकट करने वाले अव्यय शब्दों को 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहते हैं।
- (ii) विस्मयादिबोधक शब्दों के साथ विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है।
- (iii) विस्मयादिबोधक शब्द अधिकतर वाक्य के आरंभ में लगते हैं।
- (iv) अलग-अलग भावों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग विस्मयादिबोधक शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं।
- (v) विस्मयादिबोधक के भेद हैं—हर्षबोधक, आश्चर्यबोधक, घृणाबोधक, शोकबोधक, आशीर्वादबोधक, प्रशंसाबोधक, भयबोधक, स्वीकृतिबोधक, चेतावनीबोधक संबोधनबोधक।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) विस्मयादिबोधक शब्दों से परिचित होना।
- (ii) विस्मयादिबोधक शब्दों के भेदों को समझना।
- (iii) विभिन्न भावों के लिए उचित विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करना सीखना।
- (iv) विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य निर्माण में दक्षता प्राप्त करना।
- (v) वाक्य में उचित स्थान पर विस्मयादि शब्दों के प्रयोग में पारंगत होना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे, जिसमें कुछ वाक्य लिखे होंगे। विद्यार्थी उन वाक्यों में प्रयुक्त विस्मयादि शब्दों को छोटकर उससे संबंधित मनोभाव को लिखेंगे।
- (ii) वर्कशीट में कुछ विस्मयादिबोधक शब्द दिये गए हैं। विद्यार्थी उनका प्रयोग कर एक-एक वाक्य लिखेंगे। वर्कशीट की जाँच की जाएगी। सही उत्तर पर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (iv) क्योंकि (ख) (ii) अव्यय (ग) (i) बहुत
 2. (क) शाबाश! (ख) हाय! (ग) वाह! (घ) ठीक!

3. बाप रे! – बाप रे! इतना घना अँधेरा।
 अच्छा! – अच्छा! तो तुमने शरारत की है।
 अरे! – अरे! तुम क्यों जा रहे हो?
 आहा! – आहा! इतना स्वादिष्ट भोजन।
 सावधान! – सावधान! आगे मत बढ़ना।

4. हाय → प्रसन्नता
 खबरदार → शोक
 वाह-वाह → घृणा
 छिः-छिः → सावधान
 शाबाश → प्रसन्नता

5. मात्र – मेरे पास मात्र दस रुपये हैं।
 तक – सुधा ने अपने आने की खबर तक नहीं दी।
 ही – मैं आज ही मुंबई जाऊँगा।
 भी – तुम भी मेरे साथ खेलो।
 तो – तुम तो मुझ तक पहुँच ही नहीं सकते।

क्रियाविशेषण	संबंधबोधक	समुच्चयबोधक	विस्मयादिबोधक
अच्छा	के बाहर	तथा	वाह
सर्वत्र	के भीतर	इसलिए	हाय
ऊपर	के पास	और	धिक
अचानक	से पहले	लेकिन	अरे
	के नीचे	किंतु	

7. (क) ऊपर (क्रियाविशेषण) (ख) के कारण (संबंधबोधक)
 (ग) पाँच बजे (कालवाचक क्रियाविशेषण) (घ) अच्छा! (विस्मयादिबोधक)
 (ङ) इसलिए (समुच्चयबोधक) (च) और (समुच्चयबोधक)
 (छ) के लिए (संबंधबोधक) (ज) चुपचाप (क्रियाविशेषण)

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों के मेल से वाक्यों का निर्माण होता है।

शब्दों के सार्थक मेल से बनने वाली इकाई को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के दो अंग हैं— (i) उद्देश्य तथा (ii) विधेय

वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे **उद्देश्य** कहते हैं। उद्देश्य की विशेषता बताने वाले शब्दों को **उद्देश्य का विस्तार** कहते हैं। उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं— (i) विधानवाचक (ii) निषेधवाचक (iii) संकेतवाचक (iv) प्रश्नवाचक (v) आज्ञावाचक (vi) विस्मयवाचक (vii) इच्छावाचक तथा (viii) संदेहवाचक

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं— (i) सरल वाक्य (ii) मिश्रित वाक्य और (iii) संयुक्त वाक्य

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) वाक्य व उसके अंगों को जानना।
- (ii) उद्देश्य व विधेय का अंतर समझना।
- (iii) अर्थ के आधार पर वाक्य भेदों से परिचित होना।
- (iv) रचना के आधार पर वाक्य भेदों को जानना।
- (v) वाक्य परिवर्तन करने की क्षमता का विकास करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखेंगे व उसको स्पष्ट करेंगे।

- (i) आँधी चल रही है।
- (ii) मैं आज सिनेमा देखने जाऊँगा।
- (iii) मैं माता जी को खाना दे रही हूँ।

ऊपर लिखे वाक्यों में पूरा भाव प्रकट हो रहा है।

भाषा की वह लघुतम इकाई, जो किसी भाव या विचार को प्रकट करती है, उसे वाक्य कहते हैं। आज 'वाक्य-विचार' अध्याय का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापिका सी०डी० द्वारा कुछ लिखे हुए वाक्य दिखाएँगी।

प्रथम चरण—

- (i) नीना के पिता जी आज नहीं आएँगे।
- (ii) महेश पत्र लिख रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'नीना के पिता जी' उद्देश्य है, तथा 'आज नहीं आएँगे' विधेय है। इसी प्रकार— 'महेश' उद्देश्य है और 'पत्र लिख रहा है'— विधेय है।

वाक्य में कर्ता अर्थात् जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य तथा कर्ता के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

दूसरा चरण— अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं—

- | | |
|-------------------------------|--------------------------|
| (i) बच्चे भाग रहे हैं। | (ii) आज अध्यापक नहीं आए। |
| (iii) तुम देर से क्यों आए हो? | (iv) खड़े हो जाओ। |

प्रथम वाक्य विधानवाचक है क्योंकि इसमें बच्चों के बारे में कुछ बताया गया है। जिन वाक्यों में किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के विषय में कुछ कहा जाए, उसे विधानवाचक कहते हैं।

दूसरे वाक्य में कार्य नहीं हो रहा। जिन वाक्यों में कार्य का निषेध होता है, उन्हें निषेधवाचक कहते हैं।

तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछा गया है। जिन वाक्यों में प्रश्न पूछे जाएँ, उन्हें प्रश्नवाचक कहते हैं।

चतुर्थ वाक्य में आज्ञा दी गई है। जिन वाक्यों में आज्ञा, अनुमति, उपदेश, प्रार्थना आदि का भाव होता है, उन्हें आज्ञावाचक कहते हैं।

तीसरा चरण—

- | | |
|--------------------------|-------------------------------|
| (i) चिरंजीवी रहो। | (ii) प्रभु आपको स्वस्थता दें। |
| (iii) शायद कोई आज्ञा है। | (iv) हो सकता है आज आँधी आए। |

ऊपर लिखे दोनों वाक्यों में इच्छा, आशीर्वाद का भाव है। जो वाक्य इच्छा, आशीर्वाद, शुभकामना का भाव व्यक्त करते हैं, वे इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं।

तीसरे व चतुर्थ वाक्य में संदेह का भाव है। जिन वाक्यों में संदेह या संभावना का भाव प्रकट होता है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

- | | |
|-----------------------------------------|-------------------------------|
| (i) यदि तुम मेहनत करोगे तो सफलता पाओगे। | (ii) वाह! सुंदर फूल खिले हैं। |
|-----------------------------------------|-------------------------------|

प्रथम वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर कर रहा है, यह संकेतवाचक वाक्य है। दूसरे वाक्य में हर्ष का भाव है। जिन वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा का भाव व्यक्त होता है, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं।

चतुर्थ चरण— रचना के आधार पर वाक्यों के तीन प्रकार हैं— (i) सरल, (ii) संयुक्त, (iii) मिश्रित।

- | | |
|---------------------------------|-------------------------------------------------|
| (i) रश्मि बारिश में भीग रही है। | (ii) बारिश हो रही है और रश्मि उसमें भीग रही है। |
|---------------------------------|-------------------------------------------------|

प्रथम वाक्य में एक उद्देश्य व एक विधेय है, अतः यह सरल या सामान्य वाक्य है। दूसरे वाक्य में 'और' योजक शब्द प्रयोग में लाया गया है। जिस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतंत्र रूप से योजक शब्दों द्वारा जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदाहरण— जैसे ही बस आई, लोग उसमें चढ़ गए।

इस वाक्य में 'लोग चढ़ गए' प्रधान उपवाक्य है और 'बस आई' आश्रित उपवाक्य है। जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता तथा अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

एक प्रकार के वाक्य का दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तन को वाक्य 'रूपांतरण' कहा जाता है।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह, जो विचार या भाव को पूरी तरह व्यक्त करे, उसे वाक्य कहते हैं।
- (ii) वाक्य के दो अंग हैं— (क) उद्देश्य तथा (ख) विधेय।
- (iii) वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, वह उद्देश्य कहलाता है तथा उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।
- (iv) अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं— विधानवाचक, निषेधवाचक, संकेतवाचक, प्रश्नवाचक, आज्ञावाचक, विस्मयवाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक।
- (v) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं— सरल, संयुक्त, मिश्रित।
- (vi) सरल वाक्य में एक उद्देश्य व एक विधेय होता है।
- (vii) संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक शब्दों द्वारा जुड़े रहते हैं।
- (viii) मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और अन्य आश्रित उपवाक्य होते हैं।
- (ix) एक वाक्य को जब दूसरे वाक्य में बदलते हैं तो उसे वाक्य रूपांतरण कहते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) वाक्य में उद्देश्य व विधेय को छाँटना।
- (ii) अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद बताना।
- (iii) अर्थ के आधार पर वाक्य-परिवर्तन करना।
- (iv) संयुक्त व मिश्रित वाक्य की पहचान करना।
- (v) सरल वाक्य को संयुक्त व मिश्र में बदलना।
- (vi) रचना की दृष्टि से वाक्यों के प्रकार लिखने का अभ्यास करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखेंगे। विद्यार्थियों द्वारा उद्देश्य व विधेय की पहचान की जाएगी।
- (ii) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे। जिसमें दस वाक्य लिखे होंगे। निर्देशानुसार उनका वाक्य परिवर्तन करना होगा। सही उत्तर देने पर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (iii) तीन (ख) (ii) सरल (ग) (iii) विधानवाचक
(घ) (iii) आज्ञावाचक
2. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्रित वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य
(ङ) सरल वाक्य

3. उद्देश्य

- (क) हम सब
- (ख) माता जी
- (ग) पानी
- (घ) हमारा विद्यालय
- (ङ) राहुल

विधेय

- आज घूमने जाएँगे।
- खाना बना रही हैं।
- जोर से बरस रहा है।
- कल खुलेगा।
- कल विद्यालय नहीं गया।

4. (क) विधानवाचक वाक्य

- (ग) निषेधवाचक वाक्य
- (ङ) आज्ञावाचक वाक्य

(ख) इच्छावाचक वाक्य

- (घ) विस्मयवाचक वाक्य

5. (क) सरल वाक्य

- (ग) संयुक्त वाक्य
- (ङ) सरल वाक्य

(ख) मिश्रित वाक्य

- (घ) मिश्रित वाक्य

6. (क) श्वेता गाते हुए नाच रही है।

- (ख) वह घर आया और (उसने) गृहकार्य पूरा किया।
- (ग) जब धन आता है तो अभिमान हो जाता है।
- (घ) विनय को खेलने से रोको।
- (ङ) मेरे पिता जी दिल खोलकर दान नहीं करते हैं।
- (च) क्या पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है?
- (छ) शायद मैं आपके साथ चलूँ।
- (ज) यदि छुट्टियाँ होंगी तो हम दिल्ली अवश्य जाएँगे।

7. (क) शिक्षक ने कक्षा में आते ही पढ़ाना शुरू कर दिया।

- (ख) शेर के दिखाई देते ही सब बच्चे डर गए।
- (ग) माता जी के काम समाप्त करते ही घर में मेहमान आ गए।
- (घ) मेहनती होने के कारण वह पराजय स्वीकार नहीं करता।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— भावों व विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है। बोलते व लिखते समय भाषा में कई उतार-चढ़ाव आते हैं, उन्हें स्पष्ट करने के लिए हिंदी भाषा में कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो जाता है अर्थात् भाव का अर्थ पूर्णतया बदल जाता है। भाषा

में जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'विराम-चिह्न' कहते हैं। विराम का अर्थ है— रुकना। मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति में अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जिन विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, वे विराम-चिह्न कहलाते हैं। प्रमुख विराम-चिह्न हैं—

- | | |
|---------------------------------|-----------------------------------|
| (i) अल्पविराम (,) | (ii) अर्धविराम (;) |
| (iii) पूर्णविराम (।) | (iv) प्रश्नवाचक चिह्न (?) |
| (v) विस्मयादिबोधक (!) | (vi) उद्धरण चिह्न (“ ”) |
| (vii) योजक चिह्न (—) | (viii) निर्देशक चिह्न (—) |
| (ix) लाघव या संक्षेपक चिह्न (०) | (x) हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न (ˆ) |
| (xi) विवरण चिह्न (:-) | (xii) कोष्ठक (()) |

अधिगम का उद्देश्य—

- भाषा को शुद्ध व सार्थक बनाना।
- बोलते व लिखते समय विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करना सीखना।
- प्रमुख विराम-चिह्नों से अवगत होना।
- अर्थ की स्पष्टता के लिए सही जगह पर विराम-चिह्नों का प्रयोग करना।
- प्रत्येक विराम-चिह्न के महत्त्व को समझना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि—

- मैं कल आऊँगा।
- पिता जी ने बाज़ार से आलू, टमाटर लिए।
- तुम कब आए?

अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर उसमें प्रयुक्त विराम-चिह्नों के बारे में विद्यार्थियों को बताएँगी। पहले वाक्य के अंत में पूर्ण विराम है। दूसरे वाक्य में 'आलू, टमाटर' के बीच में अल्पविराम है तथा तीसरे वाक्य के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न है।

बोलते, पढ़ते और लिखते समय भावों से स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। आज 'विराम-चिह्न' अध्याय का अध्ययन करेंगे।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० में लिखे विभिन्न वाक्य दिखाएँगे जिसमें भिन्न-भिन्न विराम-चिह्नों का प्रयोग किया गया है।

प्रथम चरण—

- गुरु जी को नमस्कार करो।
- अलका, सिमरन, प्रेरणा और सिम्मी आज सिनेमा देखने जाएँगी।
- सूर्य उदय हुआ; चारों ओर प्रकाश फैल गया।

पहले वाक्य में पूर्ण विराम है।

किसी कथन के पूर्ण होने पर वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में यह प्रयुक्त नहीं होता। दूसरे वाक्य में अल्पविराम का प्रयोग किया गया है।

जहाँ वाक्यों में पूर्ण विराम की अपेक्षा कम समय के लिए रुकना पड़े वहाँ अल्पविराम लगाया जाता है।

तीसरे वाक्य में अर्धविराम लगाया गया है। जहाँ अल्पविराम की अपेक्षा अधिक समय के लिए रुकना पड़ता है तो इसका प्रयोग किया जाता है।

दूसरा चरण—

(i) अँधेरे में कौन खड़ा है?

(ii) हाय! भूकंप ने सब कुछ नष्ट कर दिया।

(iii) नेता जी ने कहा, “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।”

प्रथम वाक्य में प्रश्न पूछा गया है। जब वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है तो अंत में प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। दूसरे वाक्य में दुख का भाव है। हर्ष, शोक, विस्मय, घृणा, दुख आदि मनोभावों को व्यक्त करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न को प्रयुक्त किया जाता है। तीसरे वाक्य में उद्धरण चिह्न है। किसी के कथन के मूलरूप को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करने के लिए उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

तीसरा चरण—

(i) जीवन में हार-जीत लगी रहती है।

(ii) गगन ने कहा— आज मैं उदास हूँ।

(iii) डॉ० साहब आज नहीं आए।

पहले वाक्य में योजक चिह्न, दूसरे वाक्य में निर्देशक चिह्न व तीसरे वाक्य में लाघव चिह्न का प्रयोग किया गया है। समस्त शब्दों, शब्द युग्म तथा द्वंद्व समास के दोनों पदों के बीच योजक चिह्न प्रयुक्त किया जाता है। निर्देशक चिह्न का प्रयोग किसी उदाहरण, संवाद, किसी विषय की व्याख्या करने के लिए किया जाता है। शब्द का संक्षिप्त रूप बनाने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग होता है।

चतुर्थ चरण—

(i) दीपावली पर लोग दीपक जलाते हैं।

(ii) संज्ञा के तीन भेद हैं:-

(iii) रावण (क्रोधित होकर) — यह वानर कौन है?

प्रथम वाक्य में हँसपद चिह्न, दूसरे वाक्य में विवरण चिह्न व तीसरे वाक्य में कोष्ठक चिह्न का प्रयोग किया गया है। वाक्य में लिखते समय यदि कोई शब्द छूट जाता है तो हँसपद चिह्न को लगाकर ऊपर उस शब्द को लिख दिया जाता है। विवरण चिह्न का प्रयोग किसी अंश को पूर्ण करने के लिए किया जाता है तथा कोष्ठक चिह्न किसी व्यक्ति, पुस्तक या वस्तु के संबंध में सूचना देने के लिए प्रयुक्त होता है।

विस्तार से व्याख्या—

(i) लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में अर्थ की स्पष्टता को प्रकट करने के लिए निर्धारित किए गए चिह्न ‘विराम चिह्न’ कहलाते हैं।

(ii) भाषा को स्पष्ट व प्रभावशाली बनाने के लिए विराम-चिह्न अनिवार्य हैं।

(iii) हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख विराम-चिह्न निम्नलिखित हैं-

- | | |
|--------------------------------|-----------------------------|
| (क) अल्पविराम (,) | (ख) अर्धविराम (;) |
| (ग) पूर्णविराम (।) | (घ) प्रश्नवाचक (?) |
| (ङ) विस्मयादिबोधक (!) | (च) उद्धरण चिह्न (“ ”) |
| (छ) योजक (-) | (ज) निर्देशक चिह्न (-) |
| (झ) लाघव या संक्षेपक चिह्न (o) | (ञ) हंसपद या त्रुटिपूरक (^) |
| (ट) विवरण चिह्न (:-) | (ठ) कोष्ठक (()) |

(iv) विराम-चिह्नों से भाषा सार्थक व शुद्ध बनती है तथा भाषा का सौंदर्य बढ़ता है।

सीखे जाने वाले बिंदु-

- विराम-चिह्नों की अनिवार्यता को समझना।
- प्रमुख विराम-चिह्नों की पहचान करना।
- वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों के प्रयोग का अभ्यास करना।
- अल्पविराम व अर्धविराम चिह्न का अंतर जानना।
- खुशी, दुख, विस्मय, घृणा आदि भावों को व्यक्त करने के लिए विस्मयादिबोधक विराम-चिह्न का प्रयोग कर विभिन्न वाक्य बनाने में निपुणता प्राप्त करना।

मूल्यांकन- अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें एक अनुच्छेद लिखा होगा। विद्यार्थियों को उसमें उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग करना होगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- (क) (i) कोष्ठक (ii) अर्ध विराम
(iii) हंसपद (iv) उद्धरण चिह्न
(ख) (ii) तुम्हारा क्या नाम है?
- लाघव चिह्न उद्धरण चिह्न
अर्ध विराम विवरण चिह्न
कोष्ठक योजक
त्रुटिपूरक पूर्ण विराम
- (क) आप द्वार पर खड़ी हों और अपने भाई की प्रतीक्षा करें।
(ख) माँ ने पूछा, “ये आम, अमरूद और जामुन कहाँ से लाए?”
(ग) वाह! तुमने तो बाज़ी मार ली।

(घ) 'साकेत' एक महाकाव्य है।

(ङ) माता जी ने कहा, 'समय पर पहुँच जाना।'

(च) जिस व्यक्ति का हृदय पवित्र है, उसे कोई भयभीत नहीं कर सकता।

(छ) मित्रो! यहाँ आओ, बैठो।

4. (क) प्रश्नवाचक – क्या तुम आज विद्यालय नहीं जाओगे?

(ख) योजक – रोहन के माता-पिता उसे बहुत प्यार करते हैं।

(ग) उद्धरण चिह्न – (i) गांधी जी ने कहा, “करो या मरो।”

(ii) 'रामचरित मानस' तुलसी की रचना है।

(घ) अल्प-विराम – सीता, रीता और गीता खेल रही है।

5. मनोज ने अभिषेक से पूछा, “तुम कहाँ रहते हो? क्या करते हो? मैं तुम्हें नहीं जानता।” अभिषेक ने कहा, “व्यक्ति की पहचान किससे हो सकती है? क्या उसके कपड़ों से या अंग्रेज़ी बोलने से? वास्तव में व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है।”

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— वर्णों से शब्द का निर्माण होता है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तो उसे 'पद' कहते हैं। 'पद' का व्याकरणिक परिचय 'पद-परिचय' कहलाता है। पद-परिचय निम्नलिखित आधार पर किया जाता है—

संज्ञा— संज्ञा के भेद— व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ उसका संबंध।

सर्वनाम— सर्वनाम के भेद— पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ उसका संबंध।

विशेषण— विशेषण के भेद— गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक, लिंग, वचन, अवस्था, विशेष्य।

क्रिया— क्रिया के भेद— सकर्मक, अकर्मक, प्रेरणार्थक, संयुक्त व नामधातु, लिंग, वचन, काल, कर्ता, कर्म, वाच्य।

क्रियाविशेषण— क्रियाविशेषण के भेद— कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक, क्रिया, विशेष्य।

संबंधबोधक— भेद, जिससे उसका संबंध है, उसका वर्णन।

समुच्चयबोधक— भेद, योजक शब्द।

विस्मयादिबोधक— भेद, भाव का वर्णन।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) पदों का व्याकरणिक परिचय देना।
- (ii) विकारी शब्दों के भेदों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (iii) अविकारी शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना।
- (iv) लिंग, वचन, कर्ता, कर्म, क्रिया से परिचित होना।
- (v) योजक शब्दों की पहचान करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर विद्यार्थियों को पद-परिचय करने के नियम बताएँगे।

- (i) अनीता खाना बनाती है।

अनीता— व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, ‘बनाती है’, क्रिया की कर्ता।

खाना— जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग एकवचन, कर्म कारक, ‘बनाती है’, क्रिया का कर्म।

बनाती है— सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य।

यहाँ उपर्युक्त रेखांकित शब्दों का परिचय दिया गया है। वाक्य में आए पदों का पूर्ण परिचय देना ‘पद-परिचय’ कहा जाता है। आज ‘पद-परिचय’ अध्याय का अध्ययन करेंगे।

शिक्षण प्रणाली—

प्रथम चरण—

- (i) रमा कपड़े धोती है।

रमा— व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, ‘धोती है’, क्रिया की कर्ता।

कपड़े— जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्म कारक, ‘धोती है’, क्रिया का कर्म।

- (ii) मैं अभी बाज़ार से आया हूँ।

मैं— उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, ‘आया हूँ’ क्रिया का कर्ता, अपादान कारक।

- (iii) वह जा रहा है।

वह— अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, ‘जा रहा है’ क्रिया का कर्ता।

- (iv) वह फूल सुंदर है।

सुंदर— गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, मूलावस्था, ‘फूल’ विशेष्य का विशेषण।

दूसरा चरण—

- (i) बच्चे पुस्तक पढ़ते हैं।

पढ़ते हैं— सकर्मक क्रिया, बहुवचन, वर्तमान काल, पुल्लिंग, ‘बच्चे’ कर्ता की क्रिया।

- (ii) वह धीरे-धीरे चलती है।

धीरे-धीरे— रीतिवाचक क्रिया विशेषण, ‘चलती है’ क्रिया का विशेषण।

(iii) मेरे विद्यालय के पूर्व में एक अस्पताल है।

पूर्व— दिशा सूचक, संबंधबोधक, विद्यालय और अस्पताल के बीच का संबंध बता रहा है।

तीसरा चरण—

(i) अगर तुम रमेश को बुला लेते तो तुम्हारा काम आसान हो जाता।

अगर— संकेत सूचक समुच्चय बोधक।

रमेश को बुलाने और उसके द्वारा काम आसान होने की क्रिया के बीच संबंध स्थापित किया गया है।

(ii) वाह! क्या मंदिर है।

वाह!— विस्मयादिबोधक, हर्ष का भाव।

(iii) मैं दिन भर खेलता रहा।

मैं— उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

दिनभर— कालवाचक क्रियाविशेषण, 'खेलता रहा' क्रिया का विशेषण।

खेलता रहा— अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल, कर्तृवाच्य, 'मैं' कर्ता की क्रिया।

विस्तार से व्याख्या—

(i) वर्णों से शब्द निर्मित होते हैं।

(ii) जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह 'पद' कहलाता है।

(iii) पद के व्याकरणिक परिचय को पद-परिचय कहते हैं।

(iv) प्रत्येक पद का व्याकरणिक परिचय देते समय कुछ मुख्य बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

(v) अविकारी व विकारी शब्दों के पद-परिचय में अंतर होता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

(i) पद-परिचय से अवगत होना।

(ii) पद-परिचय के व्याकरणिक नियमों को जानना।

(iii) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक व विस्मयादिबोधक से परिचित होना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे। जिसमें कुछ वाक्य लिखे होंगे। विद्यार्थियों को वाक्य में रेखांकित शब्दों का व्याकरणिक परिचय देना होगा। उत्तर पुस्तिका की जाँच की जाएगी।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (i) संज्ञा

(ख) (iii) क्रिया

(ग) (ii) समुच्चयबोधक अव्यय

(घ) (ii) संबंधबोधक अव्यय

2. क्रिया का पद-परिचय देते समय निम्नलिखित बातें बतानी चाहिए—

- | | |
|-------------------------------|--------------------------|
| 1. क्रिया-भेद (अकर्मक/सकर्मक) | 2. धातु |
| 3. काल | 4. लिंग |
| 5. वचन | 6. वाच्य |
| 7. पुरुष | 8. कर्ता व कर्म का संकेत |

3. (क) मुंबई — व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्म।

(ख) विद्यालय — जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्म।

(ग) वाह! — विस्मयबोधक अव्यय, हर्ष सूचक।

(घ) बुढ़ापा — भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्ता।

(ङ) ऊपर — स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

(च) नचिकेता — व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन।

(छ) प्रेमचंद — व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, वाक्य का कर्ता।

(ज) मरा जा रहा था — संयुक्त क्रिया, भूतकाल, एकवचन, पुल्लिंग।

4. (क) (i) क्रियाविशेषण का भेद (ii) लिंग, वचन

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या — एक

सामान्य परिचय— जब बहुत से पद मिलकर एक पद का कार्य करते हैं, तो उसे 'पदबंध' कहते हैं। पदबंध का अर्थ है— पदों का समूह। पदबंध के पाँच भेद हैं—

- | | |
|-------------------------|--------------------|
| (i) संज्ञा पदबंध | (ii) सर्वनाम पदबंध |
| (iii) विशेषण पदबंध | (iv) क्रिया पदबंध |
| (v) क्रियाविशेषण पदबंध। | |

संज्ञा पदबंध— जब कोई पद समूह वाक्य में प्रयुक्त होकर संज्ञा का कार्य करता है, तो उसे 'संज्ञा पदबंध' कहते हैं।

सर्वनाम पदबंध— जब कोई पद समूह वाक्य में सर्वनाम का काम करता है, तो वह 'सर्वनाम पदबंध' कहलाता है।

विशेषण पदबंध— विशेषण का कार्य करने वाले पदबंध को 'विशेषण पदबंध' कहते हैं।

क्रिया पदबंध— वाक्य में क्रिया का कार्य करने वाले पदबंधों को क्रिया पदबंध कहते हैं।

क्रियाविशेषण पदबंध— जहाँ अनेक पद मिलकर क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण पदबंध कहते हैं।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) 'पदबंध' को जानना।
- (ii) पदबंध का महत्त्व समझना।
- (iii) 'पदबंध' के भेदों की जानकारी प्राप्त करना।
- (iv) वाक्य में 'पदबंधों' का प्रयोग करना सीखना।
- (v) भाषा के शुद्ध रूप से परिचित होना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, पाठ्यपुस्तक, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर पदबंध को स्पष्ट करेंगे।

- (i) परिश्रम करने वाले विद्यार्थी को सफलता मिलती है।
- (ii) रात-दिन मेहनत करने वाले तुम मेरे अभिन्न मित्र हो।
- (iii) परिश्रम करने वाले मजदूर की मुझे तलाश है।

पहले वाक्य में रेखांकित पद संज्ञा का कार्य कर रहा है। दूसरे वाक्य में रेखांकित पद सर्वनाम का तथा तीसरे वाक्य में रेखांकित पद विशेषण का कार्य कर रहा है।

जब वाक्य में अनेक पद मिलकर वही कार्य करते हैं, जो एक पद करता है तो उसे 'पदबंध' कहते हैं।

आज 'पदबंध' अध्याय का अध्ययन किया जाएगा।

शिक्षण प्रणाली— विभिन्न उदाहरणों द्वारा पाठ का विकास किया जाएगा।

प्रथम चरण—

- (i) सिलाई सीखने वाली महिलाओं को मशीनें बाँटी गई।
- (ii) फुटबॉल खेलने वाला खिलाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गया।
- (iii) यहाँ से थोड़ी दूर मेरा घर है।
- (iv) नशा करने वाला वह आज बेहोश हो गया।

पहले दो वाक्यों में संज्ञा पद है। वाक्य में प्रयोग में लाए गए जो पद-समूह संज्ञा का कार्य करते हैं, उन्हें संज्ञा पदबंध कहते हैं।

बाद के दो वाक्यों में सर्वनाम पदबंध हैं। वाक्य में जब एक से अधिक पद मिलकर सर्वनाम का कार्य करते हैं, तो उन्हें सर्वनाम पदबंध कहते हैं।

दूसरा चरण—

- (i) दीवार के साथ लगी अलमारी टूट गई है।
- (ii) स्कूटर चलाने वाला लड़का गिर गया।

रेखांकित पद क्रमशः 'अलमारी' व 'लड़का' की विशेषता बता रहे हैं, अतः विशेषण पदबंध हैं। जहाँ अनेक पद मिलकर संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, वहाँ विशेषण पदबंध होता है।

तीसरा चरण—

- (i) मित्र मोबाइल चला रहा है।
- (ii) राजेश अब तक जा चुका होगा।

उपर्युक्त रेखांकित पद क्रिया पदबंध हैं। वाक्य में क्रिया का कार्य करने वाले पदबंध को 'क्रिया पदबंध' कहते हैं।

चतुर्थ चरण—

(i) कबूतर छत पर बैठा है।

(ii) वह धीरे-धीरे चल रही थी।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित पद 'क्रियाविशेषण पदबंध' हैं 'क्रियाविशेषण' का कार्य करने वाले पदबंध को 'क्रियाविशेषण' पदबंध कहते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) जब एक से अधिक पद परस्पर मिलकर एक पद का कार्य करते हैं, तो उन्हें पदबंध कहते हैं।
- (ii) पदबंध के पाँच भेद हैं— संज्ञा पदबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया पदबंध, क्रियाविशेषण पदबंध।
- (iii) वाक्य में प्रयुक्त जो पदसमूह संज्ञा का कार्य करता है, उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं।
- (iv) वाक्य में जो पदसमूह सर्वनाम का कार्य करता है, उसे संज्ञापदबंध कहते हैं।
- (v) जहाँ वाक्य में प्रयुक्त पदसमूह संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें 'विशेषण' पदसमूह कहते हैं।
- (vi) जहाँ वाक्य में प्रयुक्त पदसमूह एक ही क्रिया का कार्य करता है, वह 'क्रिया पदबंध' कहलाता है।
- (vii) जहाँ एक पदसमूह क्रिया की विशेषता बताता है, उसे 'क्रिया विशेषण' पदबंध कहते हैं।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) 'पदबंध' से अवगत होना।
- (ii) संज्ञा पदबंध व विशेषण पदबंध के अंतर को समझना।
- (iii) संज्ञा पदबंध व सर्वनाम पदबंधों की पहचान करना।
- (iv) क्रिया विशेषण का स्पष्टीकरण उदाहरण सहित करना।
- (v) पद और पदबंध का अंतर स्पष्ट करना।
- (vi) पदबंधों को वाक्यों में प्रयुक्त करने में कुशलता प्राप्त करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका द्वारा विद्यार्थियों को एक वर्कशीट दी जाएगी, जिसमें कुछ वाक्य लिखे होंगे। इन वाक्यों में विद्यार्थियों को पदबंध छाँटकर उनके नाम भी लिखने होंगे।
- (ii) विशेषण पदबंध के पाँच उदाहरण लिखने के लिए दिए जाएँगे। वर्कशीट की जाँच की जाएगी। सुधार कार्य भी करवाया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- | | | |
|---------------------------|------------------------|-------------------------|
| 1. (क) (iii) संज्ञा पदबंध | (ख) (ii) अव्यय पदबंध | (ग) (ii) क्रिया पदबंध |
| (घ) (iii) विशेषण पदबंध | (ङ) (ii) सर्वनाम पदबंध | |
| 2. (क) संज्ञा | (ख) पदबंध | (ग) क्रियापद |
| | | (घ) क्रिया-विशेषण पदबंध |

3. पदबंध

- (क) लंबा और काला आदमी
(ख) जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री
(ग) आधी रात तक
(घ) पढ़ा नहीं जाता
(ङ) मेरे घर के चारों ओर बगीचा

भेद

- संज्ञा पदबंध
संज्ञा पदबंध
क्रियाविशेषण पदबंध
क्रिया पदबंध
संज्ञा पदबंध

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— भाषा की अभिव्यक्ति दो तरह से होती है— मौखिक और लिखित। शब्दों के अशुद्ध उच्चारण से भाषा में अशुद्धियाँ होती हैं। व्याकरण के नियमों के ज्ञान के अभाव में तथा क्षेत्रीय बोलियों के प्रभाव के कारण अशुद्धियाँ बढ़ जाती हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है जो एक वैज्ञानिक लिपि है। यह जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी भी जाती है किंतु फिर भी उच्चारण की अशुद्धता के कारण भाषा में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों में वृद्धि हो जाती है। अतः उच्चारण की शुद्धता की ओर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

अधिगम का उद्देश्य—

- शब्दों के स्वरूप को जानना।
- वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना।
- वाक्य-संशोधन करना।
- शुद्ध भाषा का ज्ञान प्राप्त करना।
- मानक वर्तनी की जानकारी को प्राप्त करना।
- व्याकरण के नियमों को जानना।

अध्यापन सामग्री— श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, पाठ्यपुस्तक, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर उनका शुद्ध रूप विद्यार्थियों को बताएँगे क्योंकि प्रायः वे भाषा की शुद्धता का ध्यान नहीं रखते।

अशुद्ध रूप

आधीन

समाजिक

फैंकना

शुद्ध रूप

अधीन

सामाजिक

फैंकना

अत्याधिक	अत्यधिक
परिवारिक	पारिवारिक
अलौकिक	अलौकिक
सेनिक	सैनिक
विमार	बीमार

आज विद्यार्थियों की सहभागिता से 'कुछ सामान्य अशुद्धियाँ' अध्याय का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

शिक्षण प्रणाली—

प्रथम चरण—

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
बहुव्रीहि	बहुव्रीहि
शृंगार	शृंगार
अविष्कार	आविष्कार
ऐसा	ऐसा
अनुग्रहीत	अनुगृहीत
आशीर्वाद	आशीर्वाद
उज्ज्वल	उज्ज्वल
संन्यासी	संन्यासी

अशुद्ध उच्चारण के कारण विद्यार्थी भाषा में उपर्युक्त अशुद्धियाँ करते हैं। निरंतर अभ्यास से इनमें सुधार किया जा सकता है।

दूसरा चरण—

- | | |
|--------------------------------------|--------------------------------------------------|
| (i) वन में अनेकों पेड़ हैं। | (ii) आलू का फ़सल खराब हो गया। |
| (iii) यहाँ ताजा गाय का दूध मिलता है। | (iv) मेरे पास केवल मात्र एक कमरा है। |
| (v) रमेश को काटकर सेब खिलाओ। | (vi) दिल्ली में कई दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं। |

उपर्युक्त सभी वाक्य अशुद्ध हैं। इनके शुद्ध रूप हैं—

- | | |
|--------------------------------------|--------------------------------------|
| (i) वन में अनेक पेड़ हैं। | (ii) आलू की फ़सल खराब हो गई। |
| (iii) यहाँ गाय का ताजा दूध मिलता है। | (iv) मेरे पास केवल एक कमरा है। |
| (v) सेब काटकर रमेश को खिलाओ। | (vi) दिल्ली में कई दर्शनीय स्थल हैं। |

उच्चारण एवं वर्तनी के साथ-साथ विद्यार्थी अधिकतर पदक्रम, वचन, लिंग, शब्दों की आवृत्ति आदि की अशुद्धियाँ कर देते हैं। व्याकरण के नियमों की जानकारी से इन्हें दूर किया जा सकता है।

विस्तार से व्याख्या—

- वर्तनी की अशुद्धियाँ अशुद्ध उच्चारण के कारण होती हैं।
- वाक्य-संरचना की अशुद्धियों को दूर करने के लिए व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करना अधिक आवश्यक है।
- मानक वर्तनी की जानकारी प्राप्त करने से अशुद्धियों को दूर करने में सफलता मिल सकती है।
- अशुद्धियों के शुद्ध रूप का अभ्यास कराकर इनमें सुधार किया जा सकता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) सुगठित भाषा को सीखना।
- (ii) भाषा की शुद्धता की ओर ध्यान देना।
- (iii) व्याकरणिक नियमों का ज्ञान प्राप्त करना।
- (iv) लिखित अभिव्यक्ति का निरंतर अभ्यास करना।
- (v) मानक वर्तनी सीखना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर कुछ अशुद्ध शब्द लिखेंगे। विद्यार्थियों से उनका शुद्ध रूप लिखाया जाएगा।
- (ii) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें दस अशुद्ध वाक्य लिखे होंगे। विद्यार्थियों को उनका शुद्ध रूप लिखना होगा। अगले दिन वर्कशीट की जाँच की जाएगी।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) प्रदर्शनी (ख) अतिशयोक्ति (ग) नमस्कार (घ) कवयित्री (ङ) संन्यासी
(च) श्रृंगार (छ) आशीर्वाद
2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗
3. (क) उसके पास केवल दो कमीजें हैं। (ख) कंस बड़ा दुर्जन था।
(ग) मुझसे भात नहीं खाया जाता। (घ) मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।
(ङ) उत्सव में अनेक लोग उपस्थित थे।
4. वसंत ऋतु में हमारी वार्षिक परीक्षा होगी। इसमें हम उत्तीर्ण हो गए तो हमारे परिवार के सभी सदस्य कश्मीर जाएँगे।
5. (क) हमारी दो दिन की छुट्टी है।
(ख) मेरे पास कुल दस रुपए हैं।
(ग) उसकी दुर्दशा देखी नहीं जाती।
(घ) आज हमारे गृह में अतिथि आ रहे हैं।
(ङ) संन्यासी ने भक्तों को आशीर्वाद दिया।
6. उन्नति सम्मान
ईर्ष्या बीमारी
श्रृंगार पूजनीय
परीक्षा स्नेह
7. (क) अध्ययन (ख) सामान (ग) परीक्षा (घ) दीन
(ङ) शारीरिक (च) ऋण

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— कोई वाक्यांश जब अपना सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देता है तो उसे 'मुहावरा' कहते हैं। मुहावरे का प्रयोग वाक्यांश के रूप में किया जाता है। इसका अंत क्रिया से होता है। अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

लोकोक्ति का अर्थ है— लोक + उक्ति। लोक में प्रचलित कोई उक्ति। लोकोक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है। ये जीवन के अनुभवों पर आधारित होती हैं। किसी कथन की पुष्टि या उपदेश के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। इनका प्रयोग भाषा को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) मुहावरे व लोकोक्तियों को जानना।
- (ii) मुहावरे व लोकोक्तियों का प्रयोग कर सार्थक वाक्य बनाना।
- (iii) भाषा-कौशल का विकास करना।
- (iv) भाषा के सौंदर्य को बढ़ाना।
- (v) लोकोक्तियों को कंठस्थ करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका विभिन्न उदाहरणों द्वारा मुहावरे व लोकोक्तियों का अध्ययन विद्यार्थियों को कराएँगे।

- (i) **अपना राग अलापना**— अपनी प्रशंसा करना।
सुधीर जब देखो अपने बेटे की योग्यता का राग अलापता रहता है।
- (ii) **काया-पलट होना**— बिलकुल बदल जाना।
शहर जाकर रामसिंह की काया-पलट हो गई।
- (iii) **दूर के ढोल सुहावने**— दूर की चीजें अच्छी लगती हैं।
रमेश पैसा कमाने के लिए विदेश चला गया लेकिन वहाँ उसे कोई नौकरी नहीं मिली, इसे कहते हैं—दूर के ढोल सुहावने।
- (iv) **चोर की दाढ़ी में तिनका**— अपराधी को शंका रहती है।
पुलिस को आता देखकर रोशन भागने लगा इसे कहते हैं— चोर की दाढ़ी में तिनका।

उपर्युक्त दो मुहावरे व दो लोकोक्तियाँ हैं। जब कोई पदबंध अपना सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देता है तब उसे मुहावरा कहते हैं।

लोगों द्वारा कही गई उक्तियों को लोकोक्तियाँ कहते हैं। आज मुहावरे और लोकोक्तियाँ का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

शिक्षण प्रणाली—

प्रथम चरण— कुछ मुहावरे व लोकोक्तियाँ सी०डी० द्वारा दिखाई जाएँगी जिन्हें सीखकर विद्यार्थी अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बना सकते हैं।

- (i) आकाश के तारे तोड़ना — असंभव कार्य करना।
- (ii) जले पर नमक छिड़कना — पीड़ा को और बढ़ाना।
- (iii) पहाड़ टूटना — भारी विपत्ति आना।
- (iv) बाल बाँका न होना — कुछ न बिगड़ना।
- (v) सिर आँखों पर बिठाना — बहुत आदर करना।

दूसरा चरण—

- (i) अधजल गगरी छलकत जाय — ओछा आदमी बहुत दिखावा करता है।
- (ii) अपना हाथ जगन्नाथ — स्वयं किया गया कार्य सबसे अच्छा होता है।
- (iii) घर का भेदी लंका ढाए — आपसी फूट से हानि होती है।
- (iv) जिसकी लाठी उसकी भैंस — बलशाली की ही चलती है।
- (v) काला अक्षर भैंस बराबर — बिलकुल अनपढ़।

तीसरा चरण— मुहावरे व लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग—

- (i) **होश उड़ना—** डर जाना
पुलिस को अपनी ओर आता देखकर सुरेश के होश उड़ गए।
- (ii) **घोड़े बेचकर सोना—** निश्चित होकर सोना।
अपनी बेटी के विवाह के बाद रामनाथ घोड़े बेचकर सो रहा है।
- (iii) **जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं—** ज्यादा बोलने वाले कुछ काम नहीं कर सकते।
तुम्हारी खोखली धमकियों से मैं डरने वाली नहीं क्योंकि जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।
- (iv) **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—** सभी एक जैसे।
मैं अपने किसी भी साथी पर भरोसा नहीं कर सकता। वे पाँचों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

उपर्युक्त मुहावरों व लोकोक्तियों को समझने से ज्ञात होता है कि लोकोक्तियाँ पूर्णवाक्य होती हैं और मुहावरे वाक्यों के अंश होते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) वे शब्द-समूह जो सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ व्यक्त करते हैं, उन्हें मुहावरे कहते हैं।
- (ii) लोकोक्ति का अर्थ है— समाज में प्रचलित कोई उक्ति। ये समाज में लोगों के अनुभवों पर आधारित होती हैं।
- (iii) मुहावरों का प्रयोग वाक्यांश के रूप में किया जाता है।
- (iv) लोकोक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है। किसी कथन की पुष्टि के लिए लोकोक्तियाँ वाक्य में प्रयुक्त होती हैं।
- (v) मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा के सौंदर्य को बढ़ाने व उसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) मुहावरे व लोकोक्तियों से अवगत होना।
- (ii) मुहावरे व लोकोक्ति के अंतर को समझना।

- (iii) मुहावरे व लोकोक्तियाँ का वाक्य में प्रयोग करना।
- (iv) मुहावरों के लाक्षणिक अर्थ को समझना।
- (v) अर्थ को देखकर मुहावरा लिखने का अभ्यास करना।
- (vi) मुहावरों व लोकोक्तियों से रिक्त स्थान की पूर्ति करना।

मूल्यांकन—

- (i) अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें लिखे मुहावरे व लोकोक्तियों के अर्थ व उनका वाक्य में प्रयोग उन्हें करना होगा।
- (ii) विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक से पाँच-पाँच मुहावरे व लोकोक्तियाँ को छाँटकर उनको अर्थ सहित अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखकर लाएँगे। वर्कशीट व उत्तरपुस्तिका की जाँच की जाएगी व सुधार कार्य भी कराया जाएगा।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) (i) पगड़ी उछालना (ख) (ii) भीगी बिल्ली बनना (ग) (ii) तलवे चाटना
(घ) (ii) सिर धुनना
2. (क) (i) अयोग्य व्यक्ति अपनी अधिक ही प्रशंसा करता है।
(ख) (ii) कथनी और करनी में अंतर होना।
(ग) (ii) वस्तु एक प्रयोग करने वाले अनेक।
3. (क) टेढ़ी खीर (ख) गीदड़ भभकियों से
(ग) अंधे की लाठी (घ) आकाश पाताल एक
(ङ) आँखों के तारे
4. राई का पर्वत बनाना → अंगारे उगलना
पानी-पानी होना → पर्दाफाश करना
लाल-पीला होना → आड़े हाथों लेना
कलई खोलना → तिल का ताड़ बनाना
खरी-खोटी सुनाना → घड़ों पानी पड़ना
5. उन्नीस-बीस का अंतर — बहुत कम अंतर होना
आग में घी डालना — क्रोध भड़काना
घोड़े बेच कर सोना — निश्चित होना
खाक छानना — मारे-मारे फिरना
आस्तीन का साँप — कपटी मित्र
लोहा मानना — श्रेष्ठ मानना
आशा जाग उठना — उम्मीद होना
पलकें बिछाना — आदर-सम्मान करना

6. (क) भीगी बिल्ली बनना (ख) खाक छानना
 (ग) मुँह में पानी भर आना (घ) लोहे के चने चबाना
 (ङ) कान भरना (च) उन्नीस-बीस का अंतर
7. (क) एक अनार सौ बीमार (ख) काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती।
 (ग) अधजल गगरी छलकत जाए (घ) जिसकी लाठी उसकी भैंस
 (ङ) सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली (च) आँख का अंधा, नाम नयनसुख
 (छ) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद
8. (क) शराब की दुकान में काम करने के कारण लोग मुझे भी शराबी समझने लगे हैं। सच है—कोयले की दलाली में हाथ काले होते हैं।
 (ख) बेटे के जन्मदिन पर मेट्रो में साथ सफ़र करने वाले मित्र भी घर आ धमके। सच ही कहा गया है— मान न मान मैं तेरा मेहमान।
 (ग) लगता था कि महानगरों की जिंदगी बड़ी सुहावनी होगी। गाँव छोड़कर यहाँ आया, तो समझ गया कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।
 (घ) हमारे गाँव का करोड़ीमल किसान दाने-दाने को तरस रहा है। यह तो वही बात हुई—आँख का अंधा, नाम नयनसुख।
 (ङ) हमारे किराएदार किराया दिए बिना ही मकान छोड़ना चाहते थे, पर जाते-जाते आधा किराया दे गए। चलो—भागते भूत की लंगोटी ही सही।
 (च) पाँचवीं और आठवीं कक्षा के छात्रों में कोई अंतर नहीं है। वे सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।
 (छ) महापुरुष प्रत्येक परिस्थिति में एक से रहते हैं। कहा भी गया है—सावन हरे न भादों सूखे।

क्रियाकलाप

छात्र स्वयं करें।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— अपठित का अर्थ है— जिसे पढ़ा न गया हो, अर्थात् ऐसा गद्यांश या पद्यांश जिसे विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी पाठ्यपुस्तक में न पढ़ा हो। अपठित बोध का उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिभा का विकास करना है क्योंकि वे किसी की सहायता के बिना गद्यांश व पद्यांश में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हैं। प्रश्न लघुत्तरीय व बहुविकल्पीय दोनों प्रकार के हो सकते हैं। अपठित गद्यांश व पद्यांश के उत्तर लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

- दिए गए गद्यांश या पद्यांश को दो-तीन बार अच्छी तरह से पढ़कर उसके मूलभाव को समझना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर गद्यांश या पद्यांश के आधार पर अपने शब्दों में लिखने चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर की भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।

- (iv) विराम-चिह्नों का प्रयोग वाक्य में उचित स्थान पर करना चाहिए।
- (v) शीर्षक संक्षिप्त व सटीक होना चाहिए।
- (vi) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देते समय सोच-समझकर सही विकल्प चुनना चाहिए।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) विद्यार्थियों की भाव-ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।
- (ii) विद्यार्थियों के पढ़ने-समझने-लिखने के कौशलों का विस्तार करना।
- (iii) व्याकरण सम्मत भाषा लिखने का अभ्यास करना।
- (iv) सरल व सटीक भाषा लिखने में दक्षता प्राप्त करना।
- (v) विद्यार्थियों की अर्थ-ग्रहण व मौखिक चिंतन करने की क्षमता का विकास करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० के माध्यम से एक अपठित गद्यांश व उससे संबंधित प्रश्न दिखाएँगे। विद्यार्थियों के सहयोग से प्रश्नों के उत्तर दिये जाएँगे।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प को (✓) चिह्न से अंकित कीजिए—

अनुशासन जीवन को इतना आदर्श बना देता है कि व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा कुछ विशेष दिखाई पड़ता है। उसका हर ओर सम्मान होता है तथा सफलता उसके कदम चूमती दिखाई देती है। अनुशासनहीन मनुष्य संसार में लेशमात्र भी सफल नहीं होता बल्कि वह अपने पतन के साथ-साथ समाज का विनाश भी करता है। आज के अधिकांश छात्रों में इसका अभाव दिखाई दे रहा है। जरा-सी बात के लिए वाहनों को तोड़ना, परीक्षा में नकल करना, बिना टिकट यात्रा करना इत्यादि में वे अपनी शान समझते हैं। आज के छात्र भविष्य के निर्माता हैं, उन्हें स्वयं को अनुशासन में रखना सीखना होगा।

(i) आज के छात्रों में किसका अभाव दिखाई देता है?

- (क) अनुशासन (ख) आत्मविश्वास (ग) सफलता (घ) सम्मान

उत्तर (क) ✓

(ii) छात्र किन बातों में अपनी शान समझते हैं?

- (क) परीक्षा में नकल करना (ख) अनुशासन में रहना
(ग) राष्ट्र कल्याण (घ) परिश्रम करने में

उत्तर (क) ✓

(iii) 'अनुशासित' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

- (क) ईत (ख) त (ग) इत (घ) ईय

उत्तर (ग) ✓

(iv) 'सफलता-असफलता' में कौन-सा समास है?

- (क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्वंद्व (घ) द्विगु

उत्तर (ग) ✓

(v) गद्यांश का शीर्षक है—

- (क) भविष्य के निर्माता (ख) अनुशासनहीनता (ग) वास्तविक जीवन (घ) समाज का विनाश

उत्तर (ख) ✓

शिक्षण प्रणाली-

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर सही विकल्प पर (✓) चिह्न अंकित कीजिए-

जलते-जलते दीये को यह हो आया अभिमान।
लगा सोचने-सूर्य चंद्र से भी मैं अधिक महान।
सूरज तो करता है आकर, दिन में सिर्फ प्रकाश।
किंतु रात में अंधकार का, मैं ही करता विनाश।
'शशि' भी मिटा नहीं पाता है, अंदर का अंधकार।
मैं ही घर के कोने-कोने को करता उजियारा।
इस घमंड में सिर ऊँचाकर, लगा व्योम में दृष्टि।
अहंकार की आँखों से वह, देख रहा था सृष्टि।

(i) दीया किससे अपनी तुलना कर रहा है?

(क) सूर्य से (ख) चंद्र से (ग) सूर्य व चंद्र से (घ) प्रकाश से

उत्तर (ग) ✓

(ii) दीया घमंड से सिर ऊँचा करके किस ओर देख रहा है?

(क) अंधकार (ख) शशि (ग) सृष्टि (घ) व्योम

उत्तर (घ) ✓

(iii) सूर्य का पर्यायवाची नहीं है-

(क) सूरज (ख) भास्कर (ग) भूधर (घ) दिनेश

उत्तर (ग) ✓

(iv) 'अंधकार' का विलोम शब्द है-

(क) प्रतिकूल (ख) प्रकाश (ग) परोक्ष (घ) पतन

उत्तर (ख) ✓

(v) 'दृष्टि' शब्द है-

(क) तत्सम (ख) तद्भव (ग) देशज (घ) विदेशी

उत्तर (क) ✓

उपर्युक्त पद्यांश के आधार पर अपठित बोध का अभ्यास कराया जाएगा।

विस्तार से व्याख्या-

- अपठित बोध का अर्थ है ऐसा गद्यांश व पद्यांश जिसे पाठ्यक्रम कर निर्धारित पाठ्यपुस्तक में पहले न पढ़ा गया हो।
- गद्यांश व पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर परीक्षा में पूछे जाते हैं।
- प्रश्नों के उत्तर गद्यांश अथवा पद्यांश को पढ़कर उसी के आधार पर अपने शब्दों में देने आवश्यक हैं।
- उत्तर सरल, सटीक व स्पष्ट होना चाहिए।
- प्रश्नों के उत्तर लिखते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान रखना पड़ता है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) गद्यांश व पद्यांश को दो या तीन बार ध्यान से पढ़ना।
- (ii) उनके मूल भाव को ग्रहण करना।
- (iii) प्रश्नों के उत्तर गद्यांश व पद्यांश के आधार पर देने का अभ्यास।
- (iv) प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में देने में कुशलता प्राप्त करना।
- (v) सरल भाषा का प्रयोग करना।
- (vi) सटीक उत्तर देने में दक्ष होना।
- (vii) भाषा का व्याकरण सम्मत होना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें एक गद्यांश व पद्यांश लिखा होगा। विद्यार्थियों को गद्यांश व पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर अध्यापक/अध्यापिका के निर्देशानुसार लिखने होंगे। सही उत्तर देने पर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

गद्यांश-1

- | | | |
|-----------------|------------------------|------------------|
| (क) (iv) जल (✓) | (ख) (i) जल प्रदूषण (✓) | (ग) (iv) प्र (✓) |
| (घ) (ii) इत (✓) | (ङ) (i) जल प्रदूषण (✓) | |

गद्यांश-2

- | | |
|--------------------------|-----------------------------------------|
| (क) (i) मनुष्य स्वयं (✓) | (ख) (i) वे कष्टों में पैदा होते हैं (✓) |
| (ग) (iii) बुद्धि (✓) | (घ) (i) प्रमाण (✓) |
| (ङ) (iii) आविष्कारक (✓) | |

गद्यांश-3

- | |
|---------------------------------------------|
| (क) (i) वे अपनी पत्नी पर निर्भर रहते थे (✓) |
| (ख) (iii) लोकप्रियता कम होने के कारण (✓) |
| (ग) (iii) शाली (✓) |
| (घ) (ii) सम् + न्यास (✓) |
| (ङ) (ii) लोकप्रियता—स्त्रीलिंग (✓) |

गद्यांश-4

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (क) (i) युद्ध (✓) | (ख) (i) सुखी समाज (✓) |
| (ग) (ii) सदा + एव (✓) | (घ) (iii) ईय (✓) |
| (ङ) (iii) निर्माण (✓) | |

गद्यांश-5

- (क) (iv) वे सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करते थे (✓)
(ख) (i) सत्य, अहिंसा के (✓)
(ग) (ii) सत्य, अहिंसा (✓)
(घ) (ii) स्वयं अहिंसा का पुजारी हिंसा से मारा गया (✓)
(ङ) (i) सभी धर्मों के लोगों से (✓)

काव्यांश-1

- (क) (i) संकटों का डटकर सामना करो (✓)
(ख) (ii) वह समस्त बाधाओं से लड़ा है (✓)
(ग) (iv) ललिता (✓)
(घ) (i) एकवचन (✓)
(ङ) (i) सब + ही (✓)

काव्यांश-2

- (क) (i) हँसना (✓)
(ख) (i) विनम्र रहकर सबका सम्मान करना (✓)
(ग) (ii) निःस्वार्थ भाव से प्राणियों की सेवा (✓)
(घ) (i) तत्सम (✓)
(ङ) (i) प्रकृति हमारी शिक्षिका (✓)

काव्यांश-3

- (क) (i) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन (✓)
(ख) (iv) तांडव (✓)
(ग) (i) अर्जुन के धनुष को (✓)
(घ) (iii) वीर (✓)
(ङ) (i) महा + उच्चार (✓)

काव्यांश-4

- (क) (i) तारे (✓)
(ख) (i) बीता समय वापस नहीं आता (✓)
(ग) (ii) आकाश शोक नहीं मनाता (✓)
(घ) (ii) जो बीत गई सो बात गई (✓)
(ङ) (iii) स्त्रीलिंग, पुल्लिंग (✓)

- (क) (ii) दुनिया भर से अलग (✓)
 (ख) (iii) हिम + आलय (✓)
 (ग) (iv) शहीदों की कहानी कहने वाले (✓)
 (घ) (i) महानता (✓)
 (ङ) (iii) वतन, कुरबान (✓)

अभ्यास कार्य

1. (क) (क) (ii) समय (✓)
 (ख) (iii) आलस्य (✓)
 (ग) (ii) वह समय व्यर्थ नहीं गँवाता (✓)
 (घ) (ii) सत् + सम् (✓)
 (ङ) (iv) दुरुपयोग (✓)
- (ख) (क) (iii) नेमिनाथ, आदिनाथ (✓)
 (ख) (ii) आदिनाथ (✓)
 (ग) (i) नेमिनाथ (✓)
 (घ) (iv) एक प्रकार का पत्थर (✓)
 (ङ) (iii) भाई (✓)
- (ग) (क) (iii) महाराज 'भगीरथ' के कारण (✓)
 (ख) (ii) हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में (✓)
 (ग) (i) उत्तर भारत के मैदानों को (✓)
 (घ) (iv) कीटाणु पैदा नहीं होते हैं। (✓)
 (ङ) (ii) सुरसरि, देवनदी (✓)
- (घ) (क) (iv) उपर्युक्त सभी (✓)
 (ख) (iv) उल्लास का (✓)
 (ग) (iv) प्रकृति के निकट ले जाते हैं। (✓)
 (घ) (ii) देशभक्ति और त्याग, बलिदान की भावना जगाने के लिए (✓)
 (ङ) (ii) याद और त्योहार है। (✓)
- (ङ) (क) (ii) सहनशील (✓)
 (ख) (iii) स्थायी विषाद (✓)

- (ग) (ii) सुख-दुख में समान भाव से रहने का (✓)
- (घ) (i) बेवकूफ़ (✓)
- (ङ) (ii) सद्गुणों का (✓)

2. (क) (क) (i) लालच (✓)

- (ख) (iii) मरकर भी देश को गुलाम नहीं होने देंगे (✓)
- (ग) (iii) विशेषण (✓)
- (घ) (ii) धन-संपत्ति (✓)
- (ङ) (i) अग्नि (✓)

(ख) (क) (i) वर्षा (✓)

- (ख) (i) जल में (✓)
- (ग) (i) दर्पण (✓)
- (घ) (iii) उपमा (✓)
- (ङ) (iii) दर्पण (✓)

(ग) (क) (ii) फूल (✓)

- (ख) (iv) वीरों के पथ पर बिछना (✓)
- (ग) (ii) वनमाली (✓)
- (घ) (ii) सड़क (✓)
- (ङ) (ii) एक (✓)

(घ) (क) (iii) राष्ट्र की अपनी भाषा (✓)

- (ख) (i) एकता, अखंडता (✓)
- (ग) (iv) सभी में प्रेम भाव (✓)
- (घ) (i) मानवता का भाव फैलाने के लिए (✓)
- (ङ) (ii) बंधु भाव (✓)

(ङ) (क) (iv) तन, मन, जीवन के अतिरिक्त भी यदि कुछ उसके पास है, तो वह उसे भी दे देना चाहता है। (✓)

- (ख) (iii) मातृभूमि का (✓)
- (ग) (iii) अकिंचन (✓)
- (घ) (ii) मातृभूमि के चरणों की धूल (✓)
- (ङ) (i) आ (✓)

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— प्रत्येक व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक साधनों का प्रयोग करता है। उनमें पत्र-लेखन का विशेष महत्त्व है। यह विचारों की अभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। पत्र लिखते समय कुछ बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है—

- (i) पत्र की भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
- (ii) पत्र का लेखन सुंदर व साफ़ होना चाहिए।
- (iii) पत्र लिखते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान रखना चाहिए।
- (iv) औपचारिक-पत्र प्रभावशाली व आवश्यक सूचनाओं के आधार पर लिखा जाना चाहिए।
- (v) पत्र की विषयवस्तु स्पष्ट होनी चाहिए।
- (vi) विचारों में क्रमबद्धता का ध्यान रखना चाहिए।
- (vii) पत्र में स्थिति के अनुकूल संबोधन व अभिवादन होना चाहिए।

पत्रों के प्रकार— (क) अनौपचारिक-पत्र (क) औपचारिक-पत्र।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) पत्र-लेखन की कला में पारंगत होना।
- (ii) अनौपचारिक-पत्र लिखते समय भावों को प्रधानता देना।
- (iii) औपचारिक-पत्र लिखते समय पद के अनुकूल संबोधन, अभिवादन, विषयवस्तु व उद्देश्य लिखना।
- (iv) व्यावसायिक व कार्यालयी-पत्र लेखन में दक्षता प्राप्त करना।
- (v) पत्र के प्रारूप को ध्यान में रखकर पत्र-लेखन की क्षमता का विकास करना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका श्यामपट्ट पर पत्र का प्रारूप लिखकर विद्यार्थियों को पत्र-लेखन सिखाएँगे।

- | | |
|-----------------------------------------|--------------|
| (i) भेजने वाले का पता | (ii) दिनांक |
| (iii) प्राप्त कर्ता का पद तथा नाम व पता | (iv) विषय |
| (v) संबोधन | (vi) अभिवादन |
| (vii) पत्र की विषयवस्तु का विस्तार | (viii) समापन |
| (ix) हस्ताक्षर | |

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर विद्यार्थियों को पत्र-लेखन की कला सिखाई जाएगी।

शिक्षण प्रणाली— सी०डी० दिखाकर—

प्रथम चरण—

अनौपचारिक पत्र

पिता को पैसा मँगवाने के लिए पत्र लिखिए—

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक: 21 अप्रैल 20xx

पूज्य पिताजी प्रणाम,

परसों आपका पत्र मिला, जिससे परिवार की कुशलता का पता चला। पिताजी! हमारे विद्यालय की ओर से विद्यार्थियों को तीन दिन के लिए नैनीताल के पास 'जिम कार्बेट पार्क' लेकर जा रहे हैं। यह स्थान विविध वन्य जीवों व वनस्पतियों के लिए प्रसिद्ध है। मेरे अधिकांश मित्र वहाँ जा रहे हैं। आप भी मुझे वहाँ जाने की अनुमति दे दीजिए। विद्यालय की ओर से 4000 रु० शुल्क माँगा गया है। कुछ अतिरिक्त रूपयों की भी आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए 6000 रु० भेज दीजिए। माताजी को प्रणाम।

आपका पुत्र

क०ख०ग०

दूसरा चरण—

औपचारिक पत्र

विद्यालय के प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्य

दरबारी लाल डी०ए०वी० स्कूल

पीतमपुरा

दिल्ली

विषय— आर्थिक सहायता हेतु

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस प्रार्थना-पत्र द्वारा आपका ध्यान अपने घर की आर्थिक स्थिति की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले वर्ष मेरे पिता जी का देहांत हो गया। मेरी माता जी स्कूल में अध्यापिका हैं। हम तीन बहिन-भाई पढ़ने वाले हैं। उनके अतिरिक्त हमारे घर में कोई और कमाने वाला नहीं है। ऐसी विषम परिस्थिति में विद्यालय का शुल्क जमा कराने में असमर्थ हूँ।

मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरा शुल्क माफ़ करने की कृपा करे ताकि मैं अपना अध्ययन जारी रख सकूँ। मैंने सदैव कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। सातवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में मैंने 98 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। मेरे उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी प्रार्थना स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत कीजिए।

धन्यवाद

भवदीय

आठवी 'सी' का छात्र

दिनांक: 20 अप्रैल 2020

विस्तार से व्याख्या—

- (i) पत्र-लेखन अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है।
- (ii) पत्र के द्वारा संबंधियों व अधिकारियों तक अपनी बात पहुँचाई जा सकती है।
- (iii) पत्र-लेखन के समय कुछ बातों का ध्यान रखना पड़ता है।
- (iv) अनौपचारिक-पत्र निजी पत्र होते हैं जिसमें भावों की प्रधानता होती है।
- (v) औपचारिक-पत्र व्यापारियों, प्रकाशकों, कार्यालयों व कंपनियों को लिखे जाते हैं। अतः इन पत्रों में पत्र के उद्देश्य, तथ्यों व सूचनाओं को प्रमुखता दी जाती है।
- (vi) पत्र की भाषा सरल, स्पष्ट व सटीक होनी चाहिए।
- (vii) औपचारिक-पत्र में व्याकरण के नियमों का ध्यान रखना नितांत आवश्यक है।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) पत्र-लेखन की महत्ता को समझना।
- (ii) पत्रों के सभी अंगों का ध्यान रखना।
- (iii) पत्र के प्रारूप को जानना।
- (iv) पत्र लिखते समय मर्यादा का ध्यान रखना।
- (v) संबोधन व अभिवादन संबंध व पद के अनुकूल लिखना।
- (vi) पत्र भेजने वाले व पाने वाले का पता स्पष्ट व सुंदर लिखावट में लिखना।
- (vii) पत्र की भाषा का ग्रहणशील होना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक-एक वर्कशीट देंगे जिसमें औपचारिक एवं अनौपचारिक-पत्र का प्रारूप लिखा होगा। अध्यापक/अध्यापिका के निर्देशानुसार विद्यार्थियों को वर्कशीट में पत्र लिखकर लाना होगा। वर्कशीट की जाँच की जाएगी व कार्य के आधार पर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

प्रश्नोत्तर

1. हिंदी की पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक विक्रेता को पत्र।

नवयुग विद्यालय

सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-110070

सेवा में,

व्यवस्थापक महोदय

प्रभात पब्लिकेशंस प्रा.लि.

10, दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

विषय : हिंदी की पुस्तकें मँगवाने के संबंध में।

महोदय,

मैं नवयुग विद्यालय सरोजिनी नगर का छात्र हूँ। मैं अपने विद्यालय के पुस्तकालय का सहायक सचिव हूँ। मुझे अपने विद्यालय के पुस्तकालय के लिए कुछ पुस्तकें माँगवानी हैं। कृपया ये पुस्तकें शीघ्रातिशीघ्र हमारे विद्यालय में भिजवा दें। पुस्तकें नई व अच्छी स्थिति में होनी चाहिए। पुस्तकों की कीमत पर ध्यान दें। 20% कमीशन काटकर पुस्तकें भिजवाएँ। विद्यालय कार्यालय की ओर से समस्त पुस्तकों का भुगतान तुरंत कर दिया जाएगा।

पुस्तकों का विवरण निम्नवत है—

सूची	संख्या	सूची	संख्या
1. राजपाल हिंदी शब्द कोश 3 प्रतियाँ		4. मेरा परिवार —महादेवी वर्मा	5 प्रतियाँ
2. प्रेमचंद की कहानियाँ 5 प्रतियाँ (मानसरोवर भाग 1 से 8)		5. लहर, आँसू, झरना	4 प्रतियाँ (प्रत्येक)
3. हिंदी नैतिक शिक्षा 10 प्रतियाँ (ब्रह्मदेव शास्त्री)		6. आधुनिक निबंध	4 प्रतियाँ

सधन्यवाद,

भवदीय

क. ख. ग. (सहायक सचिव)

2. छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को पत्र।

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

ज्ञान ज्योति पब्लिक स्कूल

गाज़ियाबाद,

उत्तर प्रदेश।

विषय : छात्रवृत्ति के संबंध में।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का छात्र हूँ। मैं नर्सरी कक्षा से यहाँ पढ़ रहा हूँ और अब आठवीं कक्षा के वर्ग 'अ' में हूँ। मेरे दो छोटे भाई-बहन भी यहाँ दूसरी और नर्सरी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

निवेदन यह है कि अचानक व्यवसाय में घाटा हो जाने के कारण पिता जी को अपना व्यवसाय बंद करना पड़ा। अब वे किसी दूसरे की दुकान पर केवल 5000 रुपये मासिक वेतन पर काम कर रहे हैं। इतनी कम आय में परिवार का खर्च चलाना और स्कूल की फीस देना उनके लिए कठिन हो गया है। मैं अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहता हूँ, जिससे मैं बड़े होकर उनकी मदद कर सकूँ। मैं हमेशा अपनी कक्षा में अव्वल आता हूँ। खेलों, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं और नाटकों में मैंने कई पुरस्कार जीते हैं। यदि आप मुझे विद्यालय की ओर से छात्रवृत्ति दिलवा दें, तो मैं अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए छोटे भाई-बहन की पढ़ाई भी जारी रख सकूँगा। मैं आपके इस उपकार के लिए जीवनभर आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क. ख. ग.

कक्षा आठवीं 'अ'

3. मित्र के जन्मदिन पर बधाई-पत्र।

फ्लैट नं. 270

वसंत कुंज

सैक्टर 7,

नई दिल्ली-110070

दिनांक 10-10- 20xx

प्रिय मित्र सुयश

सप्रेम नमस्कार,

कुशलोपरांत आशा करता हूँ कि तुम भी मुंबई में अपने माता-पिता के साथ सकुशल होगे। तुम्हारे जन्मदिन का निमंत्रण-पत्र मुझे यथासमय मिल गया है। बड़ी इच्छा थी कि 16 अक्टूबर को तुम्हारे जन्मदिन के अवसर पर स्वयं मुंबई जाकर तुम्हें बधाई दूँ, परंतु पिता जी के मित्र की बेटी की शादी 18 अक्टूबर को है। पिता जी अपने मित्र की बेटी की शादी में रहना अधिक उचित समझ रहे हैं। 16 अक्टूबर को सगाई, है इसलिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं स्वयं तो आ न सकूँगा, पर तुम्हारे लिए एक छोटा-सा उपहार भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि वह तुम्हें पसंद आएगा और तुम उसे स्वीकार करोगे। मेरी ओर से तुम्हें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई। मेरे माता-पिता भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। अपने माता-पिता से मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

क. ख. ग.

4. क्षेत्र में मच्छरों के प्रकोप से संबंधित स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र।

परीक्षा भवन

क. ख. ग. विद्यालय,

नई दिल्ली,

दिनांक 10-08- 20xx

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी

दिल्ली नगर निगम,

नई दिल्ली।

विषय : क्षेत्र में मच्छरों के प्रकोप के संबंध में।

महोदय,

मेरा विद्यालय दिल्ली के प्रसिद्ध विद्यालयों में से एक है। हमारे विद्यालय के पास रिज रोड के जंगल और चारों तरफ हरी-भरी झाड़ियाँ हैं। पिछले महीने बरसात ज्यादा हुई। पानी का निकास न होने के कारण यहाँ मच्छरों का प्रकोप फैल रहा है। दिन के समय कक्षा में छिपे मच्छर बच्चों को काट

रहे हैं। इससे बच्चों के बीमार पड़ने की संभावना बढ़ती जा रही है। आपसे अनुरोध है कि मच्छरों के बढ़ते प्रकोप से बचाव हेतु आवश्यक कदम उठाए जाएँ। आशा है कि आप मेरे सुझाव पर ध्यान देंगे और शीघ्रतिशीघ्र क्षेत्र को मच्छरों के प्रकोप से मुक्ति दिलाएँगे।

सधन्यवाद,

भवदीय,

क. ख. ग.

5. राखी भेजने पर धन्यवाद देते हुए बड़ी बहन को पत्र।

सी-232

पटेल नगर

नई दिल्ली,

दिनांक 13-08- 20××

आदरणीय दीदी

सादर चरण स्पर्श,

आपकी भेजी हुई राखी और उपहार मुझे अभी-अभी प्राप्त हुआ। कल राखी का त्योहार है। मैं इस राखी को सुबह ही स्नान करने के बाद बाँध लूँगा। इस राखी में आपका स्नेह और आशीर्वाद छिपा हुआ है। आशा करता हूँ आप और जीजा जी नागपुर में सकुशल होंगे।

आप दोनों मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए। मेरी इच्छा है कि अगले वर्ष मैं स्वयं राखी बाँधवाने आपके पास नागपुर आऊँ। परिवार के सभी सदस्यों को मेरा प्रणाम कहिएगा। समयानुसार पत्रोत्तर दीजिएगा।

आपका छोटा भाई,

क. ख. ग.

6. छुट्टियों में केरल की सैर के पश्चात मित्र को पत्र।

234, चितरंजन पार्क

नई दिल्ली-110019

दिनांक 10-01- 20××

प्रिय मित्र राहुल,

सप्रेम नमस्कार

कुशलपरांत आशा करता हूँ कि तुम भी अपने परिवार सहित कुशलपूर्वक होगे। इस बार जनवरी माह में छुट्टी होते ही पिता जी हमें केरल घुमाने ले गए। दिल्ली में जब कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी उस समय हम केवल एक कमीज़ पहनकर केरल के प्रदूषण रहित गर्म मौसम का आनंद ले रहे थे। वहाँ की हरीतिमा मन को मोह लेती है। लौंग, इलायची और कहवे के खेत मैंने जीवन में पहली बार देखे। तिरुवनंतपुरम का विष्णु मंदिर, गणेश मंदिर, लक्ष्मी मंदिर अति सुंदर और भव्य थे। हाथी पार्क में मैंने हाथियों को केले खिलाए। वहाँ के सभी लोग मलयालम भाषा में बातचीत करते हैं। मछुआरों को

समुद्र तट पर मछली पकड़ते हुए देखा। स्त्रियाँ पोंगल के लिए घर के द्वार पर फूलों से अल्पना बना रही थीं। गुड़ से बने मीठे चावल का प्रसाद बहुत स्वादिष्ट था। वहाँ देखने के लिए बहुत कुछ है। मैंने पिता जी से कहा है कि मैं साल भर ध्यानपूर्वक पढ़ाई करूँगा और जाड़े की छुट्टियों में केरल और दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों की सैर करने जाऊँगा। पिता जी मेरे विचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। तुम भी केरल की सैर का कार्यक्रम अवश्य बनाओ। अपने माता-पिता से मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

क. ख. ग.

7. पारिवारिक कुशलता का समाचार देते हुए पिता जी को पत्र।

मकान नं. 131,

दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

दिनांक 30-01- 20××

पूजनीय पिता जी,

सादर चरण स्पर्श,

कुशलोपरांत आशा करता हूँ कि आप मद्रास में अपने कार्यालय का कार्य करते हुए पूर्णतः स्वस्थ एवं सकुशल होंगे। यहाँ परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ एवं सकुशल हैं। दादा जी, दादी जी और माता जी प्रतिदिन सुबह सैर करने पार्क में जाते हैं। आजकल दिल्ली का मौसम ठीक है। मैं नियमित रूप से विद्यालय जा रहा हूँ। भैया समय पर अपने ऑफिस जा रहे हैं। भाभी परिवार के सभी लोगों का बहुत ध्यान रखती हैं। आशा है कि आप वहाँ अपने खानपान का पूरा ध्यान रखते होंगे। समयानुसार पत्र लिखिएगा। यहाँ की चिंता न करें। आप मेरा चरण स्पर्श स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

क. ख. ग.

8. विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा की व्यवस्था के संबंध में प्रधानाचार्य को पत्र।

परीक्षा भवन

अ. ब. स. विद्यालय,

मुज़फ़्फ़रनगर,

उत्तर प्रदेश

दिनांक 07-07- 20××

सेवा में,

प्रधानाचार्य

अ. ब. स. विद्यालय,

मुज़फ़्फ़रनगर,

उत्तर प्रदेश

विषय : विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा की व्यवस्था के संबंध में।

महोदय,

विनम्र निवेदन यह है कि मैं कक्षा-8 का छात्र हूँ। वर्तमान समय की माँग को देखते हुए हमारे विद्यालय में छात्रों के लिए कंप्यूटर शिक्षा की समुचित व्यवस्था अति आवश्यक है। कंप्यूटर का विषय आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए अनिवार्य होना चाहिए, जिससे सभी छात्र विद्यालयों में ही कंप्यूटर का प्रयोग करना सीख जाएँ। आजकल कंप्यूटर शिक्षा के बिना शिक्षण और ज्ञान की पूर्णता को स्वीकार नहीं किया जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर संचालन की आवश्यकता पड़ती है। आशा है, छात्रों के भविष्य एवं समय की माँग के अनुरूप आप शीघ्रतिशीघ्र हमारे विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षण का प्रबंध करवाने की कृपा करेंगे। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद सहित,

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क. ख. ग.

कक्षा 8, वर्ग 'अ'

9. वर्षा के दिनों में दिल्ली की सड़कों की दुर्दशा के कारण आए दिन होने वाली दुर्घटनाओं के संबंध में समाचार-पत्र के संपादक को पत्र।

105, दरियागंज

नई दिल्ली-110002

दिनांक 20-08- 20xx

सेवा में,

प्रधान संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

बहादुरशाह ज़फर मार्ग,

नई दिल्ली-110001

विषय : वर्षा के दिनों में सड़कों की दुर्दशा और उसके कारण आए दिन होने वाली दुर्घटनाओं के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र द्वारा जनता, अधिकारियों, नेताओं और आपका ध्यान वर्षा के दिनों में दिल्ली की सड़कों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। प्रतिवर्ष वर्षा के मौसम में नई बनी सड़कों में भी गड्ढे बन जाते हैं। साइकिल सवार या दुपहिया चालक इन गड्ढों में फँस जाते हैं या पलट जाते हैं, जिससे जान-माल की हानि होती है। दरियागंज में नालियों का निकास ठीक न होने के कारण जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पैदल यात्रियों का चलना दूभर हो जाता है। सड़कों पर कीचड़ जम जाता है। यह स्थिति प्रतिवर्ष होती है। सरकार को इसपर ध्यान देना चाहिए। गर्मी के मौसम में नालियों की सफाई की व्यवस्था होनी चाहिए, तभी स्वच्छ दिल्ली का सपना पूरी तरह सार्थक होगा।

सधन्यवाद,

भवदीय

क. ख. ग. (अध्यक्ष)

मोहल्ला सुधार समिति,

दरियागंज

10. मनीऑर्डर गुम हो जाने के संबंध में क्षेत्र के डाकपाल (पोस्टरमास्टर) को पत्र।

3946, डी. 7, वसंत कुंज,

नई दिल्ली-110070

दिनांक 05-01-20xx

सेवा में,

डाकपाल महोदय,

मुख्य डाकघर

नई दिल्ली

विषय : मनीऑर्डर गुम हो जाने के संबंध में।

महोदय,

मैं वसंतकुंज डी. 7 का निवासी हूँ। मेरे चाचाजी ने मेरे जन्मदिन पर 2001 रुपये का मनीऑर्डर पूना से यहाँ दिल्ली भेजा था। एक माह से अधिक समय बीत चुका है, परंतु वह मनीऑर्डर मुझे आज तक नहीं मिला। यह मनीऑर्डर दिनांक 11 नवंबर को भेजा गया था, जिसका नं. डी.एल. 530F है। आज तक इस मनीऑर्डर का कुछ पता नहीं चल सका। डाक विभाग की लापरवाही के परिणामस्वरूप मनीऑर्डर का कोई सुराग नहीं मिला। पूना डाकघर ने मनीऑर्डर भेजने की रसीद दिखाई है। वसंत कुंज के डाकघर में कुछ पता न चलने पर विवश होकर मैं मुख्य डाकपाल महोदय को पत्र लिख रहा हूँ। कृपया जल्दी ही मनीऑर्डर का पता लगाएँ।

सधन्यवाद,

भवदीय,

क. ख. ग.

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय- किसी एक विषय पर क्रमबद्धता से संक्षिप्त रूप में लिखना अनुच्छेद-लेखन कहलाता है। अनुच्छेद लिखते समय कुछ बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- (i) पूर्ण अनुच्छेद मूल भाव से संबंध रखता हो।
- (ii) भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
- (iii) भाषा व्याकरण सम्मत होनी चाहिए।
- (iv) विचारों में क्रमबद्धता आवश्यक है।
- (v) वाक्य छोटे व प्रभावशाली हों।
- (vi) विषय के अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।
- (vii) अनुच्छेद शब्द-सीमा के अंतर्गत ही लिखा जाना चाहिए।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) अनुच्छेद-लेखन की क्षमता का विकास करना।
- (ii) व्याकरण के नियमों को सीखना।
- (iii) वाक्य विन्यास को प्रभावशाली व ग्रहणशील बनाना।
- (iv) संक्षिप्तीकरण की कला को सीखना।
- (v) केंद्रीय भाव को समझने में दक्ष होना।
- (vi) संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका अनुच्छेद का विषय बताकर उससे संबंधित कुछ संकेत बिंदु विद्यार्थियों को बताएँगे।

शब्द सीमा – 80 से 100 तक।

अनुच्छेद – आत्म सम्मान

संकेत बिंदु— (i) आत्म सम्मान का महत्त्व (ii) विषम परिस्थितियों का सामना (iii) धर्म व सत्य का पथ (iv) सामाजिक प्रतिष्ठा।

मानव जीवन में आत्मसम्मान की अधिक महत्ता है। इससे मनुष्य में शक्ति, उत्साह आदि गुण उत्पन्न हो जाते हैं। आत्मसम्मान की व्यक्ति विषम परिस्थितियों का डटकर सामना कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। वह जीवन में धर्म व सत्य के पथ पर चलता हुआ सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है। ऐसा व्यक्ति ईर्ष्या-द्वेष जैसे विकारों से मुक्त होता है तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार रहता है।

संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद का विस्तार शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर किया जाता है।

शिक्षण प्रणाली— अध्यापक/अध्यापिका 'पराधीन सपनेहु सुख नहीं' विषय पर अनुच्छेद लिखना सिखाएँगे। विद्यार्थियों का सहयोग भी लिया जाएगा। शब्द-सीमा 80 से 100 तक।

संकेत बिंदु— (i) पंक्ति का अर्थ (ii) पराधीनता से हानि (iii) पक्षियों की प्रवृत्ति (iv) स्वतंत्रता का महत्त्व।

पंक्ति का अर्थ है— पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख की प्राप्ति नहीं होती। स्वतंत्रता मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रकृति वन, पेड़-पौधे, नक्षत्र आदि सब स्वतंत्र हैं। पराधीनता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है क्योंकि इसमें केवल शोषण ही होता है। पराधीनता व्यक्ति के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाती है। उसमें हीनभावना आ जाती है। एक अनजाना भय व मानसिक तनाव उसे जीवन के सच्चे सुख को अनुभूति नहीं होने देते। पिंजरे में बंद पक्षी भी स्वतंत्रता की कामना कर खुले आकाश में विचरण करना चाहता है। पिंजरा बंद पक्षी को अनेक स्वादिष्ट व्यंजन भी वह सुख नहीं दे पाते जो उसे स्वतंत्र आकाश की उड़ान में मिलते हैं। अतः व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है। हमारा कर्तव्य है कि हम आपसी फूट को त्याग कर देश की स्वाधीनता की रक्षा करें।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) अनुच्छेद निबंध का संक्षिप्त रूप है।
- (ii) एक ही विषय का क्रमिक विस्तार किया गया है लेकिन शब्द-सीमा का ध्यान रखना पड़ता है।
- (iii) अनुच्छेद लिखते समय व्याकरण के सभी नियमों का पालन आवश्यक है।
- (iv) भाषा सरल, स्पष्ट व सटीक होनी चाहिए।

- (v) अनुच्छेद में विषय का अधिक विस्तार नहीं होता।
- (vi) विचारों में क्रमबद्धता होनी चाहिए।
- (vii) अनुच्छेद में तर्क-वितर्क के लिए कोई स्थान नहीं होता।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) अनुच्छेद लेखन सीखना।
- (ii) विषय से संबंधित विचारों को ही लिखना।
- (iii) वाक्य-विन्यास का प्रभावशाली होना।
- (iv) अनुच्छेद लिखते समय पक्ष-विपक्ष से दूर रहना।
- (v) शुद्ध व परिमार्जित भाषा का प्रयोग करना।
- (vi) वर्तनी संबंधी तथा अन्य प्रकार की अशुद्धियों से बचना।
- (vii) मानक भाषा का प्रयोग करना सीखना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें अनुच्छेद का नाम व उसके संकेत बिंदु लिखे होंगे। विद्यार्थी उसके अनुसार अनुच्छेद लिखेंगे।

अनुच्छेद— पर्यावरण-प्रदूषण

संकेत बिंदु— पर्यावरण— प्रदूषण का अर्थ, कारण— वनों को काटना, इमारतों का निर्माण, कारखानों से उठने वाला धुँआ, वाहनों का धुँआ, हानियाँ, समाधान।

अनुच्छेद की जाँचकर अंक दिए जाएँगे।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) विज्ञान से लाभ-हानि

विज्ञान के चमत्कारों को देखकर उसकी तुलना किसी दैवीय शक्ति से की जा सकती है। विज्ञान ने अनेक असंभव कार्यों को संभव कर दिखाया है। इसकी दिन-प्रतिदिन बढ़ती उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता। स्वास्थ्य, कृषि, मनोरंजन, परिवहन, संचार आदि सभी क्षेत्रों में विज्ञान के चमत्कार ही चमत्कार दिखाई देते हैं। अनेक असाध्य रोगों के उपचार ढूँढ़कर विज्ञान हमारा जीवन-रक्षक बन चुका है। कैंसर, प्लेग जैसे लाइलाज रोग अब पूरी तरह ठीक किए जा सकते हैं तो वहीं रुके हुए दिल में धड़कनें लौटाई जा सकती हैं। कृषि के उत्पादन को उच्चतम स्तर पर ले जाना तथा देश की खाद्य-समस्या को दूर करना विज्ञान द्वारा ही संभव हुआ। सिनेमा, विद्युत, हवाई-जहाज, सुदूर क्षेत्रों में बैठे लोगों से बात कर पाना कंप्यूटर आदि विज्ञान के चमत्कार तो हैं ही, साथ ही साथ मानव जाति को दिए गए वरदान भी हैं। विज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यही है कि मानव के जीवन को सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण कर इसने विघ्नों को दूर कर उसके समस्त कष्टों को हर लिया है। परंतु जैसे प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं, वैसे ही हर चीज के लाभ और हानि दोनों पक्ष होते हैं। यदि विज्ञान सर्जनकर्ता है, तो विनाशकर्ता भी है। मानव-जीवन को सुख-सुविधाओं के झूलने में झुलाने वाला विज्ञान एक ही परमाणु-बम से उसे लुप्त भी कर सकता है। रसायनों की ऐसी नदी

विज्ञान ने बहाई कि जीवन-पोषक फल-सब्जियाँ, जल आदि प्राणघातक गरल बन गए हैं। इसकी बनाई नकली दुनिया से मनुष्य इतना भ्रमित हुआ है कि उसकी भावनाएँ कुंठित और संवेदनाएँ मृत हो गई हैं। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि यह बुरा है, परंतु यह है कि हमने इसका उपयोग गलत किया है। अतः विज्ञान का सदुपयोग करते हुए मानव कल्याण हेतु इसका उपयोग करना चाहिए।

(ख) महँगाई की मार

जब बाजार में वस्तुओं की कीमतें इतनी ऊपर उठ जाएँ कि आम आदमी की पहुँच से दूर हो जाएँ, तो उस स्थिति को महँगाई कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवनयापन के लिए भोजन, वस्त्र और मकान की आवश्यकता तो हर हाल में ही होती है। हर आम व्यक्ति से लेकर अमीर व्यक्ति तक इन तीनों आवश्यक वस्तुओं का उपभोग अवश्य करता है। समाज के प्रत्येक मनुष्य को यदि ये वस्तुएँ इसलिए न मिल पाएँ, क्योंकि ऊँची कीमतों के कारण वे सामान्य जन की पहुँच से बाहर हैं तो यह स्थिति महँगाई की स्थिति मानी जाएगी। महँगाई अपने आप में तो एक समस्या है ही, साथ ही साथ कई अन्य समस्याओं को भी जन्म देती है जैसे—भुखमरी, बेरोजगारी, अराजकता आदि। जब विशेष वर्ग के लोग अन्न जैसी चीजें खरीद ही नहीं पाएँगे, तो भुखमरी के शिकार बनेंगे ही। मुद्रास्फीति अर्थात् अधिक पैसों में बहुत कम वस्तुएँ मिलना व्यक्ति के जीवन-स्तर को बहुत नीचे गिरा देती है। भूख व्यक्ति को असामाजिक कार्यों की ओर धकेलती है, जिससे समाज में अराजकता फैलने लगती है। आम आदमी अर्थात् निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग महँगाई की मार को अधिक झेलता है, क्योंकि उसकी आय का स्तर ऊँची कीमतों के कारण उसे कुछ खरीदने ही नहीं देता। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा उत्पादन की मात्रा का कम होना महँगाई का मूल कारण है। जनसंख्या पर नियंत्रण रखते हुए यदि उत्पादन को बेहतर बनाने पर ध्यान दिया जाय, तो महँगाई को बढ़ने से रोका जा सकता है।

(ग) विपत्ति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत

मित्रता एक वरदान है। मित्र की आवश्यकता हर किसी को होती है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में मित्र बनाता है। बाल्यकाल से हमारे मित्र बनने लगते हैं। युवावस्था में तो मित्रों की भरमार होने लगती है। बाल्यकाल और युवावस्था की मित्रता बहुत स्थायी नहीं होती। इस समय की मित्रता हमारी तत्कालीन आवश्यकताओं से बहुत प्रभावित होती है। जो भी हमारी पढ़ाई आदि में मदद कर दे, साथ खेल ले, घूमने चल दे वहीं हमें मित्र लगने लगता है। ऐसे मित्र तो बहुत मिल जाते हैं परंतु सच्चे मित्र अत्यंत कठिनाई से मिलते हैं। समस्त जीवन के पथ में साथ देने वाले तथा हर विपत्ति में साथ देने वाले मित्रों की संख्या भले ही बहुत अधिक न हो, बस एक-दो भी हों और सच्चे हों, तो मानो एक बहुत बड़ी निधि ही मिल जाती है। सच्चे मित्र सदा हमारा भला चाहते हैं। वे हमारी हर बात को सदा उचित नहीं मानते और सही और गलत में अंतर करना जानते हैं। वे हमें कभी कुमार्ग पर चलने नहीं देते और यदि हम ऐसी गलती कर भी दें, तो वे हमें सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत कपटी मित्र सदा हमारी 'हाँ' में 'हाँ' मिलाते हैं और हमारे गलत कामों को बढ़ावा देते हैं। हमें सदा अपने मित्रों के चुनाव में सतर्कता बरतनी चाहिए क्योंकि कठिन समय अथवा विपत्ति आने पर ये ही सबसे पहले हमें छोड़कर निकल लेते हैं।

तुलसीदास जी ने कहा है—

बिपतिकाल कर सत मन नेहा।

श्रुति कह संत मित्र गुन एहा।

कृष्ण-सुदामा की मित्रता आज तक इसीलिए उदाहरण बनी हुई है, क्योंकि कृष्ण ने राजा होते हुए भी सुदामा जैसे दीन-हीन को अपना मित्र स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं किया। उनका आदर-सम्मान किया तथा उनकी स्थिति जानकर जो कुछ भी देय था वो देते समय न तो समय लगाया और न ही अहसान जताया। प्रत्येक सच्चा मित्र वही होता है जो विपत्ति की कसौटी पर स्वर्ण सम खरा उतरता है।

2. (क) एक विचित्र स्वप्न

निद्रा जब आती है, तो अपने साथ सपनों का पिटारा लाती है। प्रत्येक व्यक्ति कभी-न-कभी स्वप्न अवश्य देखता है। कुछ लोगों को स्वप्नों में बीता समय, पुराने प्रियजन दिखाई देते हैं तो कुछ लोग भविष्य के सपने देखते हैं। बच्चे तो प्रायः अपनी मनपसंद चीजों के ही सपने देखते हैं। कभी कुछ सपने डरावने आते हैं तो कभी विचित्र आते हैं। अभी पिछले सप्ताह खेलता-खेलता मैं आराम करने के लिए कुछ देर सोफे पर लेटा ही था कि मेरी आँख लग गई। मैंने देखा कि मैं चंद्रमा पर घूम रहा हूँ। दूर-दूर तक कोई प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था। मुझे हैरानी हो रही थी कि मैं यहाँ पहुँचा कैसे? दिमाग चकरा रहा था कि इस निर्जन जगह में क्या करूँ? किससे पूछूँ कि यहाँ कैसे आया और घर पर सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, वहाँ कैसे जाऊँ? बहुत रोना आ रहा था, पर कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। अब भूख-प्यास भी लगनी शुरू हो गई थी। मैं जोर-जोर से चिल्ला रहा था। माँ! माँ! माँ! लेकिन मेरी आवाज भला कहाँ तक पहुँचती! कोई घर वगैरह तो था नहीं, जहाँ से माँ निकलकर आ जाती। तभी मुझे लगा कि कोई आ रहा है, मैंने डर कर आँखें बंद कर लीं। ‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ कोई मुझसे पूछ रहा था। आँखें खोलीं तो सामने वही बुढ़िया नानी हाथ में झाड़ू लिए खड़ी थी जिसे मैं धरती से चाँद पर देखना आया था। मैं खुशी से उछल पड़ा—नानी तुम! बूढ़ी नानी बोलीं—‘अधिक रिश्तेदारी जोड़ने की आवश्यकता नहीं है, निकलो यहाँ से।’ मैंने कहा—बस मैं भी यही चाहता हूँ। झाड़ू लेने की कोशिश की तो नानी मुझसे उलझ पड़ीं और एक जोरदार धक्का दिया। धड़ाम। नीचे गिरते ही मेरी आँख खुल गई। पता चला कि अब तक मैं स्वप्न देख रहा था।

(ख) दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले रिएल्टी शो— कितने सच्चे – कितने झूठे!

आजकल दूरदर्शन पर निजी चैनल्स भारी संख्या में मौजूद हैं। हर चैनल पर कोई-न-कोई रियल्टी-शो अवश्य चल रहा है। किसी पर बच्चों का तो किसी पर युवाओं का, किसी कार्यक्रम में गाने गवाए जाते हैं तो किसी पर नृत्य दिखाए जाते हैं, किसी कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी चल रही है तो कहीं खतरनाक खेल चल रहे हैं। कार्यक्रम को ‘रियल्टी-शो’ तो कहा जाता है परंतु भाग लेने वाले चेहरे जाने-पहचाने ही होते हैं। कुछ ख्याति प्राप्त कलाकार प्रायः इन कार्यक्रमों में निर्णायक बन कर बैठे होते हैं। किसी प्रस्तुति में खूब तालियाँ बजती हैं। प्रत्येक प्रतिभागी के घर और परिस्थितियों को दिखाया जाता है कि कितनी कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए यहाँ तक वह पहुँचा है। खूब वाह-वाही होती है, आँसुओं के सैलाब आते हैं। गीत-संगीत वाला कार्यक्रम हो तो लगभग हर प्रतिभागी बहुत सुरीला और लय, सुर-ताल को जानने वाला होता है, वहीं नृत्य में संपूर्ण कला

का प्रदर्शन तो होता ही है, पूरे शरीर को जिस ढंग से वे तोड़-मरोड़ लेते हैं, उसे देखकर लगता ही नहीं, कि मात्र एक सप्ताह में इतना सीखा जा सकता है। दर्शकों से वोट माँगे जाते हैं, प्रस्तुति नहीं वरन् वोटों के आधार पर प्रतिभागियों को कार्यक्रम से बाहर भी किया जाता है। रोने-धोने का एक अजीब-सा सिलसिला शुरू हो जाता है। निर्णायक, प्रतिभागी, उसके माता-पिता तथा उपस्थित जनता भी आँसू बहाती है परन्तु 'यह तो नियम है' कहकर एक-एक प्रतिभागी की विदाई होती है। अंततः एक दिन ऐसे प्रतिभागी को विजेता घोषित कर दिया जाता है, जिसके बारे में कभी सोचा भी नहीं था। कौन बुद्धिमान दर्शक ऐसा नहीं है जिसे पता न चलता हो कि ये सभी कार्यक्रम झूठ के पुलिंदे मात्र हैं। इससे इनकी सच्चाई पर प्रश्नचिह्न लग जाता है जो इन कार्यक्रमों को असलियत को उजागर करता है।

(ग) परीक्षा भवन में प्रश्न-पत्र बँटने से पाँच मिनट पहले का एहसास

परीक्षा के दौरान परीक्षा-भवन में बैठे छात्र को एक अलग ही अनुभूति से दो-चार होना पड़ता है। परीक्षक के कक्षा में प्रवेश करते ही सभी छात्र अपनी जगह पर व्यवस्थित हो जाते हैं और उनके द्वारा बोला गया शब्द 'सायलेंस' (Silence) गूँजते ही बस दो ही आवाजें सुनाई देती हैं—पंखे के चलने की आवाज़ तथा अपने दिल के धड़कने की आवाज़। घड़ी पर दृष्टि जाते ही समय अब शेष बचे पाँच मिनट में ठहर जाता है। छात्र ईश्वर को याद करते हैं, अध्यापकों को स्मरण करते हैं तथा अपनी गलतियों के लिए मन ही मन क्षमा-याचना करते हैं ताकि पेपर में कुछ गलत न हो। और तो और, माँ-पिता की याद भी आने लगती है और ऐसा लगता है मानो उनसे बिछुड़े हुए बहुत लंबा समय व्यतीत हो गया है। कई बार तो आँसू भी आँखों में भर आते हैं। एक-दूसरे को सब अजनबी नजरों से देख रहे होते हैं और परीक्षक को जबरदस्ती मुस्कान का उपहार देते हैं, ताकि वह अपनी कृपादृष्टि हम पर बनाए रखे। कई छात्रों को तो इस समय भी मन ही मन उत्तर दोहराने की आवश्यकता अनुभव होने लगती है और घबराहट के मारे उन्हें कुछ भी याद नहीं आता। वे और जोर से आँखें मीच कर जैसे ही खोलते हैं तो सामने प्रश्न पत्र रखा होता है। फिर सभी के हाथ तेजी से दौड़ने लगते हैं अपनी उत्तर पुस्तिका पर।

(घ) नर हो, न निराश करो मन को

नर को नारायण का अंश माना गया है तथा अन्य सभी प्राणिजगत में सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। उसके पास सर्वोत्तम बुद्धिबल होता है। मानव जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। जीवन में सुख है तो दुख भी है, लाभ है तो हानि भी है और आशा है तो निराशा भी है। विपरीत परिस्थितियाँ होने पर कई व्यक्ति स्वयं को परास्त मानकर निराशा के गर्त में चले जाते हैं। निराशा में डूबा व्यक्ति न तो ढंग से सोच पाता है और न ही ढंग से कोई काम कर पाता है। उसका विवेक उसका साथ नहीं देता, अतः उचित-अनुचित का ज्ञान भी नहीं रह जाता। ऐसे ही लोगों के लिए एक प्रेरणादायी वाक्य है कि 'नर हो, न निराश करो मन को'। निराशा का दौर है, वक्त सहायक नहीं है और परिस्थितियाँ भी विपरीत हैं। तो क्या हुआ, हमारा आंतरिक बल, हमारी सामर्थ्य और क्षमता, हमारा आत्मबोध तो अभी समाप्त नहीं हुआ। यदि हमारे पास सर्वश्रेष्ठ बुद्धिबल है तो उसी के सहारे अपनी समस्त मानसिक और शारीरिक शक्तियों को जाग्रत करो, और पुनः उठ जाओ। सोचो कि यदि सुख, लाभ और आशा का समय नहीं रहा तो निश्चित ही दुख, हानि और निराशा का समय भी नहीं रहेगा। कर्म अभी निष्फल है तो क्या हुआ, आने वाले समय में सफल अवश्य होगा। अतः मन को निराशा नहीं आशा का दीपक दिखाओ और निरंतर कर्म पथ पर डटे रहो।

पाठ योजना

कालांशों की संख्या – एक

सामान्य परिचय— ‘निबंध’ शब्द दो शब्दों के योग से बना है। निः + बंध जिसका अर्थ है— अच्छी तरह से बँधा हुआ। किसी विषय से संबंधित अपने भावों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना, ‘निबंध’ कहलाता है। इसमें लेखक की अनुभूतियों का अधिक महत्त्व होता है। निबंध लिखते समय कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

- (i) विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त कर उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।
- (ii) निबंध को तीन भागों में बाँट लेना चाहिए— (क) भूमिका/प्रस्तावना (ख) विषय वस्तु (ग) उपसंहार/निष्कर्ष।
- (iii) निबंध का आरंभ किसी सूक्ति, कविता या उदाहरण देकर करना चाहिए।
- (iv) विषय का विस्तार करते समय भी किसी कविता की पंक्तियाँ, सूक्तियाँ, किसी प्रसिद्ध साहित्यकार के कथन दिए जा सकते हैं।
- (v) भाषा प्रभावशाली होनी चाहिए।
- (vi) विचारों में क्रमबद्धता का होना जरूरी है।
- (vii) भाषा लिखते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान रखना चाहिए।
- (viii) निबंध का आरंभ व अंत प्रभावशाली होना चाहिए ताकि पाठक के मस्तिष्क पर उसकी अमिट छाप बन जाए।

अधिगम का उद्देश्य—

- (i) ‘निबंध’ लिखने की कला सीखना।
- (ii) विचारों को व्यवस्थित करने में निपुण होना।
- (iii) विचारों या भावों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का ज्ञान सीखना।
- (iv) शुद्ध, व्याकरण सम्मत भाषा को जानना व लिखित अभिव्यक्ति में उसका प्रयोग करना।
- (v) कविताओं की पंक्तियाँ, सूक्तियों आदि को कंठस्थ कर वाक्य में उसका प्रयोग करने में दक्ष होना।

अध्यापन सामग्री— सी०डी०, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, वर्कशीट, आदि।

अध्यापन से पूर्व गतिविधि— अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० के माध्यम से निबंध के संकेत बिंदु लिखकर निबंध लिखना सिखाएँगे।

निबंध – परोपकार

संकेत बिंदु— भूमिका, प्रकृति द्वारा परोपकार की शिक्षा, भारतवर्ष की परंपरा, परोपकार से लाभ, उपसंहार।

‘परोपकार’ शब्द दो शब्दों के योग से बना है— पर + उपकार अर्थात् दूसरों की भलाई। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है—

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

मैथिलीशरण गुप्त ने ‘मनुष्यता’ की महत्ता लिखी है—

मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे,
यह पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।

प्रकृति भी परोपकार का संदेश देती है। सूर्य अपना प्रकाश जगत के सब प्राणियों को देता है। नदी स्वयं अपना जल नहीं पीती। वह अपने शीतल जल से दूसरों की प्यास बुझाती है। वृक्ष दूसरों को छाया देते हैं। वायु दूसरों को जीवन देती है। चंद्रमा अपनी चाँदनी से पूर्ण संसार को शीतलता देता है।

भारत वर्ष अपनी परंपराओं के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। भगवान शंकर ने सृष्टि के कल्याण के लिए समुद्र मंथन से निकले विष को स्वयं पी लिया था।

महर्षि दधीचि ने असुरों के नाश के लिए अपनी अस्थियाँ दान में दे दीं।

परोपकार से सच्चे आनंद की अनुभूति होती है। परोपकारी का जीवन प्रेम, करुणा, उदारता आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है।

कवि जयशंकर प्रसाद ने लिखा है—

औरों को हँसते देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।

शिक्षण प्रणाली— निबंध— भ्रष्टाचार

संकेत बिंदु— (i) भूमिका (ii) भ्रष्टाचार के क्षेत्र— चिकित्सा, शिक्षा, व्यावसायिक, राजनैतिक (iii) भ्रष्टाचार के कारण (iv) उपसंहार।

प्रथम चरण— अध्यापक/अध्यापिका सी०डी० के माध्यम से निबंध के सभी बिंदुओं पर विद्यार्थियों को लिखना सिखाएँगे।

भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है— भ्रष्ट आचरण। स्वार्थ व लोभ के कारण किए गए अमानवीय व्यवहार को ही भ्रष्टाचार कहते हैं। भ्रष्टाचार का दायरा बहुत बड़ा है राजनीतिज्ञ वोट पाने के लिए दूसरों को गुमराह करते हैं— चिकित्सक अधिक धन प्राप्ति के लिए रोगी का सही उपचार नहीं करते। परीक्षक छात्रों को नकल करवाते हैं, ऑफिसर रिश्वत लेते हैं, यह सब भ्रष्ट आचरण ही तो हैं।

दूसरा चरण— भारत में भ्रष्टाचार की शृंखला बहुत बड़ी है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ ईमानदारी से कार्य होता हो। सरकारी अस्पतालों में गरीबों के लिए कोई स्थान नहीं जबकि अमीर सरलता से वहाँ पहुँच जाते हैं। डॉक्टर द्वारा शरीर के निरर्थक परीक्षण करवाकर धन बटोरना, अधिक शुल्क लेना, मँहगी दवा लिखना, ये सब भ्रष्टाचार के ही उदाहरण हैं।

तीसरा चरण— शिक्षा के क्षेत्र में तो और भी धाँधली है। मैडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश के लिए सीटें लाखों-लाखों रुपयों में बिकती हैं। सरकारी कार्यालयों में बिना घूस दिए कोई काम नहीं होता। बिना रिश्वत के नौकरी नहीं मिलती। विद्यालयों में शिक्षकों को समय पर वेतन नहीं दिया जाता। अगर दिया भी जाता है तो कम वेतन देकर अधिक पर हस्ताक्षर करवाए जाते हैं।

अपने भ्रष्ट आचरण के कारण नेताओं ने तो पशुओं का चारा तक नहीं छोड़ा। घोटालों की कड़ी बहुत लंबी है।

चतुर्थ चरण— आम आदमी भी इसमें शामिल है। बच्चों को विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए पैसा देना, बिजली की चोरी करना, व्यापारियों द्वारा खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट करना, ठेकेदारों द्वारा कच्चे पुल व सड़कें बनाना, ये सामान्य आदमी की प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।

पंचम चरण— भ्रष्टाचार का कारण स्वार्थ, लोभ, अधिक धन की लालसा व नैतिक मूल्यों का अभाव है। अपनी मानसिकता बदलकर युवाओं की सहायता से भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्त साहित्यकार, शिक्षक, पत्रकार व कलाकार एकजुट होकर लोगों को जागरूक कर सकते हैं।

विस्तार से व्याख्या—

- (i) निबंध ऐसी गद्य विधा है जिसमें विचारों को क्रमबद्ध रूप से व्यक्त किया जाता है।
- (ii) निबंध में अनुभूतियों का अधिक महत्त्व होता है।
- (iii) निबंध की भाषा प्रभावशाली होनी चाहिए।
- (iv) निबंध लिखते समय साहित्यकार, प्रसिद्ध लेखक, कलाकार, भाषाविद् के कथन व काव्य-पंक्तियाँ लिखने से वह अधिक विचारात्मक व ग्रहणशील बन जाता है।
- (v) भूमिका व उपसंहार रोचक व सरस होना चाहिए।

सीखे जाने वाले बिंदु—

- (i) निबंध की विषय-वस्तु की जानकारी एकत्र करना।
- (ii) विभिन्न संकेत बिंदुओं के आधार पर निबंध का विस्तार करना।
- (iii) विषय से संबंधित विभिन्न अनुच्छेदों में निबंध को लिखना।
- (iv) परिमार्जित भाषा का प्रयोग करना।
- (v) विषय की गहन व्याख्या व विश्लेषण करना।

मूल्यांकन— अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को एक वर्कशीट देंगे जिसमें एक निबंध से संबंधित कुछ संकेत बिंदु लिखे होंगे। विद्यार्थियों को उसके आधार पर निबंध लिखना होगा।

निबंध — बीता हुआ समय नहीं लौटता

संकेत बिंदु— (i) भूमिका (ii) समय का महत्त्व (iii) समय के सदुपयोग से लाभ (iv) समय के दुरुपयोग से हानियाँ (v) विद्यार्थियों के लिए समय का महत्त्व, उपसंहार।

उत्तर

अभ्यास कार्य

1. (क) टेलीफोन : सुविधा या असुविधा

वैज्ञानिक ज्ञान की उन्नति ने मानव-जीवन को अनगिनत सुख-सुविधाओं के साधन प्रदान किए हैं, जिनमें से टेलीफोन एक महत्त्वपूर्ण साधन है। पहले टेलीफोन केवल घरों और कार्यालयों में लगाए

जाते थे, परंतु आज मोबाइल फ़ोन ने घर और बाहर के अंतर को ही मिटा दिया है। इस यंत्र ने एक मजदूर, रिक्शेवाले से लेकर उद्योगपतियों तक को प्रभावित किया है। आज मोबाइल फ़ोन के बिना तो कहीं आना-जाना संभव ही नहीं होता। युवा पीढ़ी तो हरदम अपने कान में मोबाइल लगाए घूमती रहती है।

टेलीफ़ोन एक ऐसा साधन है, जिसने सारी दुनिया से हमारा सीधा संबंध स्थापित कर दिया है। हम जब चाहें, तब अपने संबंधियों तथा मित्रों से बातचीत कर सकते हैं। इंटरनेट की सुविधा से हम अपने मित्रों, संबंधियों को प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करते हुए भी देख सकते हैं, जिससे उनके दूर होने का दुख भी मिट जाता है।

टेलीफ़ोन सेवाओं ने संपूर्ण विश्व को एक मुट्ठी में बाँध दिया है। इससे समय, धन और आवागमन की भी बचत हुई है। टेलीफ़ोन के साथ ही घरों, दफ़्तरों में इंटरनेट को जोड़ा जाता है। इससे इंटरनेट की सेवाएँ घर-घर पहुँच गई हैं। अस्वस्थ व्यक्ति का हाल पूछना हो, रेलगाड़ियों के आने-जाने का समय पूछना हो, डॉक्टर से सलाह-मशवरा करना हो या व्यापार संबंधी पूछताछ करनी हो तो टेलीफ़ोन पलभर में ही हमारी समस्या का समाधान कर देता है। आजकल तो मोबाइल फ़ोन के द्वारा 'ऑनलाइन शॉपिंग' के अंतर्गत वस्तुओं को खरीदा व बेचा भी जा रहा है। परंतु जहाँ टेलीफ़ोन से अनगिनत लाभ हैं, वहीं कुछ असुविधाएँ भी दिखाई देती हैं। अनावश्यक कॉल, बेकार के विज्ञापन, झूठे फ़ोन-कॉल लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देते हैं। आशा है भविष्य में टेलीफ़ोन कंपनियाँ इन असुविधाओं को समूल समाप्त करवा देंगी। इस प्रकार टेलीफ़ोन हमारे जीवन का एक आवश्यक अंग बन चुका है।

(ख) वसंत ऋतु

हमारे देश भारत में पृथ्वी की विभिन्न स्थितियों के कारण षट् ऋतुओं का क्रमशः आगमन होता रहता है। भयंकर शीत ऋतु के बाद जब सूर्य की रेशमी किरणें धरती को शनैः शनैः ऊर्जा प्रदान करती हैं, तो उस समय ऋतुराज वसंत का आगमन होता है। वसंत ऋतु को ऋतुराज इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इस ऋतु के आगमन पर चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिलने लगते हैं। खेतों में दूर-दूर तक खिली हुई पीली सरसों धरती की पीली ओढ़नी जैसी प्रतीत होती है। इस ऋतु में न अधिक गर्मी होती है न सर्दी होती है, अपितु संपूर्ण प्रकृति में एक मादकता छाई रहती है। धरती पर हरियाली, फूलों का रंग-बिरंगा सौंदर्य और सुगंध का वातावरण छाया रहता है।

वसंत ऋतु के आगमन पर गेहूँ के पौधों में गेहूँ की बालियाँ झूमने लगती हैं। सरसों के पौधे पीले-पीले फूलों से लद जाते हैं। अलसी और अरहर भी झूमने लगती है। आम के पेड़ मंजरियों से लद जाते हैं। कोयल की कूक वातावरण को रसीला बना देती है। छोटी-छोटी क्यारियों में भी अनगिनत फूल खिल जाते हैं। फूलों पर मँडराते भौरें बड़े आकर्षक लगते हैं। गेंदा, गुलाब, सूरजमुखी खिलकर उपवन की शोभा बढ़ाते हैं।

इस ऋतु में वसंत पंचमी के दिन देवी सरस्वती की पूजा आराधना की जाती है। लोग पीले वस्त्र पहनकर वसंतोत्सव मनाते हैं। घरों में पीले चावल, केसरी हलुआ भी बनाया जाता है। सिक्खों के

पंचप्यारे का चुनाव भी इसी दिन हुआ था। महाशिवरात्रि का पर्व भी इसी ऋतु में मनाया जाता है। ऋतु की समाप्ति पर होली का उत्सव आनंद और उत्साह से मनाया जाता है। इस पर्व पर सभी एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इस ऋतु की समाप्ति के साथ ही गर्मी के मौसम की शुरुआत होने लगती है।

संगीत में एक विशेष राग को वसंत राग का नाम दिया गया है। सम्यक रूप से वसंत ऋतु आनंद, उत्साह और नवजीवन का संचार करने वाला मौसम है, जिससे प्रकृति और प्राणी दोनों प्रभावित होते हैं।

(ग) भारतीय किसान

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ गंगा-यमुना की उपजाऊ मिट्टी ने और अन्य असंख्य नदियों की उपजाऊ घाटियों ने विविध प्रकार के खाद्यान्नों को उत्पन्न कर भारत को बहुखाद्यान्न संपन्न राष्ट्र बना दिया है। भारत की ऊष्म-आर्द्र जलवायु भी विभिन्न फसलों, फलों, सब्जियों को उत्पन्न करने में सहयोगी रही है। वस्तुतः मिट्टी और जलवायु का सदुपयोग कर किसान ने ही भारत-भूमि को शस्यश्यामला बना दिया है। सीधे-सादे शब्दों में अपनी बात कहने वाला, सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला किसान अपने कठिन परिश्रम से ही खेतों से खाद्यान्न रूपी सोना उगाने में सफल होता है।

भारत के अधिकतर किसानों का जीवन गरीबी और अभाव में व्यतीत होता है। धरती की गोद और आकाश के साए में जीवन बिताने के कारण उन्हें बीमारियाँ कम घेरती हैं। 'सादा जीवन, उच्च विचार' से परिपूर्ण किसान विभिन्न मानसिक चिंता से दूर रहते हैं। परंतु छोटे-छोटे किसान दिनभर मेहनत करके भी अपने और अपने परिवार के लिए भरपेट खाना नहीं जुटा पाते। जो किसान अपने परिश्रम से सारे देश का पालन-पोषण करते हैं, वही बहुधा भूखे पेट सो जाते हैं। यदि ये किसान परिश्रमपूर्वक काम करना छोड़ दें, सर्दी-गर्मी और बरसात में खेतों में अन्न उगाना छोड़ दें, तो शहरी सभ्यता का आनंद उठाने वाले लोगों का पेट कौन भरेगा?

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भारतीय किसानों की दशा बड़ी दयनीय थी। वे कर्ज चुकाने के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी ज़मींदारों के गुलाम बने रहते थे। अशिक्षित होने के कारण उनके साथ बहुत अन्याय किया जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय किसानों की दशा में थोड़ा सुधार हुआ है। देश की सभी सरकारें किसानों की उन्नति के लिए नई-नई योजनाएँ बनाती हैं। अब गाँवों में सड़क, बिजली-पानी जैसी सुविधाएँ पहुँच गई हैं। सरकार की ओर से किसानों को खेती के लिए उत्तम बीज दिए जा रहे हैं। ट्रैक्टर आदि खेती के वैज्ञानिक यंत्रों के साथ-साथ उन्हें और रासायनिक खादों की सुविधा भी दी जा रही है। सरकार उनकी फ़सल को अच्छे दामों पर खरीदती है और उन्हें भरपूर लाभ मिलता है।

किसानों के बैंक खाते भी खुलवाए गए हैं। उनके लिए पंचायत-घर में टी.वी. की व्यवस्था भी की गई है, जिससे उन्हें खेती और मौसम के विषय में पूरी और पर्याप्त जानकारी मिल सके। इससे खेती में काफ़ी सुधार हुआ है। सरकारी बैंकों और सहकारी समितियों के माध्यम से किसान को कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है।

बड़े किसान तो सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाकर अपनी स्थिति सुधारने में लगे हैं, परंतु छोटे किसानों की स्थिति में अभी और सुधार व सरकारी सहायता की आवश्यकता है। आशा है, भविष्य में पाश्चात्य देशों की भाँति किसानों की स्थिति में सुधार के साथ ही देश की आर्थिक स्थिति और खाद्यान्नों की स्थिति में भी पर्याप्त सुधार होगा।

2. (क) देश-प्रेम

देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है, अमल-असीम त्याग से विलसित।

आत्मा के प्रकाश से जिसमें मनुष्यता होती है विकसित॥

कवि श्रेष्ठ रामनरेश त्रिपाठी जी ने देश-प्रेम की भावना में दिव्य मानवता के भावों का उद्गार करते हुए मानवता की पहचान स्वीकार की है। वस्तुतः जिस भूमि में हम जन्म लेते हैं वह भूमि ही हमारी मातृ-भूमि है। उससे प्रेम करना हमारा धर्म है। संसार के सभी देशों के लोग, बच्चे, वृद्ध एवं युवक-युवतियाँ अपने देश से प्रेम करते हैं, विपदाओं के आने पर भी कभी अपना देश छोड़कर कहीं अन्यत्र बसने की इच्छा नहीं करते हैं।

हमारा देश भारतवर्ष है। उत्तर में हिमालय से लेकर सुदूर दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पूर्व में असम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैंड से लेकर पश्चिम में जैसलमेर के रेतीले छोर तक फैला हमारा देश अपने भव्य प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्वविख्यात है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता भी अति प्राचीन, समुन्नत और समृद्ध है।

भारतभूमि खनिज और रत्नों से भरी पड़ी है। नदियों के उपजाऊ मैदान खाद्यान्न उत्पन्न करने में अग्रणी हैं। भारत की नदियाँ और समुद्र मछलियों, मोतियों और प्रवाल से भरे पड़े हैं। भारत की इसी संपन्नता की ओर विदेशी आक्रांता आकर्षित हुए, भारत पर राज्य किया, परंतु गांधी जैसे देशप्रेमियों के आगे उनकी एक न चली।

आज स्वतंत्र भारत ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, कृषि तथा खगोल विज्ञान आदि सभी दिशाओं में उन्नति कर रहा है। हमें भी अपने देश की आन-बान को बनाए रखने के लिए, देश की मान-मर्यादा को ऊँचा उठाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा।

देश के प्रति सच्चा प्रेम करने वाले कभी ऐसे कुकृत्य नहीं करते, जिससे देश के सम्मान पर कलंक का टीका लगे। भ्रष्टाचार, चोरी, तस्करी इत्यादि कुछ ऐसे भ्रष्ट कर्म हैं, जो देश के लिए घातक हैं।

सैनिक तो देशप्रेमी होते ही हैं, परंतु देश के शक्तिबोध और सौंदर्यबोध की सुरक्षा करना भी देशप्रेम का उदाहरण है। इस प्रकार अपने देश के प्रति सच्ची श्रद्धा और आस्था ही देशप्रेम है, जो प्रत्येक देशवासी के हृदय में होती है।

(ख) छात्रावास का जीवन

छात्रावास वह स्थान होता है, जहाँ विद्यार्थी अपने घर के सुखद परिवेश से दूर अपने सहपाठियों एवं विद्यालय के अन्य छात्रों के साथ अनुशासित जीवन व्यतीत करता है। समय पर खाना, सोना, व्यायाम करना, खेलना और पढ़ना जैसे कार्य नियमित एवं सुचारू रूप से चलते रहते हैं। छात्रावास में रहने वाले छात्रों में आत्मविश्वास और दायित्व ज्ञान बहुत बढ़ जाता है। वे पढ़ाई और अपने भविष्य के निर्माण के प्रति सचेत हो जाते हैं।

छात्रावास में माता-पिता के लाड़-प्यार से दूर बच्चे अनुशासन का सही अर्थ अपने जीवन में ग्रहण करते हैं। घंटी बजते ही उठकर, नित्य क्रिया से निवृत्त होकर अपने कमरे और बिस्तर की सफ़ाई और व्यवस्था करके भोजनालय में दूध और जलपान के लिए पहुँचना पड़ता है। देरी हो जाने पर भोजनालय का कक्ष बंद हो जाता है। सभी छात्रों को एक जैसा ही जलपान परोसा जाता है।

विद्यालय से लौटकर छात्र हाथ-मुँह धोकर विद्यालय की पोशाक बदलकर, एक साथ मिलकर भोजन करते हैं। भोजन के बाद कुछ छात्र अपने कमरे में विश्राम करते हैं अथवा मनोरंजन कक्ष में जाकर टी.वी. देखते हैं। सभी कमरों में कैमरा लगा होता है। छात्रों की गतिविधियों की सूचना छात्रावास अध्यक्ष तक पहुँचती रहती है।

शाम को सभी छात्र 4 बजे से 6 बजे तक मैदान में खेलते और व्यायाम करते हैं। पुनः 6 बजे छात्रावास लौटकर दूध पीकर अपनी पढ़ाई-लिखाई में व्यस्त हो जाते हैं। कुछ छात्र छात्रावास के अध्ययन कक्ष में जाकर अध्ययन करते हैं। सभी कार्य नियमित एवं सुचारू रूप से चलते रहते हैं। संध्या समय लगभग साढ़े आठ बजे भोजन की घंटी बजते ही सभी छात्र भोजन कक्ष में पहुँचते हैं। किसी भी छात्र को कमरे में भोजन करने की अनुमति नहीं दी जाती है। भोजन-कक्ष में ही सभी छात्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं।

अपने कमरे में लौटकर छात्र 10-10.30 बजे तक पुनः अध्ययन करते हैं और समय पर सो जाते हैं। इस प्रकार छात्रावास का जीवन बड़ा ही अनुशासित होता है। बाह्य जगत की चकाचौंध से दूर छात्र सादा जीवन व्यतीत करते हैं। वर्षभर नियमित रूप से पढ़ाई करने के कारण परीक्षा का भय भी नहीं रहता है। दशहरा, दीवाली या अन्य लंबी छुट्टियों में छात्र अपने माता-पिता के पास जाते हैं।

(ग) क्या धरती के बाहर दुनिया है?

मनुष्य मात्र के मन में सदैव से ही इस बात को लेकर उत्सुकता रही है कि क्या इस संपूर्ण ब्रह्मांड में कहीं और भी उसके जैसे कोई अन्य जीव हैं? अपनी सोच के आधार पर उसने कल्पनाओं के अनेक संसार रचे हैं। अपनी जैसी दुनिया की तलाश को वास्तविक बनाने के लिए उसने अनेक अंतरिक्ष यान चंद्रमा, मंगल आदि पर भेजे हैं। अमरीका की प्रसिद्ध संस्था 'नासा' में अनुसंधानकर्ता वर्षों से इस प्रयास में लगे हुए हैं कि किसी प्रकार यह पता चल पाए कि धरती के बाहर भी कहीं हमारे जैसी कोई अन्य दुनिया उपस्थित है।

प्रायः उड़नतश्तरियों को देखने की कहानियाँ सुनाई पड़ती हैं। इंटरनेट पर अनेक ऐसे वीडियोज डाले जाते हैं जो लोगों ने तथाकथित उड़नतश्तरियों को उड़ते हुए देखकर बनाए। परंतु इनकी सच्चाई को लेकर अभी भी संदेह है, क्योंकि किसी भी मान्यताप्राप्त संस्था द्वारा आज तक इनकी सच्चाई को न तो परखा गया है और न ही स्वीकृति की मोहर लगाई गई है।

मात्र उड़नतश्तरियों को ही नहीं, अपितु दूसरे ग्रहों के प्राणियों (aliens) को लेकर भी तरह-तरह के न केवल कयास लगाए जाते रहे हैं वरन् उन्हें देखने और मिलने के दावे भी किए गए हैं। कभी-कभी तो उनके चित्र भी देखने को मिल जाते हैं। विचित्र नाक-नक्शे वाले वे जीव वास्तविक हैं अथवा काल्पनिक, इसका सत्यापन किसी भी संस्था ने नहीं किया है।

वर्षों से अमेरिका, भारत, रूस आदि अनेक देश अपने अंतरिक्ष यानों का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण और स्थापन अंतरिक्ष के विभिन्न स्थानों पर कर चुके हैं, परंतु अभी तक कहीं भी जीवन के निशान नहीं मिल पाए हैं।

अगर अंतरिक्ष में कहीं जीवन है, तो भी अभी तक उसने हमारी मानव-जाति से कोई संपर्क स्थापित नहीं किया है। काल्पनिक पृष्ठभूमि पर रची गई फिल्मों, और धारावाहिकों को देखकर तथा कहानियाँ पढ़कर हम अपनी कल्पना को असीमित ऊँचाई तक ले जा सकते हैं, परंतु यथार्थ में आज तक यह रहस्य ही बना हुआ है।

(घ) वन रहेंगे, हम रहेंगे

यह शीर्षक मानव-जीवन में वनों के विशेष महत्त्व को दर्शाता है। वन और मनुष्य का बड़ा गहरा संबंध है। आदिमानव वन में ही रहता था, कंदमूल और फल खाता था, वृक्षों के पत्ते ओढ़ता और वृक्षों की शाखाओं पर ही रात बिताता था। जैसे-जैसे सभ्यता और कृषि का विकास हुआ, वनों को काटकर समतल भूमि प्राप्त की जाने लगी।

विकास की अंधी दौड़ में लोगों ने पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने पर ध्यान ही नहीं दिया और वनों का सफाया करते चले गए। घर बनाने, सड़क बनाने, फैक्ट्री लगाने, खेती की सीमा को बढ़ाने तथा रेलवे लाइनों को बिछाने इत्यादि के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई। आज स्थिति यह है कि यदि शीघ्र ही पर्याप्त वन न लगाए गए तो साँस लेने के लिए लोगों को ऑक्सीजन ही नहीं मिलेगी। समुचित प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए धरती के 33% भाग पर वनों का होना अनिवार्य है। वन जीवन देने वाले कहलाते हैं, वनों की हरी पत्तियाँ कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस का शोषण करके हमें ऑक्सीजन प्रदान करती हैं। वन बादलों को अपनी ओर खींचते हैं।

आज ग्लोबल वार्मिंग की विकराल समस्या वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण उत्पन्न हुई है। इससे मौसम में बदलाव आ रहा है, प्राकृतिक आपदाएँ आ रही हैं। कहीं बाढ़ आ रही है, तो कहीं सूखा पड़ रहा है। रेगिस्तान का फैलाव बढ़ता जा रहा है, साथ ही अनेक बीमारियाँ भी पनप रही हैं।

वनों से ही हमें लकड़ी, गोंद, लाख, आयुर्वेदिक दवाइयों के लिए फूल-फल, पत्तियाँ आदि मिलती हैं। इनपर कई उद्योग आधारित हैं। यदि वन ही नहीं रहेंगे तो हमें उद्योगों के लिए कच्चा माल कहाँ से मिलेगा? वर्तमान समय में भारत में केवल 20% वन ही शेष रह गए हैं। अतः शीघ्रताशीघ्र वनों का संरक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि वन ही नहीं रहेंगे तो जीवन कठिन हो जाएगा और अनगिनत उद्योग धंधे बंद हो जाएँगे। लोगों की आजीविका छिन जाएगी। साँस लेना दूभर हो जाएगा। विकास की सभी संभावनाएँ पलभर में धराशायी हो जाएँगी। ग्लोबलवार्मिंग का प्रकोप और बढ़ जाएगा। जंगलों में रहने वाले जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ लुप्त हो जाएँगी। इसलिए यह सत्य ही कहा गया है कि यदि वन रहेंगे तो हम रहेंगे, अन्यथा नहीं।

उत्तर

अभ्यास कार्य

- छात्र स्वयं करें।
- अध्यापक के निर्देशन में छात्र स्वयं करें।
- सोहम – मोहन! तुम्हारा मनपसंद 'रियल्टी शो' कौन-सा है?

मोहन — अरे मित्र! मुझे तो ये सब पहले से ही तय लगते हैं।

सोहम — नहीं मित्र! मेरे मामा के दोस्त के भांजे का बेटा भी एक शो में गया था।

मोहन — फिर अंतिम चरण तक पहुँचा क्या?

सोहम — नहीं, वह बहुत अच्छा गाता था, परंतु दूसरे चरण में पता नहीं क्यों उसे बाहर कर दिया।

मोहन — मित्र, उसने रो-रोकर कोई नाटक नहीं किया होगा।

सोहम — हाँ, उसने कहा कि वह दुबारा तैयारी करेगा।

मोहन — अरे भाई! उसे बोलो कि यदि आगे जाना ही है तो तैयारी करने की अपेक्षा जान-पहचान ढूँढ़ ले।

सोहम — मित्र! क्या तुम सच कह रहे हो?

मोहन — चलता हूँ, बस एक बात कहूँगा कि अब ध्यानपूर्वक 'शो' देखना और बताना कि क्या अनुभव हो रहा है।

रचनात्मक गतिविधियाँ

छात्र स्वयं करें।

प्रश्न-पत्र-1.

प्रश्न एवं विकल्प

- (i) (ख) शब्द (ii) (ग) वाक्य विचार (iii) (ग) देवनागरी (iv) (क) ग्यारह
(v) (क) द्वित्व (vi) (ग) हिंदी (vii) (घ) अति + अंत (viii) (क) महीश
(ix) (ख) गुणों से हीन (x) (घ) अव्ययीभाव (xi) (ख) भ्रमर (xii) (ग) साक्षर
(xiii) (ख) पीयूष (xiv) (ख) वर्ण (xv) (घ) कृतघ्न (xvi) (ग) दुर्दशा
(xvii) (घ) दुर्बलता (xviii) (ख) ऐतिहासिक
- (i) (ख) साड़ियाँ (ii) (ग) चेतन (iii) (क) भागीरथी (iv) (ग) गोधूलि
- (i) (ग) करण कारक (✓) (ii) (ख) अपादान (✓)
(iii) (ग) मिठास (✓) (iv) (ख) परिमाणवाचक (✓)

4. संज्ञा— भेद—	संदीप व्यक्तिवाचक	माँ जातिवाचक	घर जातिवाचक
सर्वनाम— भेद—	मुझे उत्तम पुरुषवाचक	उसने अन्य (प्रथम) पुरुषवाचक	उन्होंने अन्य (प्रथम) पुरुषवाचक
क्रिया— भेद—	आया सकर्मक	पूछा अकर्मक	कहा अकर्मक

- (i) और — (ग) समुच्चयबोधक (✓)
(ii) धीरे-धीरे — (क) क्रियाविशेषण (✓)
(iii) के चारों ओर — (ख) संबंधबोधक (✓)

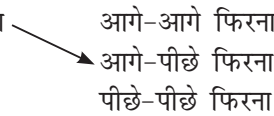
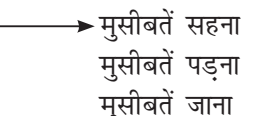
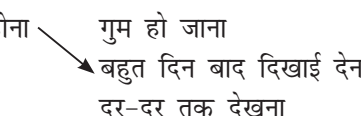
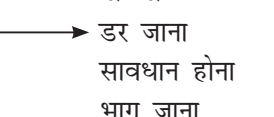
6. आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता का अर्थ है—अपने ऊपर अर्थात् अपनी क्षमता पर निर्भर होना। ईश्वर भी उसी के सहायक बनते हैं, जो आत्मनिर्भर और स्वावलंबी होता है। कोई भी व्यक्ति लंबे समय तक दूसरों के सहारे खड़ा नहीं रह सकता। प्रगति के शिखर पर वही व्यक्ति पहुँचता है जो आत्मनिर्भर होता है। आत्मनिर्भर होने के अनेक लाभ हैं। सर्वप्रथम तो किसी भी कार्य के पूर्ण होने के लिए हमें परमुखापेक्षी नहीं होना पड़ता। यदि हम कोई गलती कर बैठते हैं तो हमें उससे सीख लेने में आसानी रहती है और दूसरों की गलतियों के कारण हमारी सफलता बाधित नहीं होती। स्वावलंबन हमें एक पूर्ण मनुष्य बनाता है। हम परिश्रम का महत्त्व जान पाते हैं तथा जीवन में अपने परिश्रम का मीठा फल भोगकर जीवन का आनंद उठा पाते हैं। तात्पर्य यह है कि आत्मनिर्भरता से व्यक्ति का आत्मसम्मान बढ़ता है तथा वह समाज और परिवार में भी सम्मान पाता है।

- (i) (ग) शाहजहाँ (✓) (ii) (क) प्रधानमंत्री (✓)
(iii) (क) यमुना तट (✓) (iv) (ग) गणतंत्र दिवस (✓)
(v) (ग) लक्ष्य (✓)

प्रश्न-पत्र-2.

प्रश्न एवं विकल्प

- (i) (घ) पद (ii) (ख) पाँच (iii) (ग) संज्ञा (iv) (ख) पढ़ रही है
(v) (घ) अव्यय (vi) (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग (vii) (ग) संन्यासी
(viii) (ख) मुझे चाय का एक गरम प्याला दो। (ix) (क) मिश्रित (x) (ग) एक
(xi) (ग) कल जयपुर जाएगा (xii) (घ) इच्छावाचक
(xiii) (ग) पीयूष (xiv) (ख) (!) (xv) (घ) हंसपद (xvi) (ख) योजक
- (i) जैसे ही आकाश में काले बादल घिरे, अंधेरा छा गया।
(ii) प्रधानाचार्य के कक्षा में आते ही छात्र शांत हो गए।
(iii) प्रातः काल हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।
- 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' जैसे नारों ने अंग्रेजी शासन की जड़ों को हिला दिया।
- (i) चापलूसी करना 
(ii) ठोकरें खाना 
(iii) ईद का चाँद होना 
(iv) खून सूखना 
सावधान होना
भाग जाना

5. (i) अंधे के हाथ बटेर लगना – अयोग्य व्यक्ति को मूल्यवान चीज़ मिल जाना
- (ii) कंचन बरसना – बहुत लाभ होना
- (iii) गुड़ गोबर होना – बात बिगड़ जाना
- (iv) कलई खुलना – रहस्य खुलना
- (v) घाव पर नमक छिड़कना – दुखी व्यक्ति को और दुखी करना

6. मित्र के जन्मदिन पर बधाई-पत्र।

फ्लैट नं. 270

वसंत कुंज

सैक्टर 7,

नई दिल्ली-110070

दिनांक 10-10- 20xx

प्रिय मित्र सुयश

सप्रेम नमस्कार,

कुशलोपरांत आशा करता हूँ कि तुम भी मुंबई में अपने माता-पिता के साथ सकुशल होगे। तुम्हारे जन्मदिन का निमंत्रण-पत्र मुझे यथासमय मिल गया है। बड़ी इच्छा थी कि 16 अक्टूबर को तुम्हारे जन्मदिन के अवसर पर मैं स्वयं मुंबई आकर तुम्हें बधाई दूँ, परंतु पिता जी के मित्र की बेटी की शादी 18 अक्टूबर को है। पिता जी अपने मित्र की बेटी की शादी में रहना अधिक उचित समझ रहे हैं। 16 अक्टूबर को सगाई है, इसलिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं स्वयं तो आ न सकूँगा, पर तुम्हारे लिए एक छोटा-सा उपहार भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि वह तुम्हें अवश्य पसंद आएगा और तुम उसे स्वीकार करोगे। मेरी ओर से तुम्हें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई। मेरे माता-पिता भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

अपने माता-पिता से मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

क० ख० ग०

7. (i) (ख) आकाश (✓)
- (ii) (ग) चिड़िया (✓)
- (iii) (ख) नभ (✓)
- (iv) (क) मोर (✓)
- (v) (ख) बिजली (✓)

- जीवनकौशल कार्यकलाप-छात्र स्वयं करें।